अंगारे और फूल

(उर्दू शेरों का विषयानुकूल संग्रह)

बहाउद्दीन अहमद

विषय-सूचि

शबाब व पीरी

(जवानी और बुढ़ापा)

शौक़े-दीदार व दीदार

(दर्शन की अभिलाषा और दर्शन)

फ़ुग़ानो-फ़रियाद

[क्रन्दन, विलाप]

फ़िक्रो-तरद्दुद

[चिन्ता, संकोच]

फ़िना बेव सबाती

[विनाश, स्थायित्व]

राष्ट्रपति भवन,
नई दिल्ली।

२६ जून, १९५७।

श्री बहाउद्दीन अहमद ने "अंगारे और फूल" के नाम से प्रसिद्ध उर्दू कवियों की ग़ज़लों से शेरों का जो संग्रह तैयार किया है उस में अनेकों विषयों को लेकर कवियों के रोचक विचार संग्रहीत हैं। सदा मेरा यह विचार रहा है कि यदि हिन्दी के विद्वान उर्दू से अधिक परिचय रखें और उर्दू के विद्वान हिन्दी से, तो हिन्दी और उर्दू दोनों को लाभ पहुंचेगा, क्योंकि इस प्रकार नए शब्दों से परिचय होगा और दोनों के बीच बढ़ती हुई खाई कुछ अंश में पट सकेगी। कठिन उर्दू शब्दों के हिन्दी अर्थ दे कर श्री बहाउद्दीन अहमद ने संग्रह की उपयोगिता और बढ़ा दी है।

उर्दू कविता में ग़ज़ल का हर शेर (बन्द) स्वतन्त्र अस्तित्व रखता है और एक शेर में जो विचार ज़ाहिर किया जाता है वह दो पंक्तियों के भीतर ही पूरी तरह अभिव्यक्त हो जाता है। इसलिए हर शेर एक विचार कण माना जाता है। श्री बहाउद्दीन अहमद का यह प्रयास प्रशंसनीय है और मुझे आशा है कि कविताप्रेमी लोग इस संग्रह को शौक़ से पढ़ेंगे और इसका आनन्द लेंगे।

राजेन्द्र प्रसाद

प्रस्तावना

(मौलाना अबुलकलाम आज़ाद)

फ़ारसी और उर्दू शाएरी का बड़ा ज़खीरा "ग़ज़ल" है। ग़ज़ल के क़िस्म की शाएरी अगर्चे अरबी में मौजूद थी लेकिन ग़ज़ल बतौर एक मुस्तक़िल सिन्फ़[1] के फ़ारसी में उभरी और इस दर्जा मक़बूल[2] हुई के दौरे-मुतवस्सित[3] और मुतअख़िर[4] की शाएरी ज़्यादा तर ग़ज़ल की शाएरी हो गई। ग़ज़लों का पहला दीवान मौलाना रूम का मुदव्वन[5] हुआ और दूसरा शैख़ सादी और ख़ुसरु का।

उर्दू शाएरी जब अपने इब्तदाई दौर[6] से आगे बढ़ी तो उसने भी फ़ार्सी शाएरी के नक़्शे-क़दम[7] पर क़दम उठाया। नतीजा ये निकला के उर्दू शाएरी का बड़ा ज़खीरा भी ग़ज़ल-गोई[8] की सूरत ही में नुमायाँ[9] हुआ।

ग़ज़ल की ख़सूसियत[10] ये है के उसका हर शेर अपनी एक मुस्तक़िल[11] और मुन्फ़रिद[12] हस्ती[13] रखता है। अगर किसी शेर का मज़मून[14] दो मिसरों में मुकम्मल नहीं हुआ और मज़ीद[15] शेरों में फैलने लगा तो फिर वो ग़ज़ल नहीं रहेगा, "क़िता" हो जाएगा। ग़ज़ल के लिये ज़रूरी है के उसका हर शेर अपने मौज़ूए-फ़िक्र[16] का एक मुन्फ़रिद-वुजूद[17] हो, और साबिक़ो-लाहिक़[18] से इत्तिहादे-वज़नो-क़ाफ़िया[19] के सिवा और कोई रब्त[20] न रखता हो। इस सूरते-हाल ने ग़ज़ल की दुनिया को नज़रो-फ़िक्र[21] के तनव्वो[22] और

---

१ स्थाई विषय २ लोक प्रिय ३ माध्यमिक युग ४ आधुनिक ५ संगृहीत ६ प्रारम्भिक काल ७ पद चिह्न ८ ग़ज़ल कहने ९ प्रकट १० विशेषता ११ स्थायी १२ एकाकी १३ अस्तित्व १४ विषय १५ अधिक १६ विचार धारा १७ एकाकी अस्तित्व १८ आगे और पीछे १९ तुक (क़ाफ़िया) और मात्रा की एकता २० सम्बन्ध २१ दृष्टि और विचार २२ विभिन्नता

तवस्सो[1] का एक ग़ैर-महदूद[2] मैदान बहम पहुँचा दिया है। हर ग़ज़ल तरह तरह के फूलों का एक मिला जुला गुलदस्ता होती है जिस का हर फूल अपने रंगो-बू में दूसरे फूलों से अलग होता है। अगर एक ग़ज़ल सात शेरों की है तो अगर्चे ग़ज़ल एक हुई लेकिन फ़िक्रो-तख़य्युल[3] और तअस्सुराता-वारिदात[4] के सात अलग अलग मौज़[5] हुये जिन पर शाएर ने तबअ-आज़माई[6] की है। गोया ग़ज़ल की हर इकाई (यूनिट) दर-अस्ल बहुत सी इकाइयों का मजमूआ[7] होतीं है। क्यूंके इसका हर शेर मौज़ूए-फ़िक्र[8] की एक मुस्तक़िल[9] इकाई होती है। अगर ग़ज़लों के एक दीवान[10] में एक हज़ार शेर हैं, तो समझना चाहिये के फ़िक्रो-नज़र[11] की एक हज़ार इकाइयाँ फ़राहम[12] हो गई हैं। बिला शुब्हा[13] बाज़ मज़ामीन में तकरार[14] होगा, लेकिन चूंके हर शेर का असलूबे–ब्यान[15] और तर्ज़े-फ़िक्र[16] अलग अलग होगा, इसलिये उनकी इन्फ़िरादियत[17] बहर-हाल क़ायम रहेगी।

ग़ज़ल की इस ख़ुसूसियत[18] का तक़ाज़ा ये था के मज़ामीन के एतबार से[19] अशआर को तरतीब दिया जाता[20]। अगर ऐसा किया जाता तो ग़ज़ल का ज़ख़ीरा अपनी पूरी वुसअतो-तनव्वो[21] के साथ नुमायाँ[22] हो जाता, और ब-एक-नज़र[23] मालूम हो जाता के इस महदूद-गोशे[24] के अन्दर अफ़कारो-वारिदात[25] की कैसी वसी[26] दुनिया सिमटी हुई है।

---

१ विशालता २ असीम ३ विचार और कल्पना ४ मनोभावों और घटनाओं ५ शीर्षक ६ बुद्धि परीक्षा ७ संग्रह ८ विचार धारा ९ अटल और पक्की १० कविता संग्रह ११ दृष्टि और विचार १२ एकत्रित १३ निस्सन्देह १४ द्विरुक्ति १५ वक्तव्य शैली १६ विचार पद्धति १७ व्यक्तिकता १८ विशेषता १९ विषय अनुकूल २० सांग्रहित किया जाता २१ विशालता और विभिन्नता २२ प्रकट २३ एक नज़र में २४ सीमित कोण २५ कल्पनाओं और मनोभावों २६ विशाल।

फ़ार्सी में कई मजमूए[1] इस तरह के मुरत्तब[2] किये गये और अगर्चे आजकल के मेयारे-नज़र[3] के मुताबिक़[4] उन्हें जामे[5] और मुकम्मल[6] नहीं कहा जा सकता, ताहम उन्होंने नज़रो-मुताlिआ[7] का एक नया सामान बहम पहुँचा दिया है.[8] लेकिन जहाँ तक मुझे मालूम है इस वक़्त तक उर्दू में कोई कोशिश इस तरह की नहीं की गई थी। मुझे ये देखकर निहायत[9] ख़ुशी हुई के सैयद बहाउद्दीन अहमद साहब ने एक अरसा की मिहनत और जुस्तुजू[10] के बाद एक ऐसा मजमूआ[11] तैयार करने की कोशिश की है, और अब वो उसे शाया[12] कर रहे हैं। मुझे उम्मीद है के उनकी ये कोशिश आम तौर पर मक़बूल[13] होगी। उन्होंने उर्दू शाएरी के नज़रो-मुतालिआ[14] को एक नई राह खोल दी है। आइन्दा इस रुख़ पर[15] अस्हाबे-ज़ौक़[16] नये नये क़दम उठा सकेंगे।

इस सिलसिले[17] में दो काम मुअल्लिफ़[18] को अन्जाम देनेथे[19] और उन्होंने अन्जाम दिये हैं। पहला ये के हर तरह के मज़ामीनो-मतालिब[20] के उन्वान[21] तजवीज़ किये जाएँ। दूसरा ये के हर उन्वान के मातिहत[22] मुनासिब और चुने हुए अशआर जमा किये जायें। मेरे लिये मुश्किल था के मैं इस मजमूए को बिलइस्तीआब[23] देखता, मैं ने उन्वानों की फ़िहरिस्त[24] को सरसरी नज़र से देख लिया और मज्मूए की वर्क़गरदानी करके इधर उधर नज़र डाल ली। मैं कह सकता हूँ के उन्वानों[25] के तजवीज़ करने में हर तरह के मवादो-मतालिब[26] को पेशे-नज़र[27] रक्खा गया है और अशआर

---

१ संग्रह २ संग्रहीत ३ दृष्टि की कसौटी ४ अनुसार ५ पूर्ण ६ पूर्ण ७ दृष्टि और अध्ययन ८ एकत्रित कर दिया है ९ अत्यन्त १० खोज ढूंढ ११ संग्रह १२ प्रकाशित १३ सर्व प्रिय १४ दृष्टि और अध्ययन १५ मार्ग पर १६ जिनको रुचि है १७ सम्बन्ध १८ सम्पादक १९ करने थे २० विषयों और अर्थों २१ शीर्षक २२ आधीन २३ ज़रा ज़रा करके २४ सूची २५ शीर्षकों २६ अर्थ और विषय २७ सामने।

का इन्तिख़ाब[1] भी सलीक़े[2] के साथ किया गया है ताहम ये बात नज़र-अन्दाज़[3] नहीं करनी चाहिये के ये उर्दू ग़ज़ल के मज़ामीन का एक जामे[4] व माने मजमूआ नहीं है, बल्के इस तरह के मज्मूए का एक अच्छा नमूना[5] पेश कर रहा है। इस नमूने को बआसानी जामे व मुकम्मल बनाया जा सकता है अगर मुअल्लिफ़ अपनी काविश[6] व जुस्तुजू जारी रक्खें और अस्हाबे-ज़ौक़ो-नज़र भी उनकी मदद करते रहें। मदद करने का तरीक़ा ये है के लोगों के सामने नये नये उन्वान और मज़ीद[7] अशआर आसकते हैं। इस तरह का मवाद मुअल्लिफ़ को भेज दिया जाये। मुअल्लिफ़ भी उर्दू ग़ज़लों का मज़ीद काविशो-जुस्तुजू के साथ मुताला करते रहें। मैं समझता हूँ, इस तरह इस मज्मूए का एक दूसरा एडीशन ज़्यादा जामे व हावी[8] मुरत्तब होकर शाया[9] हो सकता है। मुअल्लिफ ने ये कोशिश नहीं की है कि उर्दू ग़ज़लों के पूरे ज़ख़ीरे का जाएज़ा लिया जाए बल्के हर उन्वान के मुन्तख़ब[10] शेरों को जमा कर देना काफ़ी समझा है इसलिये जहाँ तक अशआर के जमा व तरतीब का तअल्लुक़ है, अभी बहुत बड़ा मैदाने-कार[11] बाक़ी है। और इस नमूने को सामने रखकर इसे अन्जाम दिया जा सकता है।

मज़ामीन के उन्वानों में भी मज़ीद काविश व जुस्तजू करनी चाहिये, मनाज़िरे-फ़ितरत मज़ाहिरे-काएनात और वारदात व तअस्सुराते-तबियत के बहुत से गोशे मुहताजे-तवज्जुह हैं। इख़्लाक़, तसव्वुफ़ और फ़लसफ़ा में उर्दू का ज़ख़ीरा बहुत महदूद है, ताहम जिस क़दर है, उसके बहुत से उन्वान तजवीज़ किये जा सकते हैं।

अबुलकलाम आज़ाद
देहली ३ मई १९५७ ई:

---

१ निर्वाचन २ योग्यता ३ उपेक्षा ४ सम्पूर्ण ५ आदर्श ६ प्रयास ७ अधिक ८ पूर्ण ९ प्रकाशित १० चुने हुए ११ कार्य्य क्षेत्र।

प्रस्तावना

[डा० श्रीकृष्ण सिंह]

मुझे श्री बहाउद्दीन अहमद की किताब "अंगारे और फूल" को देखने का मौक़ा मिला। इसमें इन्हों ने उर्दू कवियों के शेरों का संग्रह किया है। इसकी खासियत यह है कि ये शेर देवनागरी लिपि में छपे हैं, और उन शेरों में जो फ़ारसी, अरबी के शब्द आये हैं, उनके हिन्दी मानी भी इसमें दे दिये गये हैं। इस तरह यह किताब हिन्दी जाननेवालों को, एकहद तक, उर्दू शायरी की खूबियों को जानने-समझने का मौक़ा देती है।

हमारे देश की भाषाओं में उर्दू भी शामिल है। इसका साहित्य, खासकर शायरी, अपनी खूबियाँ रखता है। भाषा आदमी-आदमी को आपस में मिलानेवाली कड़ी होती है। आज भाषा के नाम पर जो फ़साद खड़े किये जाते हैं, वे ग़लत हैं। इसकी वजह शायद यह भी है कि हम एक देश के भीतर रहकर भी एक दूसरे की भाषा को जानने की कोशिश नहीं करते है। ऐसी किताब से, जिस तरह की श्रीबहाउद्दीन अहमद ने तयार की है, एक भाषा वाले को दूसरे की भाषा को समझने का मौक़ा मिलता है। यही अच्छी चीज़ है।

किताब मे बहुत से शायरों के शेर दिये गये हैं। शेरों के विषय भी अनेक है। किसी बात को सिर्फ़ दो पक्तियों के दायरे में, इस तरह रख देना कि पढ़ने या सुननेवाला वाह-वा कर उठे, उर्दू शेरों की सब से बड़ी खूबी है। मैं श्री बहाउद्दीन अहमद को इस तरह की किताब तैयार करने के लिये धन्यवाद देता हूँ, और आशा करता हूँ हिन्दी भाषा-भाषी इस किताब को पढ़कर आनन्द उठायेंगे।

श्रीकृष्ण सिंह

प्रस्तावना

[सम्पादक]

वह बीज जिससे बाद में उर्दू का वृक्ष उत्पन्न हुआ शायद महाभारत ही के वक्त में या उससे भी पहले बोया जा चुका था। ईरान, अरब और हिन्दुस्तान के निवासियों में प्राचीन काल से ही आवागमन था। व्यापारिक सम्बन्ध भी थे। ज़ाहिर है कि एक देश के निवासी दूसरे को अपनी बातें समझाने का प्रयास करते होंगे। व्यापारिक लेन देन के साथ साथ विचार विनिमय भी होता होगा। कोई आश्चर्य नहीं कि नामहसूस तरीक़े पर एक भाषा के शब्द दूसरी भाषा में आते गये हों और अपना स्थान बनाते गये हों।

कविता कौमुदी चौथा भाग (उर्दू) की प्रस्तावना लिखते हुए पं० अमरनाथ झा भूतपूर्व वाइस चांसलर, इलाहाबाद विश्वविद्यालय और चेयरमैन बिहार पब्लिक सर्विस कमिशन लिखते हैं:—

"महाभारत में जहां युधिष्टर के लाक्षागृह जाने का वर्णन है, वहां यह भी लिखा है कि विदुर ने उनको लाक्षागृह की बनावट के विषय में म्लेच्छ भाषा में कुछ सूचनायें दी थीं। इस कथा से म्लेच्छ भाषा का अस्तित्व ही नहीं, बल्कि यह भी प्रमाणित होता है कि विदुर और युधिष्टिर दोनों म्लेच्छ-भाषा जानते थे।"

विदुर और युधिष्ठिर का अरबी, फ़ारसी या तुर्की ज़बान में कोई जानकारी रखना अनुमान में नहीं आता तो सम्भवतः म्लेच्छ-भाषा से अर्थ वे विदेशी शब्द हैं जो उस समय के प्रचलित भाव में मिल गये होंगे। यहां पर एक बात और भी कह देने योग्य है कि 'ज़न्द अवस्था' से पता चलता है कि व्यास मुनि ईरान भी गये थे।

उसी प्रस्तावना में पं० अमरनाथ झा आगे चलके लिखते हैं—

"कालीदास के समय में यवनी स्त्रियां अन्तःपुर में पहरा दिया करती थीं। यह इस बात का बड़ा प्रमाण है कि विदेशियों पर हिन्दूलोग स्वदेश वासियों के समान ही विश्वास करते थे। जब इतना घनिष्ट संसर्ग था, तो क्या उन विदेशियों की मातृभाषा के शब्द यहां नहीं फैल गये होंगे? क्या यहां मुसलमानी हुकूमत होने के पहले ही यहां की प्रचलित भाषा में अरबी, फ़ारसी और तुर्की के हज़ारों शब्द आ न गये होंगे?

ख़्याल की बुद्धिमता से किसे इनकार हो सकता है।

'उर्दू' का शब्द शाहजहाँ [सन १६२८ से १६५७ तक] के समय से सुना जा रहा है। परन्तु इससे बहुत पहले तुलसी दास ने उर्दू मुहावरों का प्रयोग किया है। यहाँ पर भी मैं पण्डित झा ही के शब्दों को दुहरा देना चाहता हूँ। आप लिखते हैं।—

'तुलसी दास ने शाहजहाँ की दो पीढ़ी पहले उर्दू के एक मुहावरे का प्रयोग इस प्रकार किया है:—

बालिस बासी अवध को बूझिये न खाको ॥

अर्थात् अयोध्या का मूर्ख निवासी ख़ाक भी नहीं समझता। 'ख़ाक भी नहीं समझता' पर ध्यान दीजिये। यह संस्कृत से नहीं आया। और बोलचाल में यह इतना प्रचलित हो गया था कि तुलसीदास जैसे हिन्दू संस्कृति के पक्षपाती संत ने भी इसका प्रयोग कर लिया। अतएव यह मानना पड़ेगा कि तुलसीदास के समय में उर्दू का रूप स्थिर हो चुका था, और वह सर्वसाधारण में बोली जाने लगी थी, तभी तो उन्होंने उस के मुहावरे का इस्तेमाल बिना किसी हिचक के कर लिया"।

और तुलसीदास से भी पहले अमीर खुसरो ने इस प्रकार की मिली जुली भाषा में कविता कही है। कुछ लोगों का ख़्याल है कि इनका जन्म सन् १३१२ वो मरन सन् १३८२ में हुआ। पर ठीक यह मालूम होता है कि इनका जन्म १२५३ ई० और मरन १३२५ ई० में हुआ—वैसे अरबी, फ़ारसी वो तुर्की शब्दों का प्रयोग तो जैसा अर्ज़ किया जा चुका है महाभारत ही के समय से हो रहा था। चन्द वरदाई, पृथ्वीराज [मरन ११६२ ई०] के दरबारी शायर ने इस तरह के बहुत से शब्दों का उपयोग किया है। और इधर बाबर [१५२६ ई० से १५३० ई०] में भी बहुत से हिन्दी शब्दों का अपने फ़ारसी लेखों में प्रयोग किया है। और कबीरदास, गुरुनानक और मलिक मु० जायसी आदि ने भी सैकड़ों अरबी वो फ़ारसी के शब्द इस्तेमाल किये हैं।

फ़ारसी और अरबी शब्दों की मिलावट हिन्दी भाषा में बराबर जारी रही, और इस प्रकार यहाँ पर एक नई मिली जुली भाषा बनने लगी। उर्दू को पहले 'रेख़ता' अर्थात 'दो या अधिक ज़बानों से मिली जुली भाषा' कहते थे। कबीरदास ने 'रेख़ता' नामक एक छन्द लिखा है और उसकी भाषा भी वैसे ही मिलीजुली है। इस बात पर आश्चर्य प्रकट किया जाता है कि कबीरदास को 'रेख़ता' का शब्द कहां से मिल गया। मैं समझता हूँ इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं। ये मिलीजुली ज़बान या 'रेख़ता' तो कबीरदास से बहुत पहले ही बनना आरम्भ हो गयी थी। कुछ व्यक्तियों ने इनको रेख़ता का आदि कवि माना है। यह ठीक नहीं है इसलिये कि इनसे लगभग दो सौ साल पहले अमीर ख़ुसरू इस भाषा में कविता कह चुके थे।

राम बाबू सक्सेना ने 'तारीख़े-अदबे-उर्दू' में लिखा है कि:—'ज़बाने–उर्दू' उस हिन्दी या भाषाकी एक शाख़ है जो सदियों से देहली वो मेरठ के अतराफ़ [नगरान्त] में बोली जाती थी और जिसका ताअलुक़ [सम्बन्ध] शूर सैनी प्राकृत से बिला वास्ता था। ये भाषा जिसको मग़रबी [पच्छमी] हिन्दी कहना बजा है, उर्दू की असल और माँ समझी जा सकती है......। [कोष्ट के शब्द मेरे हैं]

मौ० मो० हुसैन आज़ाद ने आबे-हयात में लिखा है कि उर्दू ब्रज भाषा से निकली है। और भी लेखकों का यही ख़याल है, जिनमें डा० विन्टर निज, मि० कोलसक और दूसरे अंग्रेज़ और जर्मन लेखक भी हैं। परन्तु जैसा कहा जाचुका है इस भाषा का आरम्भत: बहुत पहले ही हो चुका था।

इन मिलीजुली ज़बान अर्थात 'रेख़ता' ने जहाँगीर [१६०५ ई० से २६२७ ई०] के समय से पहले की स्थायी साहित्यिक रूप धारण नहीं किया मगर जहाँगीर के समय में इसका एक रूप स्थिर हो गया और इसने एक स्थायी भाषा का रूप भी ग्रहण करना आरम्भ कर दिया। अतएव 'रेख़ता' का पहला कवि सुलतान मु० कुलिकुतुब शाह

गोलकुन्डा के राजा उसी समय में हुए हैं। उनका मरन १६१२ ई० में हुआ।

इस भाषा का नाम 'उर्दू' शाहजहाँ के समय में, अर्थात १६२७ ई० के बाद पड़ा। उर्दू तुर्की ज़बान का शब्द है। इसका अर्थ है 'लशकरगाह' अर्थात वह स्थान जहां सेना पड़ाव डालती है। रेख़ता का इस्तेमाल उन लशकरगाहों में अधिक होता था और इसी वजह से इस भाषा को उर्दू कहने लगे और अन्त में वही उसका नाम रह गया।

ग़ज़ल का आरम्भतः कैसे हुआ यह कहना मुश्किल है। उर्दू शायरी का एक क्षेत्र 'क़सीदा' है। क़सीदा उस कविता को कहते हैं जिसमें किसी विषय या व्यक्ति या वस्तु की प्रशंसा की जाए। इसके दो भाग होते हैं - 'तश्बीब' और 'गुरेज़' क़सीदा तश्बीब से आरम्भ होता है और उसमें कवि किसी एक विषय को लेकर उस पर ज़ोरे-क़लम दिखाता है। उदाहरण के लिये यूँ समझिये के कवि को किसी धनवान की प्रशंसा में क़सीदा लिखना है, तो वह ऐसा कर सकता है कि क़सीदे को निर्धनता के और निर्धन की जीर्णता के बर्णन से आरम्भ करे, उसके बाद धन की प्रशंसा करते हुए उस धनवान की प्रशंसा करने लगे। तो पहला भाग 'तश्बीब' हुआ और दूसरा 'गुरेज़'। तश्बीब पर कवियों ने बड़ा ज़ोरे-क़लम दिखाया है और सम्भव है कि इसी विषय ने ग़ज़ल को जन्म दिया हो। यह समझना ठीक नहीं है कि अरब में 'ग़ज़ल' नाम का कोई व्यक्ति था जिसने सारी उम्र इश्क़ बाज़ी में बिता दी और उसी समय से जिस कविता में इश्क़ और हुस्न का जिक्र हुआ लोग उसको ग़ज़ल साहब की याद में ग़ज़ल कहने लगे।

शायरी का यह क्षेत्र अर्थात 'ग़ज़ल' फ़ार्सी में 'रोदकी' के समय अर्थात लगभग दस्वीं शताब्दी ई० से जारी है और रेख़ता में इसकी आधारशिला निःसदेह अमीर खुसरू ने रक्खा जो 'रोदकी' से लगभग ४०० साल बाद हुए हैं।

उर्दू शायरी और ग़ज़ल के इतिहास को वर्तमान युग के अतिरिक्त तीन युगों में बाँटा जा सकता है। पहला मुतक़द्दमीन [प्राचीनकालीन] दूसरा मुतवस्सेतीन [मध्य कालीन] और तीसरा उनके बादवाले अर्थात मुतअख़्ख़रीन का। मुतक़द्दमीन के युग को भी तीन भागों में बाँटा जा सकता है, पहला गोलकुण्डा और बीजपुर के कुतुबशाही और आदिलशाही बादशाहों और उनके समकालीन का। यह युग अबुलहसन तानाशाह की हुकूमत के साथ सन् १६८७ इ० में गोलकुन्डा पर मुग़लों के क़ब्ज़े के बाद ख़त्म हो गया। उर्दू के सब से पहले ग़ज़लगो [ग़ज़ल कहनेवाले] कवि सुलतान कुली कुतुबशाह के दो शेर सुनिये इससे उस समय की उर्दू भाषा का अनुमान हो सकेगा। कहते हैं :—

सम्पूर्ण है तुझ जोत से सब जगत।
नहीं ख़ाली है नूर से कोई शय॥

[तेरी ज्योति से सारा संसार सम्पूर्ण है, कोई वस्तु भी इस प्रकाश से ख़ाली नहीं]

'मुंज इश्क़ गरी आग का एक चिन्गी है सूरज।
इस आग के शोले का धुआं सात गगन है॥

[अर्थ कुछ इस प्रकार होगा—सूरज मेरे इश्क़ की आग की एक चिनगारी है, इस आग की अग्निशिखा का धुआँ सात गगन है।

सुलतान कुली कुतुबशाह के भतीजे और उत्तराधिकारी सुलतान मुहमद कुतुबशाह का भी एक शेर सुनिये :—

'कुफ़्र रीत क्या हौर इस्लाम रीत।
हर इक रीत में इश्क़ का राज़ है॥

[कुफ़्र की रीति हो या इस्लाम की हर रीति में प्रेम का रहस्य है—उस समय और को 'हौर' लिखते थे]

इस युग के अंत में वाक्य की सफ़ाई कुछ इस हद पर पहुँच गयी थी :—

"मिलना तुमन का ग़ैर से कोई झूठ कोई सचमुच कहे।
किस किस का मुंह मूंदूँ सजन ! कोई कुछ कहे कोई कुछ कहे॥

यह शेर तानाशाह के मुसाहिब शाह कुली खां शाही का है।

मुतक़द्दमीन का दूसरा दौर 'वली', एहामुद्दीन, 'एहाद', मिर्ज़ा अब्दुल क़ादिर 'बेदिल' 'यकरंग' 'नाजी', 'सिराज', 'दाउद', शाह मुबारक 'अबरू' आदि का है। वाक्य में पहले युग से अधिक सफ़ाई पैदा हो गई थी, फिर भी व्यर्थ और बेकार शब्दों का उपयोग बुरा नहीं समझा जाता था। इसके तीसरे भाग को शाह 'हातिम' और 'मज़हर जानेजानां' का कहना चाहिये। इस युग में भाषा का सौन्दर्य बहुत बढ़ गया। उदाहरण के लिये दो शेर दिये जाते हैं:—

ये हसरत रह गयी किस किस मज़े से ज़िन्दगी करते।
अगर होता चमन अपना गुल अपना' बाग़बां अपना॥

[मज़हर जानेजानां]

बड़ा ग़ज़ब है के 'हातिम' को तुम न पहचाना।
वही क़दीम तुम्हारा ग़ुलाम, भूल गये॥

[शाह हातिम]

[क़दीम का शब्दार्थ है 'पुराना']

मध्यकालीन युग को भी दो भागों में बाँटा जा सकता है पहला 'सौदा', 'मीर सोज़', 'मीरदर्द', मीरतक़ी 'मीर', आदि का। और दूसरा 'मुसहफ़ी', जुरअत', 'इन्शा' और 'रंगीन' आदि का। पहला भाग निःसन्देह' उर्दू शायरी का स्वर्णयुग था। इसके बाद वाले युग को भी तीन भागों में बाँटा जा सकता है। पहला 'नासिख', और 'आतिश' का। दूसरा 'मोमिन', ज़ौक़, और ग़ालिब', का। तीसरा 'दाग़', 'हाली', 'अमीर', 'जलाल' और 'तस्लीम' आदि का। अकबर इलाहाबादी भी इसी तीसरे युग के कवि हैं।

वर्त्तमान युग का पहला भाग इक़बाल', 'हसरत', 'जलील', 'रेयाज़' फ़ानी', 'शाद', और 'असग़र' के साथ बीत गया। अब जो युग बीत रहा है, इसका दूसरा दौर है।

जैसा अर्ज़ किया जा चुका है, एक स्थायी भाषा की हैसियत से उर्दू का रूप सन १६०० ई० के बाद स्थिर हुआ। और इन तीन ही सौ वर्षों में इस भाषा ने और विशेषत: ग़ज़ल ने हर प्रकार के अनुभव किये। सूफ़ियों और ईश भक्तों की गोद में भी खेली, विलास प्रिय व्यक्तियों की संगति में भी रही, राजा महराजाओं के दरबार में भी चमकी। जिस तरह की सेवा इससे ली गयी इसने की। लेकिन इसका वास्तविक सौन्दर्य सदा विकास पर ही रहा। आधुनिक काल में दूसरे देश की भाषायें, समाजिक अनुभुतियां, राजनैतिक समस्यायें इस पर अपना प्रभाव डाल रही हैं। बनावट की बातें, बेकार तुलनायें, व्यर्थ अतिशयोक्तियां बिलकुल खत्म हुईं। ज़माने के साथ-साथ विचार पद्धति और वक्तव्य शैली भी बदल रही है। ग़ज़ल है तो उसी उच्च स्थान पर जहाँ थी पर अब नये सांचे में ढल रही है।

'ग़ज़ल' का शब्दार्थ है, 'माशूक़' [प्रिय] से बातचीत करना। लेकिन 'माशूक़' की कल्पना असीम है और 'बातचीत' की विशालता को भी सीमित नहीं किया जा सकता।

कवि के पास उसका अपना 'साज़' होता है। उसको लोक परिचय में 'दिल' [हृदय] कहते हैं। इस साज़ में 'प्रेम' के तार लगे होते हैं। कवि मस्ती के आलम में इन तारों को छेड़ता है और उन से जो कानों में अमृत घोलने वाला संगीत उत्पन्न होता है, जो मधुर रागनियां वातावरण में लहराती हैं; मेरे ख्याल में उन्हीं का नाम ग़ज़ल है। उस तूफ़ान का आधार जिसको ग़ज़ल कहते हैं, दो तुन्द हवाओं पर है—'हुस्न' [सौन्दर्य] और 'इश्क़' [प्रेम]—या शायद मैंने ग़लत कहा, तूफ़ान सिर्फ़ एक ही है—'हुस्न का'—प्रेम की तरंगें तो उसकी गोद में तड़पती हैं—अब हुस्न की कल्पनाओं और इश्क़ की सीमाओं को नियुक्त करना अपनी-अपनी हिम्मत पर है।

कुछ दीवाने ऐसे हैं जो प्रत्येक हुस्न में 'हुस्ने-अज़ल' [परम सौन्दर्य] को देखते हैं। जिनके ख़याल में :—

कारफ़र्मा है, फ़क़त हुस्न का नय-रंगे-कमाल।
चाहे वो शमआ बने, चाहे वो पर्वाना बने॥

[आदेशक केवल सौन्दर्य के अद्‌भुदता की विचित्रता है, अब चाहे वह दीपक बने चाहे पतंग]—जिनकी कल्पना अपने 'महबूब' के विषय में यह है कि :—

हरइक शय में तुम मुसकुराते हो गोया।
हज़ारों हिजाबों में ये बे हिजाबी !॥

[हरएक वस्तु में मानो तुम मुसकुरा रहे हो; इतने हज़ार आवरण उस पर यह बे पर्दगी !] उनकी मन्ज़िल 'दारो-रसन' [सूली और उसकी रस्सी] होती है। अब चाहे वह इस सौ वर्ष के पथ को एक 'आह' में तै कर ले चाहे 'क़दो-गेसू [प्रेयसी के क़द और उसकी लटों] से चलें, दारो-रसन तक पहुँचें।

श्री मौलाना अबुलकलाम आज़ाद ने क्या ही सुन्दर बात फ़रमाई है।

"मैखानये-हक़ीक़त [तथ्य के मधुशाला] में जब मजलिस गर्म होती है तो पहले जामो-मीना का दौर चलता है और जब उसके तलख़ [कड़वे] घूंट गवारा हो जाते हैं तो फिर ख़ुद साक़ी अपने चहरे से निक़ाब उलट देता है के अब जामो-सुबू की ज़रूरत न रही" इस महफ़िल के शराबी साक़ी के मुखावरण के बंधनों के टूटने के इन्तिज़ार में सारा जीवन बिता देते हैं और अगर उनको कुछ शिकाएत होती है तो बस यही कि—"उम्र ने हम से बेवफ़ाई की"— ग़ज़ल गो [गज़ल कहनेवाला कवि] इनहीं कलपनाओं और मनोभाओं के गीत गाता है। भावनाओं की इसी तरल अग्नि को पानपात्र में बन्द करता है और पीनेवालों की तरफ़ बढ़ा देता है कि पी सको तो पी जाओ।

यह तो उन दीवानों की बात हुई जो किसी के दर्द के आनन्द को अपना सब कुछ समझते हैं। जो सारे ज़माने को बुद्धिमानी क्षण भर की दीवानगी पर निछावर कर दें और लज्जित रहें कि प्रेम उन्माद का हक़ अदा न हुआ। चित्र का दूसरा रूख भी है और यहाँ भी 'ग़ज़ल' कुछ कम प्रचलित नहीं।

इस संसार की सारी दौड़ धूप, जीवन संग्राम की सारी कशमकश दो ही बिन्दुओं के चतुर्दिक घूमती है—"हर्ष" और "शोक"। ग़ज़लगो की कल्पनाएँ हर्ष और शोक दोनों भावनाओं के विश्लेषण करता है, दोनों का अनुभव करता है; उसकी कल्पनाएँ उन कारणों की भी समपरीक्षण करती हैं जिनके यह परिणाम होते हैं, और इन अनुभवों का वर्णन अपनी हृदयाकर्षक और कोमल भाषा में करता है उनके गीत बनाता है और उसको अपने दिल के साज़ पर गाता है, बात दूसरों के रहस्य की होती है मगर उसको अपने प्रेम और प्रिया की कहानी बना के कहता है। यही कारण है कि उसके संगीत के स्वर और ताल और जीवन हृदय की धड़कनें बिलकुल सह स्वर होती हैं।

जिस भाषा में ग़ज़लनिगार [ग़ज़ल कहने वाला कवि] अपने संगीत ढालता है वह भाषा भी उसकी अपनी होती है। अर्ज़ कर चुका हूँ कि वह दूसरों के रहस्य को अपने प्रेम और प्रिया की कहानी बनाकर कहता है—और कुछ ऐसे ढंग और इस तरह के संकेतों में कहता है कि समझनेवाले ही समझते हैं। काँटों की नोक से रंग और सुगन्ध की नाड़ी को छूने वाले, सौरभ को मापने और चाँदनी को तोलनेवाले तो इस प्रकाश और सौरभ की पाठशाला में पराम्भिक शिक्षा पानेवाले छात्र की भी हैसियत नहीं रखते—ज़बान की परिधि बहुत सीमित है इसीलिये ग़ज़लगो 'संकेतों' से काम लेता है और इशारों ही इशारों में वह सब कुछ कह जाता है जो ज़बान से अदा नहीं किया जा सकता। मौलाना हाली ने कितना अच्छा

कहा है—

"आगे बढ़े न क़िस्सए-ज़ुल्फ़े-बुताँ से हम,
सब कुछ कहा, मगर न खुले राज़दाँ से हम।"

[सुन्दरियों के लटों की कहानी से हम कभी आगे न बढ़े। कहने को तो सब कुछ कह गये, मगर रहस्यज्ञाता से असल बात कभी न कही]-और ग़ज़ल का संकेतात्मक होना ही उसका प्राण है, बलके सच्ची बात तो यह है कि इसकी विशालता का भेद इसके संकेतातमक होने में ही छिपा है।

उद्देश्य है ताक़तवालों की ज़बरदसतियों की शिकायत करना। अपनी विवस्ता का भी उल्लेख करना है—

ग़ज़ल की भाषा में कहनेवाला कहता है :—

हम आह भी करते हैं तो हो जाते हैं बदनाम।
वो क़त्ल भी करते हैं तो चर्चा नहीं होता॥

सर्व प्रिये नेता क़ैद कर लिया गया है। सारे देश पर एक सन्नाटा छाया हुआ है। ग़ज़लनिगार चीख उठता है :—

कहने को मुश्ते-पर की असीरी तो है, मगर
खामोश हो गया है चमन बोलता हुआ।

[कहने को तो मुट्ठी भर पंख अर्थात बुलबुल की बन्दी की गई है किन्तु बोलता हुआ उपवन मौन हो गया है।]

उधर नेता की उलझनें भी कुछ कम नहीं, सोच रहा है :—

चमन प ग़ारते-गुलचीं से जाने क्या गुज़री।
क़फ़स से आज सबा बेक़रार गुज़री है॥

[पता नहीं फूल तोड़नेवाले की विनाशकारी से उपवन की क्या दशा हुई, आज प्रभात समीर पिंजड़े से बहुत व्याकुल गुज़री है।]

दुन्या में स्वार्थपरता का दार-दौरा है। प्रत्येक व्यक्ति को केवल अपनी और अपने घर की चिन्ता है। देश के दुःख को कोई

नही समझता। कवि दुखी होकर कहता है :—

हयात फ़िक्रे-नशेमन में काटने वालो !

चमन का क्या कोई हक़ अहले आशियाँ प नहीं !!!

[अपने घोंसले की चिन्ता में जीवन व्यतित करनेवालो ! क्या घोंसले-वालों पर चमन का कोई हक़ नहीं]

नेता ने देश के लिये बड़े-बड़े बलिदान किये हैं पर जन्ता क़ुर्बानियों की ओर कोई ध्यान नहीं दे रही है। कवि का दिल दुखता है, कहता है :

ख़्याल तक न किया अहले-अन्जुमन ने कभी,

तमाम रात जली शम्मअ अन्जुमन के लिये।

[दीपक रात भर महफ़िल ही के लिये जलती रही परन्तु महफ़िल वालों ने कभी उसका ख़्याल तक न किया।]

आपने देखा ! चमन, क़फ़स, नशेमन, शमअ, परवाना हद यह है के "क़त्ल" और "ग़ारत" तक की आड़ लेके कवि ने कैसे-कैसे कठिन विषयों को कितने मनोहर ढंग से ब्यान कर दिया !! इसीका नाम ग़ज़ल है और इसी तरह ग़ज़लनिगार ज़िन्दगी के विभिन्न तजुर्बों को, इसकी मुश्किल से मुश्किल गुथ्थियों को, मन की भावनाओं और जीवन की घटनाओं को अपनी कल्पनाओं के साँचे में ढाल के, अपनी भाषा में अपने ढंग से पेश करता है। उसका हर शेर ज़िन्दगी के किसी न किस अनुभव का प्रकाशन करता है— वसे भला बुरा कहां नहीं होता। हर कवि तो कालीदास नहीं बन जाता, और स्वयं कालीदास ही की हर कविता को तो वह श्रेष्टता प्राप्त नहीं जिसके लिये उनकी कविताएं सर्व प्रिय हैं। वर्षा कहाँ नहीं होती परन्तु हर ज़मीन पुष्पोद्यान तो नहीं बन जाती। कविता तो बहुत लोग कहते हैं लेकिन न हर कवि, कवि होता है न हर कविता, कविता।

अब एक "मुबालिग़ा" [अत्युक्ति] को ही ले लीजिये। शायरी में "मुबालिग़ा" [अतिशयोक्ति] अपनी जगह पर एक कला है।

सवाल उसके उपयोग के ढंग का है। "अंगूठी" को कोई कङ्कन कहने लगे तो आप अवश्य उस पर हँसेंगे मगर महाकवि केशवदास ने अंगूठी को कङ्कन बना दिया है और किस तरह बनाया है सुनिये— यही वह स्थान है जिसको अरबी में "सजेदातुश-शुअरा" [शायरों के सिज्दा करने का स्थान] कहते हैं सीताजी लंका में हैं, श्री रामचन्द्र जी ने उनको अपनी अंगूठी भेजी है। हनुमान जी ने उसको उनकी गोद में गिरा दिया है। सीता जी उस "अंगूठी" से कुछ पूछना चाहती हैं और वह नहीं बोलती। हनुमान जी कहते हैं :—

तुम पूछत कही मुद्रिके, मौन होत यही नाम।
कङ्कन कीपदवी दई, तुम बिनु या कहँ राम॥

इस सम्बन्ध में बहुत सी बातें कहने योग्य हैं। मेरी एक पुस्तक "उर्दू शायरी का परिचय" ईश्वर की कृपा हुई तो जल्दी ही प्रकाशित होकर आप की सेवा में पहुँचेगी उसमें इन विषयों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

"संकेतों" और "इशारों" की टीकाएँ बदलती रही हैं और बदलती रहेंगी। वक़्त के साथ-साथ आगाही के तक़ाज़े बदल रहे हैं, विचार की शैली बदल रही है और इस प्रकार ग़ज़ल के मुहरिकात [प्रेरक] बदल रहे हैं। ज़ाहिर है कि ग़ज़ल की पद्धति में भी परिवर्तन होगा और हुआ। मगर उसके आधारिक तथ्य में न कोई परिवतन हुआ है न हो सकता है। उसका वास्तविक रूप आज भी वही है जो पहले था।

वक्तव्यशैली और विचार पद्धति मैं परिवर्तन प्राकृतिक था। समय के साथ-साथ होता रहा। एक समय ऐसा आया जब ग़ज़ल नाम रह गया केवल 'कंघी-चोटी' और "लबो-रूखसार" की शायरी का। वह समय ही ऐश-परस्ती का था। मगर वह वक़्त भी गुज़र गया। फिर एक समय ऐसा आया जब समाज के सामने कोई लक्ष्य न था, क़ायम था इसलिये कि क़ायम रहना था। उस वक़्त ग़ज़ल और तुक-बन्दी के एक ही अर्थ समझे जाने लगे। शब्दों से खेलने का नाम शायरी हो गया। वह वक़्त भी गुज़र गया। फिर

भाषा के नियमों और उसूलों से अप्रसन्नता और अँगरेज़ी ढंग की कविताओं के अनुकरण का समय आया। कुछ व्यक्तियों ने तो ग़ज़ल को "छन्द और तुक" [उरूज़ो-क़वाफ़ी] की 'क़ैद' ही से आज़ाद कराने का बीड़ा उठा लिया, यह न समझे कि जिस तरह हर देश का अपना लिबास, अपनी सामाजिक प्रणाली, अपना मेयारे-हुस्न [सौन्दर्य की कसौटी] और मेयारे-नज़र [दृष्टि की कसौटी] होता है उसी तरह हर भाषा का अपना एक लबो-लहजा [वार्त्ताशैली] और अपना एक मिज़ाज (प्रकृत्ति) होता है। विज्दान [अन्तः प्रेरण] की रचना और साहित्यिक ज्ञान का विकास सदियों में होता है और उसमें देश की सभ्यता का बड़ा हाथ होता है। यह रचनाएँ और विकास 'ज़ौक़े-सही' [सत्य-अभिरूचो] के प्रकाश में होती हैं और ज़ाहिर है कि हर देश की सभ्यता भी विभिन्न होती है और अभिरूची भी। उर्दू 'ग़ज़ल' की जड़ें हमारे देश की सभ्यता और संस्कृति की गहराइयों में गड़ी हैं। उसका विकास हमारे देश की आबो-हवा में हुआ है। अँगरेज़ी कविताओं का लबो-लहजा कसे इख़्तियार कर सकती है!--बहर हाल वह वक़्त भी मैं समझता हूँ गुज़र गया—

चली शोखी न कुछ बादे-सबा की।
बिगड़ने में भी ज़ुल्फ़ उसकी बना की॥

समय के साथ-साथ 'ग़ज़ल' का हुस्न भी निखरता गया और वर्त्तमान युग के शृंङ्गार ने तो इस हृदयेश रूपवति की माँग में ऐसे-ऐसे मोती जड़ दिये हैं जिन पर किसी भी साहित्य शृङ्गारकारिणी को गौर्व हो सकता है।

'ग़ज़ल' और विशेषतः 'छन्दों' और 'तुकों' के ख़िलाफ़ विद्रोह का फरहरा लहरानेवाले वह लोग थे जिनकी ज्ञानात्मक योग्यताएँ अगर बहुत सीमित नहीं तो अँगरेज़ी से प्रभावित और आतंकित ज़रूर थीं। या फिर वह लोग थे जो इतनी मिहनत नहीं करना

चाहते थे या नहीं कर सकते थे, जितना ग़ज़ल चाहती है। ग़ज़ल की बनावट और उसका मिज़ाज दोनों बहुत नाज़ुक हैं। वह किसी बेढंगेपन को गवारा कर ही नहीं सकती। जिस प्रकार एक सुन्दर शरीर के लिये प्रत्येक अँग का सुडौल होना आवश्यक है उसी तरह ग़ज़ल इन्तिहाई मौज़ूनयत [अनुकूलता] और सम्पुरण सुडौलपन चाहती है। विशेषतः बनावट के लिहाज़ से। और उरूज़ो क़वाफ़ी इस अनुकूलता और सुडौलपन की जान हैं। इन्हीं से ग़ज़ल में एक बहुत ही हृदयाकर्षक संगीत पैदा हो जाता है। और इस तरह की क़ैदो-बन्द ही तो कोमल कलाओं की जान हैं। गान विद्या में राग रागनियों के स्वरों का प्रतिबन्ध ऊरूज़े-क़वाफी की क़ैदो-बन्द से अधिक ही हैं कम नहीं। ऊरूज़ो-क़वाफी के प्रतिबन्ध से ग़ज़ल संवरती है सीमित नहीं होती।

कुछ लोग ग़ज़ल से इसलिये नाराज़ मालूम होते हैं कि उसमें मनाज़िरे-फ़ितरत [प्राकृतिक दृश्य] का वर्णन नहीं मिलता और अगर मिलता है तो कम मिलता है। है यह कि 'मनाज़िरे-फ़ितरत' उस मार्ग के चित्र और फूल पत्ते हैं जिन पर ग़ज़ल-निगार चलता है। वह इनके सौन्दर्य की विचित्रता पर झूमता ज़रूर है मगर उनको अपनी कल्पनाओं का ध्येय और अपने विचारों का लक्ष्य नहीं बना सकता। वह इस राग को भी अपने ही ढंग में, अपने दिल के साज़ पर गाता है—

अँधेरी रात है ऊदे ऊदे बादल झूम-झूम कर गरज रहे हैं 'नज़्म-गो' इसका वर्णन इस तरह आरम्भ करेगा—

रात अँधेरी और उस पर सायए-अबरे-सियाह।
रास्ता ढूँढे नहीं पाती किसी जानिब निगाह॥

[अँधेरी रात उस पर काले-काले बादलों की छाया। दृष्टि किसी ओर भी रास्ता नहीं ढूँढ पाती] इस प्रकार पूरे दृश्य की एक पद्यात्मक चित्र बना डालेगा। और ग़ज़लनिगार यही सोचेगा कि:—

कौन भला रोता फिरता है आधी-आधी रातों को !
इस बादल के पर्दे में भी कोई दिलवाला होगा !!!

बसन्त ऋतु है। फूलों की आग से सारा उपवन लहका हुआ है। ग़ज़लगो इस सुन्दर दृश्य के विभिन्न अंशों का चित्र नहीं बनाने लगेगा। वह महसूस करेगा के स्वयं "बहार" बहुत ख़ुश है और यह महसूस कर के वह भी प्रसन्न होगा और कहेगा :—

लचक है शाखों में जुम्बिश हवा से फूलों में।
बहार झूल रही है ख़ुशी के झूलों में॥

कभी वह ऐसा अनुभव करेगा कि बहार भी किसी की प्रतीक्षा कर रही है। कहेगा :—

शजर-शजर निगराँ है, कली-कली बेदार।
न जाने किसकी निगाहों को ढूँढती है बहार॥

[हर-हर वृक्ष निरीक्षक है, प्रत्येक कली जाग रही है। पता नहीं बहार किस की निगाहों को ढूँढ रही है।] संक्षिप्त में यूँ समझिये कि "मनाज़िरे-फ़ितरत" के रंगीन सामगरी को भी वह अपने ही मनोभावों की शृंङ्गार मेज़ पर सजाता है।

कहानी बड़ी सुन्दर और ललित है। जी चाहता है कहे जाऊँ। मगर इसका न मौक़ा है न वक़्त। अब इस सम्बन्ध में केवल एक बात और कहना है– ग़ज़ल के भविषय के विषय में कभी-कभी चिन्ता प्रकट की जाती है। मेरा विचार है कि ग़ज़ल का भविषय बहुत प्रकाशमान है। इसका अपना हुस्न इसकी स्थायित्व का ज़िम्मेदार है। जब तक सच्ची अभिरूची क़ायम है, संकेतों को समझने की योग्यता क़ायम है, सौन्दर्य और सौन्दर्य पारखी दृष्टि क़ायम है ग़ज़ल ज़िन्दा और ताबिन्दा [दीप्तमान] रहेगी। और जब यह सब कुछ न रहेगा तो ग़ज़ल भी न रहेगी— और फिर दुनियां में रह ही क्या जायगा !

अब मैं उन विषयों पर कुछ प्रकाश डालना चाहता हूँ जिन पर ग़ज़लनिगार विशेषतः बुद्धि परीक्षा करता है और जिनके इस संग्रह में भिन्न-भिन्न शिर्षक बनाये गये हैं। जैसा होना चाहिये पहला विषय "ईमानों-इर्फ़ां" [धर्म और ईशज्ञान] का है :—

ईमानो-इर्फ़ां

"ईमान" का शब्दार्थ है हृदय से किसी चीज़ का दृढ़ विश्वास। प्रमात्मा के अस्तित्व का, उसके गुणों का, उसके बताए हुए सत्य मार्ग का दृढ़ विश्वास, यही है "ईमान" और इसी के प्रतिकूल प्रमात्मा के अस्तित्व से इन्कार है "कुफ्र" अर्थात नास्तिकता।

उस निरंजन निराकार के अस्तित्व को कल्पनाओं में सीमित करना मनुष्य की परिमित बुद्धि के लिये असम्भव है। सादी शीराज़ी [फ़ारसी के एक बहुत ही प्रसिद्ध कवि] ने क्या अच्छा कहा है—कविता फ़ार्सी में है, मैं उसका अनुवाद देता हूँ :—

"हे वह जो विचार, अनुमान, कल्पना और भ्रम से बहुत उच्च है। और उससे भी बहुत उच्च है जो लोगों ने कहा है और हमने सुना और देखा है, दफ़्तर के दफ़्तर ख़त्म हो गये और आयु समाप्त होने पर आई परन्तु हम अभी तक तेरे प्रथम गुण ही के वर्णन में लगे हुए हैं।"

तो ऐसी अस्तित्व की "यक़ीन" [विश्वास] के साथ कोई कल्पना कैसे की जा सकती है। ज्ञान के पक्षी का उड्डयन बहुत होगा तो "वहम' तक। "वहम" का अनुवाद मैं ने 'भ्रम" किया है। किन्तु अनुवाद कुछ अच्छा नहीं मालूम होता। 'कल्पना" भी इसका अनुवाद होसकता था। लेकिन कल्पना में फिर भी एक चित्र मस्तिष्क के सामने आती है। "वहम" उससे भी कहीं ज़्यादा नाज़ुक और कोमल है। और उसमें यह पहलू भी रहता है कि जो चित्र कल्पना ने खड़ा किया है, हो सकता है उसकी कोई अस्लियत न हो और तथ्य

कुछ और ही हो। किसी ने क्या अच्छा कहा है :—

वहम को भी तिरा निशाँ न मिला।
ना-रसाई सी ना-रसाई है॥

[भ्रम को भी तिरा कोई चिन्ह न मिला,
असफलता सी असफलता है।]

लेकिन इसी संसार में ऐसे मनुष्य भी हैं जिन को हम वली, ऋषि, और मुनी कहते हैं, जो उसको एक हद तक पहचान गये हैं। इसी पहचान को 'मारफ़ते-इलाही" [ईशज्ञान] कहते हैं :—

हरि तक पहुँचने के लिये भिन्न-भिन्न मत और धर्मों ने विभिन्न रास्ते निकाले। कोई 'मस्जिद" और "हरम" [काबा] में बैठकर उसको याद करता है. कोई 'दैर' [मन्दिर] में उसकी पूजा करता है उद्देश्य सभी का "हरि" की ही प्रसन्नता है :—

आप का सौदाई है, काफ़िर हो या दींदार हो।
बात इतनी है अब इसका जिस क़दर तूमार हो॥

[नास्तिक हों या धार्मिक सब आप ही के दीवाने हैं। असल बात इतनी ही सी है, अब इसका चाहे जितना भी विस्तार हो।]

बात बड़ी सुन्दर थी मगर क्या कीजिये। तथ्य की बातों, का वाह्य अर्थ लगाकर घृणा उत्पन्न करनेवालों की कमी नहीं! शायर का विश्वास फिर भी अटल है। वह खूब समझता है कि—

हरमो-दैर के झगड़े तिरे छुपने से पड़े।
तू अगर पर्दा उठा दे तो तु ही तू हो जाय॥

और सच पूछिये तो वह छुप भी कहाँ सके हैं:—

रिदाय-लालओ-गुल, पर्दाए-महो-अन्जुम।
जहाँ जहाँ वो छुपे हैं अजीब आलम है॥

[लाला और गुलाब की चादर, चाँद तारों का पर्दा। जहाँ जहाँ वह छुपे हैं अजब चमतकार है।] कौन सी वस्तु है जिससे उस परम सौन्दर्य की रूप आभा फूटी नहीं पड़ती। सृष्टि का निर्माण तो उसने

अपने सौन्दर्य के प्रदर्शन ही के लिये किया है। वह परम सौन्दर्य "हक़ीक़त" है, वही तथ्य है और यह संसार और संसारिक वस्तुएँ माया रूप हैं। शायरों ने "मजाज़ो-हक़ीक़त" [माया रूप और तथ्य] का एक अलग शीर्षक स्थापित कर लिया है। उसी प्रकार "ज़ाहिरो-बातिन" [बाह्य और गुप्त] का भी एक अलग शीर्षक बना लिया है। सौन्दर्य और प्रेम का विषय अधूरा रह जाएगा अगर "दारा-रसन" [फाँसी की सूली और उसकी रस्सी] की कहानी न दुहरा दी जाए—कुछ व्यक्ति ऐसे हैं जिन्होंने प्रभू को पाने के लिये अपना सब कुछ खो दिया और उसको पा गए तो अपने को भी भूल गए। उन्हीं में एक मनसूर भी थे। इनका असली नाम हुसैन था। मनसूर इनके पिता का नाम था और इसी नाम से प्रसिद्ध हुए। ईरान में एक जगह बैज़ा है वहाँ के निवासी थे और वहीं नवीं शताब्दी में इनका जन्म हुआ। ईश-प्रेम में लीन थे। एक समय ऐसा आया जब कहने लगे "मेरी नज़र में सारी सृष्टि अनुपस्थित है। सत्य अद्वितीयता की अभिव्यक्ति करता है और मनसूर का कहीं पता नहीं चलता"। अन्त में एक दिन "अनलहक़" पुकार उठे। अर्थ यह है कि "मैं ही सत्य हूँ, मैं ही ईश्वर हूँ"। विद्वानों ने उन पर नास्तिकता का फ़तवा [धर्माज्ञा] लगाया। मनसूर ने सुना तो कहा "हे उन व्यक्तियों के पथ-प्रदर्शक जो तेरे सौन्दर्य की आभाओं को देखकर आश्चर्य चकित हो गए हैं! यदि मनसूर सचमुच नास्तिक हो गया है तो उसकी नास्तिकता को और बढ़ा दे"। एक वर्ष तक उनको कारागार में बन्द रक्खा गया। कहते हैं कि एकबार उंगली से इशारा किया तो क़ैदखाना की दीवार फट गयी और क़ैदी सब भाग गए। उनमें से एक ने इनको भी भाग निकलने को कहा, इन्होंने उत्तर दिया, "तुम खलीफ़ा के क़ैदी हो, भाग जाओ। मैं जिसके प्रेम बन्धन में बन्धा हूँ उसकी क़ैद से भागकर कहाँ जाऊँ"!

जिस दिन उनको फ़ाँसी देने के लिये ले जा रहे थे एक फ़क़ीर ने उन से पूछा "मनसूर इश्क़ किस को कहते हैं?" उत्तर दिया कि "आज, कल और परसों में देख लोगे" उस दिन उनको फाँसी दी गयी। दूसरे दिन उनके शव को जलाया गया और तीसरे दिन राख को हवा में उड़ा दिया गया – प्रेमी का प्रेम पूर्णता को पहुँच गया, और देखनेवालों ने देख लिया कि इश्क़ किसको कहते हैं !!! उस दिन से आज तक 'दारो-रसन" की कहानी ज़िन्दा है।

"तस्लीमो-रज़ा" का शब्दार्थ है "अंगीकार" और "स्वीकरण" और "क़ज़ाओ-क़दर" के अर्थ हैं, कर्म लेख अर्थात् प्रारब्ध। प्रभू को इच्छा और आज्ञा बिना एक पत्ता भी नहीं हिल सकता। जो 'क़ज़ाओक़दर" है वही होता है। तो फिर 'तस्लीमो-रज़ा" के अतिरिक्त और उपाय ही क्या है।

जहाँ यह बात है कि सब अधिकार प्रमात्मा का है और मनुष्य असमर्थ है वहाँ इससे भी इनकार नहीं हो सकता कि थोड़ा समर्थता तथा अधिकार मनुष्य को भी दिया गया है। इसी को "जब्रो-इख़्तियार" [असमर्थता और समर्थता] कहते हैं।

आफ़िरीनिश

(निर्माण)

"निर्माण' की बात जब आयगी तो "इब्तिदा और इन्तिहा" [आदि अन्त] की चर्चा होना आवश्यक है। इसी शीर्षक में "प्रेम और "प्रेमी" के आदि-अन्त के अश्आर भी लिखे गए हैं।

इस संसार में इनसान [मनुष्य] बसते हैं, मगर कभी शायर अपने को अर्थात् इनसान को भी समझ नहीं पाता, कहता है :—

इसी तलाशो-तजस्सुस में खो गया हूँ मैं।
अगर नहीं हूँ तो क्यु कर, जो हूँ तो क्या हूँ मैं॥

मैंने इस विषय का एक शीर्षक "क्या हूँ मैं", अलग बना दिया है। 'हस्ती और नेस्ती" [अस्तित्व और निरास्तित्व] के सम्बन्ध में भी

कवि ने अच्छे-अच्छे मज़्मून पैदा किये हैं। और दुनिया है तो "नशेबो-फ़राज़" [ऊँच-नीच] का होना भी आवश्यक है। कवि ने इस विषय को भी नहीं छोड़ा है।

अवामिरो-नवाही, सज़ा व जज़ा।

[आदेश, निषेध, दण्ड और प्रतिदान]

परमात्मा ने दुनिया में "नेकी-बदी" सभी कुछ बनाया। समय-समय पर वह मानव जाति का पथ प्रदर्शन भी करता रहा। धर्मशास्त्र बने और मनुष्य को बताया गया कि क्या करना चाहिये और क्या नहीं करना चाहिये। जिस काम को करने का हुकुम दिया गया उसको 'अवामिर' [आदेश] और जिससे रोका गया उसको "नवाही" [निषेध] कहते हैं। जो कार्य निषेध हैं उनके करने का "दण्ड" [सज़ा] है और आज्ञा पालन करने का 'प्रतिदान'। इसी को "सज़ा-व-जज़ा" [दण्ड और प्रतिदान] कहते हैं।

एक दिन दुनिया का अन्त हो जाएगा। इसी प्रलय को "क़ियामत" कहते है। अच्छे कर्म करनेवालों को "जन्नत" (स्वर्ग) और पापियों को "जहन्नम" (नरक) मिलेगा।

यह सब कुछ है परन्तु होता जो कुछ है, परमात्मा ही की कृपा से होता है। इसी कृपा अर्थात् अनुकम्पा को "रहमत" कहते हैं।

तलाशो—जुस्तुजू।

(खोज ढूँढ)

मनुष्य तो प्रेम के लिये ही पैदा हुआ है। कैसे सम्भव था कि वह उस परम सौन्दर्य के रूप दर्शन का प्रयत्न न करे जिसकी आभा से सारा संसार आलोकित है, और उसकी "तलाशो-जुस्तुजू" में इधर-उधर हाथ-पाँव न मारे। कवि का विचार है कि मनुष्य एक "मुसाफ़िर" है जो परलोक से इह-लोक में उसी परम सौन्दर्य

की खोज में आया है। जब जीवन-यात्रा समाप्त हो जायगी, तो फिर दूसरे लोक में चला जायगा।

इस संसार में जो भी यात्रा होगी, संसारिक ढंग ही से होगी— "मुसाफ़िर" [यात्रि] चलता है तो कारवाँ अर्थात् क़ाफ़िला [यात्रि-दल] के साथ। कारवाँ का "राहबर" [पथ-प्रदर्शक] होता है। यात्रियों को इकट्ठा करने और उनको प्रस्थान के लिये सावधान करने को शंख फूँका जाता है, उसको 'जरस" कहते हैं।

रास्ते में बड़े-बड़े मैदान मिलते है। उसमें 'ख़ार" [काँटे] होते हैं। 'बगूले" [चक्रवात] उठते हैं। "गुबारे-राह" [रास्ते की धूल] उड़ती है और चलते-चलते पाँव में छाले [आबलये-पा] भी हो जाते हैं। परन्तु यात्रि सब दुखों को झेलता, बचता-बचाता "मन्ज़िल" की ओर बढ़ता चला जाता है कभी मन्ज़िल के क़रीब (निकट) हो जाता है कभी उससे दूर। यह 'कुर्बो-दूरी" [नज़दीकी और दूरी] कभी उसको थका देती है कभी उसकी हिम्मत बढ़ा देती है और वह बढ़ता ही जाता है। कहता है:—

मेरी महरूमी की राहों से ये दी उसने सदा।
कुर्ब की राहों में मेरी राह इक दूरी भी है॥

[मेरी असफलता की राहों से उसने आवाज़दी कि मुझ से निकट होने के रास्तों में एक रास्ता दूर होना भी है।] और कहीं यात्रि को "गुमरही" [राह से भटक जाना] का भी सामना करना पड़ता है।

परमात्मा के रूप दर्शन और उसकी तलाशो-जुस्तुजू के सम्बन्ध मे हज़रत मूसा और कोहे-तूर की चर्चा अधिकतर होती है। हज़रत-मूसा पग़म्बर को ईश-दर्शन की बड़ी अभिलाषा थी। "कोहे-तूर" नामक एक पर्वत फ़ारान में है। वहाँ हज़रत मूसा ने उसकी आवाज़ तो सुनी मगर उसका दर्शन न कर सके। प्रार्थना की "हे ईश्वर! दर्शन दीजिये"। उत्तर मिला "लन्तरानीं" [तुम मुझे नहीं देख सकोगे,] हाँ, तूर पर्वत की ओर देखो, यदि मेरी आभा प्रदर्शन के सामने वह संभला रहा तो तुम भी मुझे देख सकोगे।"

फिर ईश्वर ने दर्शन दिया। तूर टुकड़े-टुकड़े हो गया और मूसा बेहोश हो गए। ईश्वर से इनको बातचीत हुई थी इसलिये इनको "कलीम" [बातचीत करनेवाला] भी कहते हैं।

हुस्न।

"हुस्न" [सौन्दर्य] मे कवि का आशय अधिकतर "परम सौन्दर्य" ही होता है। संसारिक सौन्दर्य और अपनी प्रियसी की सुन्दरता का भी वर्णन करता है। "हुस्नो-इश्क़" [सौन्दर्य और प्रेम] की कथा भी कहता है, और "बेदादे-हुस्न" [सौन्दर्य के अत्याचार] की भी। "हुस्न-परस्ती" [सौन्दर्य उपासना] भी करता है और "फरेबे-हुस्न" [हुस्न के धोखे] की भी जानकारी रखता है। और फिर "हुस्ने-सीरत" [चरित्र के सौन्दर्य] पर भी प्राण देता है।

दिल व कैफ़ियाते—दिल।

[हृदय और हृदय की रचनाएँ]

आदम का जिस्म जब के अनासिर से मिल बना।
कुछ आग बच रही थी, सो आशिक़ का दिल बना॥

[मनुष्य मात्र के आदि पुरुष, आदम, का शरीर जब पंचभूत से मिलकर बना तो कुछ आग बच गई उसी आग से आशिक़ का दिल बना।] और यह बिलकुल सच है बल्कि मैं तो "आशिक़" को जगह इनसान [मनुष्य] कहूँ। जैसा कवि ने कहा है :—

ऐ दाग़ ! सब ये हज़रते-दिल के फ़ुतूर हैं।
जो कुछ किया जनाब ने रूसवा किया मुझे॥

[हे दाग़ ! जो भी फ़साद उठाया हुआ है, श्रीमान "दिल" का उठाया हुआ है। जो कुछ भी बदनाम किया है श्रीमान दिल ही ने किया है।] हृदय की विभिन्न रचनाओं को भिन्न-भिन्न शीर्षक में दिया गया है।

जुनूनो—ख़िरद ।

[उन्माद और बुद्धि]

प्रेम में एक समय ऐसा भी आता है जब प्रेमी दीवाना हो जाता है, और फिर ज्ञान और चेतना सभी कुछ खो देता है। "सहरा व दश्त" [मरूभूमि और बन] में उसका मन लगता है। शहर और मकान से उसको उलझन होती है। सहरा-नवर्दी [जंगलों में मारे मारे फिरना] करने को जी चाहता है। 'दामन" [अंचल] और गरीबाँ [ग्रीवा] कभी अपनी हालत पर नहीं रहते, जब दीवानगी का जोश बढ़ता है फाड़ दिये जाते हैं।

कभी लोग उसके उन्माद से तंगआकर उसको "ज़ंज़ीर" पहना देते हैं। ज़ंजीर को वह आभूषण समझता है। "ज़िन्दाँ" [कारागार] उसके लिये उपवन हैं। वह तो बस एकही ख़याल में मस्त है, और वह है "मित्र का प्रेम"। अपने उन्माद पर सारे संसार के ख़िरद [बुद्धि] को निछावर करने को तैयार रहता है। ऐसे दीवाने "अक़्ल" [बुद्धि] को प्रेम मार्ग का रोड़ा समझते हैं। कवि कहताहै :—

गुज़र जा अक़्ल से आगे, के यह नूर।
चिराग़े-राह है, मन्ज़िल नहीं है ॥

[बुद्धि की ज्योति अधिक से अधिक रास्ते का दीप बन सकती है, मन्ज़िल नहीं बन सकती। उससे आगे बढ़ जा।] जब तक उन्माद उस सीमा तक न पहुँच जाए कि मित्र का संकेत पाते ही प्रेमी बिना कुछ सोंचे समझे आग में कुद पड़े, कुछ भी प्राप्त नहीं हो सकता। बुद्धि परिणाम को सोचती है, उन्माद केवल मित्र के इशारों को जानता हैं। बुद्धि पहले अपने प्रति सोचती है, उन्माद की सब से पहली शिक्षा है अपने आप को मिटा देना। कवि ने क्या ख़ूब कहा है :—

जिसे दीवानगी कहते हैं, उल्फ़त की नुबुव्वत है।
ग़नीमत है जो सदियों में कोई दीवाना हो जाय ॥

[दुनिया जिसे उन्माद कहती है वास्तव में वह प्रेम संसार का देवता बन जाना है। बहुत ग़नीमत है अगर कई सदियों में भी कोई एक दीवाना पैदा हो जाए।]

"लैला-मज्नू" और "शीरीं-फ़रहाद" की कहानी आजतक दुनिया में गूँज रही है। मज्नू [जिसका असली नाम क़ैस था] अरब के नज्द नामक प्रान्त का रहने वाला था। लैला नामक एक युवती पर आसक्त था। इसने लैला के लिये अपने को इस प्रकार मिटा दिया कि आज "क़ैस" शब्द के अर्थ ही हो गये हैं मज्नू अर्थात् दीवाना।

शीरीं ईरान की एक सुन्दरी थी। वहाँ का बादशाह खुसरू ज़बरदस्ती उसको अपने महल में ले आया। फ़र्हाद भी शीरीं पर आसक्त था। शीरीं भी फर्हाद ही से प्रेम करती थी। आख़िर बादशाह ने यह तय किया कि फ़र्हाद पर्वत काटकर एक नहर महल तक बना दे तो शीरीं उसको मिल जायगी। फ़र्हाद ने पहाड़ों को काट दिया। नहर बनाने का काम पूरा होनेवाला ही था कि खुसरू ने शीरीं के मरने की झूठी ख़बर उसको भेजवा दी। फ़र्हाद ने वही तीशा जिससे पहाड़ काटता था अपने सर पर मार लिया। उसके मरने की ख़बर सुनकर शीरीं ने भी आत्म हत्या कर ली। पहाड़ काटने की वजह से फ़र्हाद को कोहकन [पहाड़ खोदनेवाला] भी कहते हैं।

सरापाए-महबूब।

[प्रयसी का नखशिख]

अपनी प्रयसी की सुन्दरता का वर्णन और उसके अंग-अंग की प्रशंसा करने में अत्युक्ति करना कोई आश्चर्य की बात नहीं। यह विषय ही कुछ ऐसा है। कवि को कोमल से कोमल नाज़ुक ख़याली का मैदान खुला मिलता है। परन्तु यहाँ भी प्रयसी के नखशिख के पर्दे में वह बड़ी ऊँची-ऊँची बातें कह जाता है। उसके "आईनए

रुख" की आभा में किसी और के जलवे को देखता है। "ज़ुल्फ़ और ज़ुल्फ़ की बू" [सौरभ] उसके हृदय ही नहीं आत्मा को भी प्रसन्न कर देते हैं। लटों की सौरभ उसके मस्तिष्क को ही नहीं सारे संसार को सुगन्धित कर देती हैं :—

कहाँ खोले हैं गेसू यार ने ! ख़ुश्बू कहाँ तक है !!!

सामाने-आराईश व आराईश।

(श्रृंङ्गार तथा श्रृंङ्गार प्रसाधन)

प्रयसी के श्रृंङ्गार के लिये कवि ने जो प्रसाधन इकट्ठा किये हैं, देखने योग्य हैं। अतिशयोक्तियाँ इसमें भी बहुत मिलेंगी, मगर इन अतिशयोक्तियों में भी एक श्रृंङ्गार है।

शोख़ो, अदा व नाज़।

"प्रयसी" अर्थात् "दोस्त" के नाज़ो-अदा का वर्णन भी उर्दू कवियों के यहाँ बहुत मिलता है। मैंने कोशिश की है कि इस विषय के सम्बन्ध की भी सारी बातें एकत्रित हो जायें। माशूक़ की "निगाह" [दृष्टि] उसकी "ख़ुदनुमाई" [आत्म प्रदर्शन] उसकी "ख़ू" [स्वभाव], 'बर्हमी-वो-अताब" [क्रोध], "बेएतनाई" [उपेक्षा] 'शोख़ो" [चचलता] और "करमो-मिहरबानी" [दया और कृपा] से कवि का क्या आशय होता है, यह समझने और परखने की बात है।

शबाबो-पीरी

(जवानीं और बुढ़ापा)

इस क्षेत्र में भी कवियों ने काफ़ी ज़ोरे-क़लम देखाया है—जवानी का आगमन है। कवि सोचता है :—

नाम है क्या इसी हंगामे का आग़ाज़े-शबाब।
एक आँधी सी चली आती है अरमानों की॥

["आग़ाज़े-शबाब" का शब्दार्थ है जवानी का प्रारम्भ ।]

अन्त में "ज़ईफ़ी" [बुढ़ापा] आता है और "यादे-शबाब" [जवानी की स्मृति] ही बाक़ी रह जाता है और बस ।

शौक़े-दीदार और दीदार ।

[दर्शन की अभिलाषा और दर्शन]

यह विषय प्रयसी के दर्शन की बातों का है । और इस सम्बन्ध में जितनी बातें कही जाने की हैं कवि ने शायद एक भी नहीं छोड़ी । लेकिन असली "माशूक़" को वह यहाँ भी नहीं भूला । "शौक़े-दीदार" [दर्शन की अभिलाषा] भी रखता है और अपनी परिमितता को भी नहीं भूलता । कहता है :—

सब को है तेरे जल्वए-रंगीं की जुस्तुजू ।
यह कौन सोचता है कि ताबे-नज़र नहीं ॥

[ताबे-नज़र का शब्दार्थ है दृष्टि की शक्ति]

इश्क़—आशिक़ी ।

मनुष्य जब होश संभालता है तो अपने चतुर्दिक सांसारिक हृदयेश सरोसामान को बिखरा हुआ पाता है और इन्हीं में लीन हो जाता है । सांसारिक सम्बन्धों की ज़ंजीरें उस को चारों ओर से जकड़ लेती हैं । और प्रेम ही वह शक्ति है जो इन ज़ंजीरों को तोड़ कर उस को सांसारिक प्रेम की बन्दी से निकाल कर ईश-प्रेम के सुन्दर और मनोहर मैदान में ला खड़ा कर सकता है । "इश्क़-मजाज़ी" [माया रूपी प्रेम] "इश्क़-हक़ीक़ी" (सत्य प्रेम) तक पहुँचा देने का ज़रिया बन जाता है—

इस विषय में कवि इश्क़ और आशिक़ी के विभिन्न पहलूओं और मुख़तलिफ़ हालतों पर प्रकाश डालता है ।

उसके बाद "अर्ज़े-तमन्ना" अर्थात् प्रयसी से अपनी कामनाओं के विवरण का शीर्षक आता है । फिर "ग़ैर" अर्थात् प्रतिद्वन्दी का ।

इस विषय में कवियों ने बहुत कुछ लिखा है। विषय चूँकि बड़ा नाज़ुक है इसलिये थोड़ी सी असावधानी में भी मेयार (कसौटी) से गिर जाने का डर रहता है। लेकिन सच पूछिये तो प्रेम का आनन्द प्रतिद्वन्दी के ही दम से है :—

सामने उसके न कहते, मगर अब कहते हैं।
लज़्ज़ते-इश्क़ गई, ग़ैर के मर जाने से ॥

उसके बाद "फ़िराक़ो-वस्ल" [वियोग और मिलन] का शीर्षक है। प्रेम की दुनिया में इस विषय को जो महत्व है, ज़ाहिर है। फिर "फ़ुग़ाँनो-फ़रियाद" [रूदन और क्रन्दन] का शीर्षक है। इस विषय में उर्दू कवियों ने बहुत कुछ अतिशयोक्तियों से काम लिया है और अकसर मेयार (कसौटी) से गिर गए हैं—मगर वही मुबाल्ग़ा जब योग्यता के साथ काम में लाया गया है, विषय के सौन्दर्य को चार चाँद लग गए है। "आह", "आँसू" और "फ़ुग़ाँ" के विषय में कैसे कैसे सुन्दर शेर कहे गए है, पढ़िये और देखिये कि कवियों ने बात कहाँ से कहाँ तक पहुँचा दी है।

फ़िक्र और तरद्दुद (चिन्ता और संकोच) का एक अलग शीर्षक बना दिया गया है। कवियों ने हर प्रकार के चिन्ताओं पर प्रकाश डाला है और उनका वर्णन किया है। उसके बाद उर्दू कविता का बहुत ही बदनाम विषय आता है-अर्थात् "क़त्ल"। यहाँ भी अतिशयोक्तियों से बहुत ज्यादा काम लिया गया है। और जहाँ उसको संभाल नहीं हो सकी है मज़्मून बहुत गिर गया है। फिर भी "क़त्ल", "ख़न्जरो-तेग़" "बिस्मिलो-क़ातिल" और "तीरो-कमान" आदि के संकेतों से कवियों ने जो काम लिये हैं, देखने योग्य हैं।

"कूए-यार" (प्रयसी की गली) उसका "आस्ताना" "बामो-दर" (अटारी और द्वार) और इस शीर्षक के दूसरे विषयों में भी कवि अपने मतलब की बहुत कुछ कह गया है। "कैफ़ियातो-वारिदात" मनोभावों और घटनाओं) के शीर्षक में जितने विषय आ सकते हैं

क़रीब-क़रीब सभी को इस संग्रह में सम्मिलित करने का प्रयास किया गया है। "कशतियो-तूफ़ान" का एक अलग शीर्षक है। कश्ती से कवि का आशय अधिकतर मनुष्य जीवन और तूफ़ान से क्रान्ति आन्दोलन और परिवर्तन होता है। "साहिल" का शब्दार्थ तो है "तट" मगर कवि का आशय इससे वह स्थान होता है जहाँ तूफ़ान और हंगामे से पनाह हो और जहाँ शान्ती के सिवा और कुछ न हो। "नाख़ुदा" का अर्थ है नाविक मगर इससे कवि का आशय "पथ–प्रदर्शक" और "नेता" भी होता है।

"गर्दिशे-आस्मानो-लैलो-निहार" [आकाश चक्र और काल चक्र] में भी विभिन्न शीर्षक हैं। "माहो-अन्जुमो-आस्माँ" [चाँद सितारे और आकाश] शीर्षक में भी अलग-अलग विषय हैं। "आस्मान" [आकाश] को कवि अपना पुराना शत्रू समझता है। उसका कहना है कि जो कुछ भी विपत्ति आती है, विषेशत: प्रेमियों पर, उसमें आस्मान का बड़ा हाथ होता है।

"गुल व फ़स्ले-गुल" [फूल और बसन्त ऋतु] और "मुश्ते-पर" [मुट्ठी भर पंख अर्थात बुलबुल] और "सैयाद"के अलग-अलग शीर्षक हैं। बुलबुल और सैयाद उर्दू कविता का बहुत ही प्रसिद्ध विषय है। इसी प्रकार महफ़िले-यार के शीर्षक में "शमओ-पर्वानो", और 'मयो-मैकदा" [मधु और मधूशाला] के शीर्षक में "पैमाना" [मधूपात्र] "शराब", रिन्द" [शराबी] के विषयों का भी वह संकेत के तौर पर प्रयोग करता है, और इन्हीं की आड़ लेकर नाज़ुक से नाज़ुक बातें कह जाता है। "मयो-मैकदा" के शीर्षक में एक विषय है "शैख़ो-वाएज़", [मुल्ला और धर्मउपदेशक] "नासिह" [उपदेशक] का भी एक अलग शीर्षक बना दिया गया है। "रिन्दों" [शराबियों] की 'शैख़ो-वाएज़' से और प्रेमियों की 'नासिह' से बराबर छनती रही है। वह उनको शराब पीने से रोकते हैं और यह प्रेम करने और प्रयसी की गली में जाने से। इस प्रकार यह विषय बहुत मनोरन्जक हो गया है।

"मुद्दआ, उम्मीदो-यास", [मनोरथ, आशा और निराशा] "मुसर्रतो-आराम", [ख़ुशी और सुख] "मुलाक़ात, दोस्ती और तर्के-मुलाक़ात", "वफ़ा व जफ़ा", "मौत व बीमारी", "यादे-अय्याम," [बीते दिनों की याद] 'नींद", "हिलाले-ईदव ईद" [ईद और ईद का चाँद] के भी अलग शीर्षक बना दिए गए हैं। जो विषय बच गए उनको "मुतफ़र्रिक़ात" के शीर्षक में दे दिया गया है। अन्त में मैं श्री अयोध्या प्रसाद गोयलीय के कुछ शब्द दुहरा देना चाहता हूँ, जिससे उर्दू ग़ज़ल का कुछ अनुमान हो सकेगा। कहते हैं :—

"ग़ज़ल इतनी भावपूर्ण कोमल कला है कि उसके वास्तविक रहस्य को पारखी दृष्टि ही जान सकती है ग़ज़लगो शायर ख़ुदा की बात कहे या शैतान को, आध्यात्मिकता की गुत्थियाँ सुलझाय या आधिभौतिकता की तात्विक विवेचन करे या राजनैतिक घात प्रतिघात का वर्णन, उसे सब ग़ज़ल की सीमा के अन्तर्गत कहना पड़ता है .... ग़ज़ल में सीधे भाव व्यक्त न करके पर्दे में कहे जाते हैं ... ...

ग़ज़ल संकेतात्मक शायरी है। चाहे उसमें कैसे ही भाव व्यक्त किये जाएँ, वे सब गुलो-बुलबुल साक़ी-ओ-मैख़ाना एवं हुस्नो-इश्क़ आदि के पर्दे में कहे जाते हैं— बक़ौल ग़ालिब –

हर चन्द हो मुशाहद-ए-हक़ की गुफ़्तगू।
बनती नहीं है, बादा-ओ-साग़र कहे बग़ैर॥
[शेर-ओ-सुख़न पाँचवाँ भाग पृष्ठ २८]

ऊपर के शेर का अर्थ इस प्रकार होगा—हरचन्द देव दर्शन की बात हो, मधु और मधुपात्र कहे बिना नहीं बनती।

मैं ने इस संग्रह की विषय-सुची उर्दू अक्षरों के अनुसार तैयार की है। उदाहरण के लिये यूँ समझिये कि "अलिफ़" [अ] के बाद "बे" और "बे" के बाद "ते" होगा, क या ग नहीं होगा। "आ" "ई" 'ऊ" सब अलिफ़ ही में सम्मिलित हैं। उर्दू के अक्षर इस प्रकार हैं :—

अलिफ़, बे, पे, ते, टे, से, जीम, चे, हे, खे, दाल, डाल, ज़ाल, रे, ड़े, ज़े, सीन, शीन, साद, ज़ाद, तो, ज़ो, ऐन, ग़ैन, फ़े, क़ाफ़, काफ़ गाफ़, लाम, मीम, नूँ, वाव, हे, ये।

शब्दों को उसी प्रकार लिखने की कोशिश की गई है जिस प्रकार उर्दू में बोले जाते हैं। "वह" की जगह "वो" लिखा गया है, "यह" की जगह "ये", "कि" की जगह "के" [जैसे :—उसने कहा के] "पै" [जिसका अर्थ है 'पर" यानी लेकिन] की जगह "प", "विवश" की जगह "बेबस" इत्यादि।

कोमल एकार और ओकार अभी तक हिन्दी लीपि में नहीं आए हैं इस कमी को ह्रस्व "इ" और ह्रस्व "उ" से पूरा करने का प्रयत्न किया गया है। जैसे "तेरा" का "ते" छन्दों के मात्र के लिहाज़ से कहीं कोमल होता है और कहीं साधारण। कोमल 'तेरा' को 'तिरा' लिखा गया है, "मेरे" को "मिरे" इत्यादि। "इन्तिज़ार" "इल्तेमास" "इल्तेजा" इन्हेमाक आदि शब्दों के त, ह कोमल एकार के साथ पढ़े जाते हैं। इसलिये इनको ह्रस्व इकार के साथ लिखा गया है जैसे "इन्तिज़ार" वग़ैरह। "मोल" में साधारण ओकार है मगर "मोहब्बत" में कोमल। इस प्रकारके कोमल ओकार को ह्रस्व "उ" से लिखा गया है, जैसे "मुहब्बत" "मोसल्लम" कीजगह "मुसल्लम" "क़ोबुल" [स्विकृव] की जगह "क़ुबूल" इत्यादि।

इस संग्रह के पढ़ने में इन्हीं बातों का ख्याल रखना चाहिये।

अन्त में इस सग्रह की तैयारी के विषय में भी शायद मुझे कुछ कहना चाहिये—इस तरह शेरों का विषयानुकूल संग्रह तैयार करने का काम मैंने १९४३ ई० में आरम्भ किया। पेशे की मश्ग़ूलियतें अकसर बाधा डालती रहीं। कभी-कभी हिम्मत जवाब देने लगी, लेकिन मित्रोंने बराबर उत्साह दिया और यह काम होता रहा।

पहले हमारा विचार इसको केवल उर्दू ही में प्रकाशित करने का था। लेकिन भाई श्रीभगवान प्रसाद ने जो मुंगेर में अडिशनल डिस्ट्रिक्ट और सेशन जज थे, इसको हिन्दी लीपि में प्रकाशित करने की राय दी [और इसके लिये मैं उनका अनुगृहीत हूँ] और मैंने सोचा कि उर्दू काव्य बाटिका से चुने हुए फुलों का यह गुलदस्ता राष्ट्रभाषा को एक सुन्दर भेंट होगी। इश्वर की दया से यह उपहार तैयार हो गया है और अब मैं इसको पेश करने का गौर्व प्राप्त कर रहा हूँ—क़बूल हो जाए तो अहोभाग्य—!

सैयद बहा उद्दीन अहमद

असिस्टेन्ट सेशन जज,

आरा (बिहार)।

पता यूँ तो बताते हैं वो सबको लामकाँ[1] अपना ।
मगर मालूम है रहते हैं वो टूटे हुए दिल में ।।

—अनीस दाऊदनगरी

लाख नादान[2] सही, ऐसे भी हम कोर[3] नहीं ।
के चमन देख के ज़िक्र[4] चमनआरा[5] न करें ।।

—वहशत कलकतवी

तू कहाँ है के तेरी राह में ये काबाओदैर[6] ।
नक़्श[7] बन जाते हैं मंज़िल नहीं होने पाते ।।

—फ़ानी बदायूनी

'दाग़' को कौन देनेवाला है ।
जो दिया ऐ ख़ुदा दिया तू ने ।।

—दाग़

मेरी हस्ती[8] गवाह है के मुझे ।
तू किसी वक़्त भूलता ही नहीं ।।

—फ़ानी बदायूनी

---

१ शून्य २ मूर्ख ३ अन्धे ४ चर्चा ५ उपवन सजानेवाला ६ मस्जिद-मन्दिर ७ (पद) चिह्न ८ अस्तित्व ।

जग में आकर इधर उधर देखा।
तू ही आया नज़र, जिधर देखा॥

—मीर दर्द

जिसने बनाई बाँसुरी गीत उसी के गाए जा।
साँस जहाँ तक आए जाए, एक ही धुन बजाय जा॥

—आरज़ू लखनवी

ईमानो इर्फ़ां
(धर्म ईशज्ञान)

ईमानो कुफ़्र (धर्म, नास्तिकता) :—

आप का सौदाई[1] है काफ़िर[2] हो या दींदार[3] हो।
बात इतनी है, अब इसका जिसक़दर[4] तूमार[5] हो॥

—बेताब अज़ीमाबादी

न ग़रज़[6] कुफ़्र से रखते हैं, न इस्लाम से काम।
मुद्दआ[7] साक़ी[8] से अपने हमें, और जाम[9] से काम॥

—सौदा

तस्लिमो रज़ा (स्वीकरण, अंगीकार) :—

अगर बख़्शे[10] ज़हे[11] क़िस्मत, न बख़्शे तो शिकायत क्या।
सरे तस्लीम[12] ख़म[13] है, जो मिज़ाजे[14] यार में आये।

—आतिश

हुक्म पर उनके जान देता हूँ।
मैं नहीं जानता क़ज़ा[15] क्या है॥

—हसरत मुहानी

---

१ प्रेमासक्त २ नास्तिक ३ धार्मिक ४ जितना ५ विस्तार ६ मतलब ७ मतलब ८ प्याला ९ क्षमा करे १० शराब पिलानेवाला ११ धन्य भाग्य १२ स्वीकृति १३ झुका हुआ १४ मित्र के जी में १५ निर्णय।

वक़्फ़[1] तस्लीमोरज़ा[2] चाहिए दिल आशिक़[3] का।
'साहिर' आसान नहीं बन्दए जानाँ[4] होना ॥

—पं० अमरनाथ साहिर

इसको न सोचिए के सितम[5] या करम[6] हुआ।
ख़ंजर[7] उठाइए सरे तस्लीम[8] ख़म[9] हुआ ॥

—एहसान शाहजहाँपुरी

तेरी ख़ुशी से अगर ग़म[10] में भी ख़ुशी न हुई।
वो ज़िन्दगी तो मुहब्बत[11] की ज़िन्दगी[12] न हुई ॥

—जिगर मुरादाबादी

सख़्त[13] मुश्किल[14] है शेवये[15] तस्लीम[16]।
हम भी आख़िर को जी चुराने लगे ॥

—हाली

मैं जिया भी दुनिया में और जान भी दे दी।
ये न खुल सका लेकिन, आपकी ख़ुशी क्या थी ॥

फ़ानी बदायूनी

दारो-रसन (सूली और सूली की रस्सी): —

बस इतने पर हुआ हंगामए[17] दारो-रसन पैदा।
के ले आग़ोश[18] में क्यों आइना मेहरे दरोख़शाँ[19] को ॥

—असग़र गोंडवी

---

१ समर्पित २ स्वीकरण ३ प्रेमी ४ प्रेयसी का दास ५ अनर्थ ६ कृपा ७ तलवार ८ स्वीकरण का मस्तक ९ झुक गया १० शोक ११ प्रेम १२ जीवन १३ अत्यन्त १४ कठिन १५ नीति १६ स्वीकरण १७ कोलाहल १८ गोद १९ दीप्तिमान सूर्य ।

यह रुतबए बलंद[1] मिला जिसको मिल गया।
हर मुद्दई[2] के वास्ते दारो-रसन कहाँ ॥

—रिन्द

गोलूए[3] इश्क़ को दारो-रसन पहुँच न सके।
तो लौट आए तेरे सरबलन्द[4] क्या करते ॥

—फ़ैज़ अहमद 'फ़ैज़'

रासता एक था हम इश्क़ के दीवानों का।
क़द्दो-गेसू[5] से चले दारो-रसन तक पहुँचे ॥

—सेराजुद्दीन 'ज़फ़र'

हरमोदैर (मस्जिद, मंदिर):—

हरमोदैर के झगड़े तेरे छुपने से पड़े।
तू अगर पर्दा उठा दे तो तू ही तू हो जाय ॥

—बर्क़

बेखुदी[6] में हम तो तेरा दर[7] समझकर झुक गए।
अब खुदा मालूम[8] वो काबा था या बुतखाना[9] था ॥

—तालिब बाग़पती

हम नहीं जानते कुछ दैरोहरम[10] का रस्ता।
हम मये इश्क़[11] से सरशार[12] चले जाते हैं ॥

—दाग़

जब्रो एख़्तियार (असमर्थता और समर्थता) :—

नाहक़[13] हम मजबूरों[14] पर यह तोहमत[15] है मोख़्तारी[16] की।
चाहें हैं सो आप करे हैं मुफ़्त हमें बदनाम किया ॥

—मीर तक़ी 'मीर'

---

१ उच्च पद २ दावा करनेवाला ३ गरदन ४ सम्माननीय ५ प्रेयसी का क़द और बाल ६ तन्मय होकर ७ द्वार ८ ईश्वर जाने ९ मंदिर १० मस्जिद-मंदिर ११ प्रेम-मदिरा १२ मस्त १३ बेकार १४ असमर्थों १५ कलङ्क १६ स्वाधीनता।

चला अदम[1] से मैं जब्रन[2] तो बोल उठी तक़दीर[3]।
बला में पड़ने को कुछ एख़्तियार[4] लेता जा॥

—ग़ालिब

याँ के सुफ़ीदो[5] स्यह[6] में हम को दख़्ल[7] जो है सो इतना है।
रात को रो रो सुबह किया और सुबह को रो रो शाम किया॥

—मीर

जिस्मे आज़ादी[8] में फूँकी तू ने मजबूरी की रूह[9]।
ख़ैर, जो चाहा किया; अब ये बता हम क्या करें?

—फ़ानी

इस जब्र[10] पर तो 'ज़ौक़' बशर[11] का ये हाल है।
क्या जानें क्या करे जो ख़ुदा एख़्तियार[12] दे॥

—ज़ौक़

ज़ाहिरो बातिन (प्रत्यक्ष, परोक्ष) :—

इस आलमे असबाब[13] के ज़ाहिर[14] पे न जाना।
आसारे[15] अयाँ[16] और[17] हैं, आसारेनेहाँ[18] और॥

—अब्बास सहारनपुरी

अहले ज़ाहिर[19] न करें कूचये बातिन[20] की तलाश[21]।
कुछ न पायेंगे वहाँ रंजो मुसीबत[22] के सिवा।

—हसरत मुहानी

---

१ परलोक २ ज़बर्दस्ती ३ भाग्य ४ अधिकार ५ उजला ६ काला ७ अधिकार ८ स्वतंत्रता के शरीर में ९ असमर्थता की आत्मा १० असमर्थता ११ मनुष्य १२ अधिकार १३ संसार १४ बाह्यरूप १५ चिह्न १६ प्रत्यक्ष १७ दूसरा १८ गुप्त चिह्न १९ प्रत्यक्षद्रष्टा २० गुप्त मार्ग २१ खोज २२ पीड़ा।

मजाज़ो-हक़ीक़त (मायारूप और तथ्य):—

मजाज़ और हक़ीक़त कुछ और है यानी।
तेरी निगाह से तेरा ब्यों[1] नहीं मिलता॥

—फ़ानी

मजाज़ कैसा कहाँ हक़ीक़त, अभी तुझे कुछ खबर नहीं है।
ये सब है एक ख़ाब[2] की सी हालत, जो देखता है सेहर[3] नहीं है॥

- असग़र गोंडवी

कुछ न वहदत[4] है न कसरत[5], न हक़ीक़त न मजाज़।
ये तेरा आलमे मसती, वो तेरा आलमे होश॥

—फ़ानी

हल कर लिया मजाज़ो हक़ीक़त के राज़[6] को।
पाई है मैं ने ख़ाब में ताबीर[7] ख़ाब की॥

—असग़र गोंडवी

तुझे हक़ नहीं के ख़फ़ा हो तू मेरी बेदिलीए न्याज़[8] पर।
मैं लुटा चुका हूँ मताए दिल[9] तेरे इश्वाहाए मजाज़ पर॥

—जमील मज़हरी

मारफ़ते इलाही (ईश-ज्ञान):—

कोई उनको[10] समझ भी ले तो फिर समझा नहीं सकता।
जो इस हद[11] पर पहुँच जाता है वो ख़ामोश रहता है॥

—नख़शब जारचवी

---

१ कथव २ स्वप्न ३ प्रभात ४ एकत्व ५ बाहुल्य ६ भेद ७ स्वप्न-फल ८ भगती ९ दिल की पूंजी १० 'उन' से मतलब है हरि ११ सीमा।

आशिक़ी[1] से मिलेगा ऐ ज़ाहिद[2]।
बन्दगी[3] से ख़ुदा नहीं मिलता॥

—दाग़

उनका पता मिला तो फिर अपना पता कहाँ।
अब आश्ना[4] कहाँ कोई, नाआश्ना[5] कहाँ॥

—मुज़्तर मुज़फ़्फ़रपुरी

क़ज़ा ओ क़दर (कर्मलेख) :—

देख 'फ़ानी' वो तेरी तदबीर[6] की मैय्यत[7] न हो।
एक जनाज़ा[8] जा रहा है दोश[9] पर तक़दीर के॥

—फ़ानी

तदबीर से क़िस्मत की बुराई नहीं जाती।
बिगड़ी हुई तक़दीर बनाई नहीं जाती॥

—दाग़

मेरी क़िस्मत में ख़ुदा जाने, कहाँ से आ गये।
वह जो ख़म[10] हैं आपकी ज़ुल्फ़े परीशाँ[11] के लिए॥

—अख़्तर

किसी की नाव को तूफ़ाँ ने ग़र्क़े आब[12] किया।
किसी की नाव किनारे इसी बहाने लगी॥

—जमील मज़हरी

मुझे रोकेगा तू ऐ नाख़ुदा[13] क्या ग़र्क़[14] होने से।
के जिनको डूबना है डूब जाते हैं सफ़ीनों[15] में॥

—एक़बाल

---

१ प्रेम २ भक्त ३ भक्ति ४ अपना ५ पराया ६ उद्योग ७ शव ८ अर्थी ९ कंधा १० घुंघरालापन ११ उलझी हुई लटें १२ जलमग्न १३ नाविक १४ डूबने से १५ नाव।

वहमोयक़ीन (भ्रम और अनुमान):—

अक़्ल दौड़ाई बहुत कुछ तो गुमां[1] तक पहुँचे।
कुछ हक़ीक़त[2] भी है इन्सां[3] की, कहाँ तक पहुँचे॥

—बेताब अज़ीमाबादी

किसको मालूम के हम हुस्न शनासाने[4] अज़ल[5]।
कितने औहाम[6] से गुज़रे तो यक़ीं[7] तक पहुँचे॥

—रविश सिद्दिक़ी

रुख़[8] से पर्दे को हटा हुस्ने यक़ीं[9] तक पहुँचा।
आख़िर इन्सान हूँ, यूँ अक़्ल कहाँ तक पहुँचे॥

—बेताब अज़ीमाबादी

मुनासिब हो तो अब पर्दा उठाकर।
हमारा शक[10] बदल डालो यक़ीं से॥

—आज़ाद अन्सारी

वहम[11] को भी तेरा निशां न मिला।
नारसाई[12] सी नारसाई है॥

—फ़ानी

आफ़रीनिश

(निर्माण)

इब्तेदा व इन्तेहा (आदिअन्त): —

आग थे इब्तेदाये इश्क़[13] में हम।
हो गये ख़ाक[14] इन्तेहा[15] ये है॥

—हसरत मुहानी

---

१ अनुमान २ अस्तित्व ३ मनुष्य ४ सौंदर्य-पारखी ५ अनादिकाल ६ भ्रम ७ दृढ़ विश्वास ८ मुख ६ विश्वास के सौंदर्य १० शंका ११ भ्रम १२ असफलता १३ प्रेम के प्रारम्भ १४ धूल १५ अंत।

इब्तेदा[1] वो थी के दुनिया थी मलामतगर[2] मेरी।
इन्तेहा[3] ये है के कोई कुछ नहीं कहता मुझे॥
—आसी उल्दनी

इब्तेदा वो थी के जीने के लिए मरता था।
इन्तेहा ये है के मरने की भी हसरत[4] न रही॥
—माहिरुलक़ादरी

इब्तेदा वो थी के जीना था मुहब्बत में महाल[5]।
इन्तेहा ये है के अब मरना भी मुश्किल हो गया॥
—जिगर मुरादाबादी

सुनी हेकायते-हस्ती[6], तो दरमेयाँ[7] से सुनी।
न इब्तेदा की खबर है न इन्तेहा मालूम॥
—शाद अज़ीमाबादी

इन्सान (मानव):—

मत सेहल[8] हमें जानो, फिरता है फ़लक[9] बरसों।
तब खाक[10] के पर्दे से इन्सान निकलते हैं॥
—मीर

बनाया आदमी को "ज़ौक़" एक जूज़वे[11] ज़ईफ़[12]।
और इस ज़ईफ़ से कुल काम दोजहाँ[13] के लिए॥
—ज़ौक़

फ़ितरते आदम[14] में थी अल्लाह[15] क्या नश्वोनुमा[16]।
एक मुट्ठी खाक[17] यूँ फैली के दुनिया हो गई।
—साकिब लखनवी

---

१ आरंभ २ बुरा कहनेवाली ३ अंत ४ लालसा ५ कठिन ६ जीवन की कहानी ७ बीच ८ आसान ९ आकाश १० धूल ११ अंश १२ दुर्बल १३ सारी सृष्टि १४ मानव-स्वभाव १५ हे प्रभो १६ वृद्धि १७ धूल।

खुदा तो मिलता है, इन्सान ही नहीं मिलता।
ये चीज़ वो है जो देखी कहीं कहीं मैंने॥
—एक़बाल

यूँ अगर देखिए क्या कुछ नहीं ये मुश्ते ग़ुबार[1]।
और अगर सोचिए तो ख़ाक भी इन्सां में नहीं॥
पं० दत्तात्रय कैफ़ी

अपने मरने प भी क़ादिर[2] नहीं जीना कैसा।
रास इन्सान को आया नहीं इन्सां होना॥
—शाकिर मेरठी

'ज़फ़र' आदमी उसको न जानियेगा,
वो हो कैसा ही साहेबेफ़हमोज़का[3]।
जिसे ऐश[4] में यादे खुदा[5] न रही,
जिसे तैश[6] में ख़ौफ़े खुदा[7] न रहा॥
—बहादुरशाह ज़फ़र

दर्दे दिल, पासे वफ़ा, जज़्बये ईमां[8] होना।
आदमीयत[9] है यही और यही इन्सां[10] होना॥
—चकबस्त

क़त्रये तुनुकमाया[11]! बहरे बेकरां[12] है तू।
अपनी इब्तेदा[13] होकर अपनी इन्तेहा[14] हो जा॥
—असग़र गोंडवी

---

१ मुट्ठी-भर धूल २ शक्तिमान ३ समझ-बूझ वाला ४ सुख ५ प्रभु की याद ६ आवेश ७ ईश्वर का भय ८ धर्म की लगन ९ मानवता १० मनुष्य ११ हीन पानी की बूंद १२ निःसीम सागर १३ प्रारम्भ १४ अंत।

अंजाम (परिणाम):—

ग़ज़ब है जुस्तोजूए दिल[1] का ये अंजाम[2] हो जाना।
के मंज़िल दूर हो और रास्ते में शाम हो जाना॥
—शेरी भोपाली

बहार[3] अंजाम समझूँ इस चमन का या खेज़ाँ[4] समझूँ।
ज़ुबाने बर्गे गुल[5] से मुझको क्या ईर्शाद[6] होता है॥
—असग़र गोंडवी

हाले अंजामे इश्क़[7] क्या कहिए।
अब तो हम भी लगे हैं पछताने॥
—फ़िराक़ गोरखपुरी

दुनिया (विश्व):—

हर शाम हुई सुबह को एक ख़ाबे फ़रामोश[8]।
दुनिया यही दुनिया है तो क्या याद रहेगी।
—यगाना चंगेज़ी

सरसरी तुम जहान[9] से गुज़रे।
वरना हरजा[10] जहाने दीगर[11] था॥
—मीर

अए साकिनाने दहर[12]! ये क्या इज़्तेराब[13] है।
ऐसा कहाँ ख़राब जहाने ख़राब[14] है!॥
—फ़िराक गोरखपुरी

---

१ दिल की खोज २ परिणाम ३ वसंत ४ पतझड़ ५ फूल की पंखड़ी ६ आदेश ७ प्रेम के परिणाम की हालत ८ भूला हुआ स्वप्न ९ दुनिया १० हर जगह ११ नई दुनिया १२ दुनिया के बसनेवालो १३ घबराहट १४ बिगड़ी हुई दुनिया।

है ये दुनिया एक ही अफ़सानए नाकामे शौक़[१]।
जिसने जो चाहा अलग तजवीज़ उन्वां[२] कर दिया ॥
—*तिलोकचन्द महरूम*

दुनिया बस इससे और ज़्यादा नहीं है कुछ।
कुछ रोज़ हैं गुज़ारने[३] और कुछ गुज़र गए ॥
—*हकीम अजमल ख़ाँ सैदा*

तू बहुत समझा तो कह गुज़रा[४] फ़रेबे 'रंगोबू'[५]।
ये चमन लेकिन उसीकी जलवागाहे नाज़[६] है ॥
—*असग़र गोंडवी*

बहुत कुछ और भी है इस जहाँ में।
ये दुनिया महज़[७] ग़म[८] ही ग़म नहीं है ॥
—*इसरारुलहक़ मजाज़*

ख़ुदा जाने ये दुनिया जलवागाहे नाज़ है किसकी।
हज़ारों उठ गए लेकिन वही रौनक़[९] है मज्लिस[१०] की ॥
—*अज्ञात*

ये चमन यूँहीं रहेगा और हज़ारों जानवर।
अपनी अपनी बोलियाँ सब बोलकर उड़ जायँगे ॥
—*अज्ञात*

है इस अंजुमन[११] में यकसाँ अदमोवोजूद[१२] मेरा।
के जो मैं यहाँ न होता यही कारोबार होता ॥
—*इस्माईल मेरठी*

---

१ अभिलाषा की असफलता की कहानी २ शीर्षक ३ बिताना ४ कह उठा ५ रूप-सौंदर्य की माया ६ रूप दर्शन का स्थान ७ केवल ८ शोक ९ शोभा १० सभा ११ रंगभूमि १२ होना या न होना ।

जहाँ[1] से तू रखवे ऐक़ामत[2] को बांध।
ये मंज़िल नहीं, बेख़बर! राह है॥

—मीर

दिलनशीं[3] दहर[4] के नक़्शों[5] को न होने दीजिए।
इस ख़याबाँ[6] से गुज़र जाइये दरिया होकर॥

—ज़ाफ़र सहारनपुरी

दुनिया ने किसका राहेफ़ना[7] में दिया है साथ।
तुम भी चले चलो यूँहीं जबतक चली चले॥

—ज़ौक़

समझता हूँ के दुनिया में हमेशा रंज सहना है।
मगर फिर क्या करूँ "आसी" इसी दुनिया में रहना है॥

—आसी उल्दनी

समझ तो ली है दुनिया की हक़ीक़त[8]।
मगर अब अपना दिल बहला रहा हूँ॥

—आसी उल्दनी

अच्छा हुआ के छूटी ख़ुद मुझसे फ़िक्रे दुनिया[9]।
जितना ख़याल करते उतना मलाल[10] होता॥

—आसी उल्दनी

न थी ख़राबए दुनिया[11] में इतनी वुसअत[12] भी।
के बैठकर किसी गोशे[13] में रो लिया करते॥

—आसी उल्दनी

---

१ दुनिया २ स्थापना की सामग्री ३ हृदयंगम ४ संसार ५ चित्रों ६ फुलवारी ७ मृत्यु-मार्ग ८ रहस्य ९ सांसारिक चिंता १० दुःख ११ उजड़ा हुआ संसार १२ विशालता १३ कोने में।

मरने की दुआएँ[1] क्यूँ माँगूँ, जीने की तमन्ना[2] कौन करे।
ये दुनिया हो या वो दुनिया, अब ख़्वाहिशे[3] दुनिया कौन करे॥
—मोईन अहसन जज़्बी

क्या हूँ मैं :—

इसी तलाशो तजस्सुस[4] में खो गया हूँ मैं।
अगर नहीं हूँ तो क्यूँ कर, जो हूँ तो क्या हूँ मैं ?
—जिगर मुरादाबादी

न इब्तेदा[5] की खबर है न इन्तेहा[6] मालूम।
रहा ये वहम[7] के हम हैं, सो वो भी क्या मालूम !
—फ़ानी

हज़ार हैफ़[8] ! कुछ अपनी हमें खबर न हुई।
तमाम उम्र[9] लगी, पर मोहिम[10] ये सर न हुई॥
—मीर हसन

ख़ुदा ही जाने 'यगाना' मैं कौन हूँ, क्या हूँ।
ख़ुद अपनी ज़ात[11] प शक[12] दिल में आये हैं क्या क्या॥
—यगाना चंगेज़ी

तेरा जमाल[13] है, तेरा ख़याल[14] है, तू है।
मुझे ये फ़ुर्सते काविश[15] कहाँ के क्या हूँ मैं॥
—असग़र गोंडवी

---

१ वरदान २ अभिलाषा ३ इच्छा ४ खोज-ढूंढ़ ५ आदि ६ अन्त ७ भ्रम ८ बहुत अफ़सोस ९ सारा जीवन १० कठिन कार्य ११ अपने पर १२ शंका १३ सौंदर्य १४ कल्पना १५ खोज का अवकाश।

हस्ती व नेस्ती (अस्तित्व और निरस्तित्व):—

न कुछ फ़ना[1] की खबर है न है बक़ा[2] मालूम।
बस एक बेखबरी[3] है, सो वो भी क्या मालूम!

—*असग़र गोंडवी*

हाँ खाइयो मत फ़रेबे[4] हस्ती।
हरचन्द कहें के है, नहीं है॥

—*ग़ालिब*

जहाँ[5] अफ़सानए हस्ती में है उलझा हुआ "अख्तर"।
हक़ीक़त[6] पर्दए असरार[7] में गुम होती जाती है॥

—*अली अख़्तर "अख़्तर"*

हस्ती[8] के मत फ़रेब[9] में आ जाइयो "असद"।
आलम तमाम हल्क़ये दामे खयाल है[10]॥

—*ग़ालिब*

हयाते बेखुदी[11] कुछ ऐसी नामहसूस[12] थी "नातिक़"।
अजल[13] आई तो मुझको अपनी हस्ती का यक़ीं[14] आया॥

—*नातिक़ लखनवी*

मक़ाम[15] और भी हैं दानिश आज़मा,[16] लेकिन।
तलिस्मे हस्तिए फ़ानी! तेरा जवाब नहीं[17]॥

—*अली अख़्तर "अख़्तर"*

---

१ विनाश २ अस्तित्व ३ अज्ञानता ४ धोखा ५ संसार ६ असलियत ७ भेदों का पर्दा ८ अस्तित्व ९ धोखा १० सारा संसार कल्पना के मायाजाल का फंदा है। ११ तन्मयता का जीवन १२ अनुभूत न होनेवाली १३ मृत्यु १४ विश्वास हुआ १५ स्थान १६ बुद्धि परीक्षक १७ ऐ मिट जानेवाले जीवन के मायाजाल! तेरा जवाब नहीं।

नशेबोफ़राज़ (ऊँच-नीच) :—

बलंद[1] हो तो खुले तुझ प ज़ोर[2] पस्ती[3] का।
बड़े बड़ों के क़दम डगमगाए हैं क्या क्या॥

—*यगाना चंगेज़ी*

वो क्या समझ सकेंगे नशेबोफ़राज़े दह्र[4]।
जो चल रहे हैं राह को हमवार[5] देखकर।

—*साक़िब लखनवी*

पहाड़ काटनेवाले ज़मीं से हार गए।
इसी ज़मीन में दरिया समाये हैं क्या क्या॥

—*यगाना चंगेज़ी*

पुतलों से ख़ाक[6] के ये गड्हे भर चुकें कहाँ।
धब्बा मिटे ज़मीं के नशेबोफ़राज़[7] का॥

—*आतिश*

जो रहे-इश्क़[8] में क़दम रक्खें।
वो नशेबोफ़राज़ क्या जानें॥ —*दाग़*

अवामिरो नवाहि
(आदेश-निषेध)

सज़ा वो जज़ा
(दण्ड और प्रतिदान)

वन्दगी (भक्ति) :—

यही है ज़िन्दगी अपनी, यही है बन्दगी अपनी।
के उनका नाम आया, और गर्दन झुक गई अपनी॥

—*माहिरुलक़ादरी*

---

१ ऊँचा २ शक्ति ३ निम्नता ४ संसार का ऊँच-नीच ५ सरल ६ मिट्टी के पुतलों से ७ ऊँच-नीच ८ प्रेम-मार्ग।

न बुतखाने[1] को जाते हैं न काबे में भटकते हैं।
जहाँ तुम पाँव रखते हो, वहाँ हम सर पटकते हैं॥

—इश्क़ अज़ीमाबादी

बन्दा परवर[2] ! मैं वो बन्दा[3] हूँ, के बहरे बन्दगी[4]।
जिसके आगे सर झुका दूँगा, खुदा हो जायगा॥

—आज़ाद अंसारी

अपनी हम बन्दगी पे भूले थे।
फिर जो देखा तो वाँ खुदाई है॥

—मुश्ताक़

पारसाई (सदाचार):—

पूछती है वो नर्गिसे मख़मूर[5]।
किसको दावा है पारसाई[6] का॥

—अज्ञात

दिखाऊँगा तुझे ज़ाहिद[7], उस आफ़तदीं[8] को।
ख़लल[9] दिमाग़ में है तेरे पारसाई का॥

—सौदा

पारसाई और जवानी क्यूं के हो।
एक जागह आग पानी क्यूं के हो॥

—एकरंग

"हसन" गर पारसा हूँ मैं तो नाचारी से हूँ वरना।
नज़र है जाम[10] पर मेरी सदा और दिल है शीशे[11] में॥

—मीर हसन

---

१. मंदिर २. दीनवन्धु ३. भक्त ४. भक्ति के लिए ५. नर्गिसी मतवाले, नयन ६. सदाचार ७. भक्त ८. धर्म की विपत्ति ९. उन्माद १०. शराब का प्याला ११. सुराही जिसमें शराब रक्खी जाती है।

हो गए नामे बुतां[१] सुनते ही "मोमिन" बेक़रार[२] ।
हम न कहते थे के हज़रत[३] पारसा[४] कहने को हैं ॥

—मोमिन

जब देखिए तो है मयो[५] माशूक़[६] पर निगाह[७] ।
वाईहमा[८] "रेयाज़" बड़े पारसा भी हैं ॥

—रेयाज़ ख़ैराबादी

हज़रते "आज़ाद" आप और इत्तक़ा[९] ।
काश ! ज़ाहिर हो के ये क्या राज़[१०] है ॥

—आज़ाद अंसारी

मयो मीना[११] से यारियाँ न गईं ।
मेरी परहेज़गारियां न गईं ॥

—हसरत मुहानी

बड़े पाक बातिन[१२] बड़े साफ़ तीनत[१३] ।
"रेयाज़" आपको कुछ हमीं जानते हैं ॥

—रेयाज़ ख़ैराबादी

पारसाई की जवाँमर्गी[१४] न पूछ ।
तौबा[१५] करनी थी के बदली छा गई ॥

—अख़्तर शीरानी

न मिला कोई ग़ारते ईमां[१६] ।
रहगई शर्म पारसाई की ॥

—हाली

---

१ प्रेयसियों के नाम २ बेचैन ३ श्रीमान् ४ सदाचारी ५ मदिरा ६ प्रेयसी ७ नज़र ८ इन सबके साथ-साथ, ९ आत्म नियन्त्रण १० भेद ११ शराब की सुराही १२ अंत्र १३ प्रकृति १४ अकाल मृत्यु १५ न करने की प्रतिज्ञा १६ धर्म को बर्बाद करने वाला

शब[1] को मय[2] ख़ूब सी पी सुबह को तौबा करली।
रिंद[3] के रिंद रहे हाथ से जन्नत[4] न गई॥

—ज़ामिन अली जलाल

हुस्ने अमल (सुन्दर कार्य) :—

मिस्ले[5] नगीं जो हम से हुआ काम, रह गया।
हम रुस्याह[6] जाते रहे नाम रह गया॥

—मीर दर्द

क्या पूछना है उनका हसीनों[7] प जो मिटे[8]।
क्या कहना जिनके साथ ये हुस्ने अमल गया॥

—डा० मुबारक अज़ीमाबादी

जज़ा (प्रतिदान) :—

सौदागरी नहीं ये एबादत[9] ख़ुदा की है।
ऐ बेख़बर जज़ा की तमन्ना[10] भी छोड़ दे॥

—एक़बाल

जन्नत (स्वर्ग) :—

सुनते हैं जो बहिश्त[11] की तारीफ़ सब दुरुस्त[12]।
लेकिन ख़ुदा करे वो तेरी जलवागाह[13] हो॥

—ग़ालिब

जन्नत को उनके हुस्न[14] से पहचानता हूँ मैं।
जन्नत है उनकी सूरतेज़ेबा[15] मेरे लिए॥

—आबिद लाहौरी

---

१ रात २ शराब, ३ शराबी ४ स्वर्ग ५ अँगूठी के नगीने के समान ६ कलंकी ७ सुन्दर ८ जान दी ९ ईश्वर की आराधना १० अभिलाषा ११ स्वर्ग १२ ठीक १३ रूप दर्शन का स्थान १४ सौंदर्य १५ सुन्दर रूप।

ये जन्नत मुबारक रहे ज़ाहिदों को।
के मैं आपका सामना चाहता हूँ॥

—एक़बाल

जाय है जी नेजात[१] के ग़म में।
ऐसी जन्नत गई जहन्नम में॥

—मीर

जन्नतो जहन्नम (स्वर्ग और नरक) :—

तेरा मिलना, तेरा नहीं मिलना।
और जन्नत है क्या? जहन्नम क्या?॥

—जिगर मुरादाबादी

मुझे वाएज़[२] की जन्नत की हक़ीक़त, आग की धमकी।
किसी काफ़िरअदा[३] की हाँ, नहीं, मालूम होती है॥

—अज़ीम अज़ीमाबादी

रहमत :—

यारब तेरी रहमत से मायूस[४] नहीं "फ़ानी"।
लेकिन तेरी रहमत की ताख़ीर[५] को क्या कहिए॥

—फ़ानी

बैठे बैठे आया है मुझे[६]गुनाहों का ख़याल।
आज शायद तेरी रहमत[७] ने किया याद मुझे॥

—एहसान दानिश

---

१ निर्वाण २ धार्मिक बातों का उपदेश देनेवाला ३ धर्म को नष्ट करनेवाली भावभङ्गिमा ४ निराश ५ विलम्ब ६ पापों ७ कृपा।

सज़ा (दण्ड) :—

सौ जान से हो जाऊँगा राज़ी मैं सज़ा पर।
पहले वो मुझे अपना गुनहगार[१] तो कर लें ! ॥

—*अकबर इलाहाबादी*

ऐ हुस्न ! जो सज़ाए तमन्ना[२] हो वो क़बूल[३]।
लेकिन मेरी नज़र को फिर एक बार देख कर ॥

—*दिल शाहजहाँपुरी*

सज़ाएँ तो हर हाल में लाज़मी[४] थीं।
ख़ताएँ[५] न करके पशेमानियाँ[६] हैं ॥

—*आज़ाद अंसारी*

मुझको शिकायते सितमे नारवा[७] नहीं।
दिल की सज़ा यही है, तुम्हारी ख़ता[८] नहीं ॥

—*फ़ानी*

मेरे शौक़े सज़ा[९] का ख़ौफ़नाक[१०] आग़ाज़[११] तो देखो।
किसी का जुर्म[१२] हो अपनी ख़ता मालूम होती है ॥

—*आज़ाद अन्सारी*

अता (पुरस्कार) :—

देने वाले तुझे देना है तो इतना दे दे।
के मुझे शिकवए[१३] कोताहिए-दामां[१४] हो जाये ॥

—*बेदम वारसी*

---

१ दोषी २ अभिलाषा के लिए दण्ड ३ स्वीकार ४ आवश्यक ५ भूल ६ पछतावा ७ अनुचित अनर्थ ८ दोष ९ दण्ड की अभिलाषा १० भयानक ११ आरम्भ १२ दोष १३ शिकायत १४ दामन के छोटे होने की।

निगाहे लुत्फ़ो एनायत[१] से फैज़-याब[२] किया।
मुझे हुज़ूर ने ज़र्रे[३] से आफ़ताब[४] किया।

—जलील मानिकपुरी

ग़लत हो जाते हैं[५] सब रंजोग़म[६] ऐसा भी होता है।
कभी उस[७] बुत का अन्दाज़े करम[८] ऐसा भी होता है॥

—मज़्तर मुज़फ़्फ़रपुरी

क़यामत (महा प्रलय):—

क़यामत भी होगी तो मेरी बला से।
मुझे दादख़ाही[९] की ताक़त[१०] कहाँ है॥

—मोहम्मद यार ख़ाकसर

उठा हूँ ख़ौफ़ज़दा[११] में लेहद[१२] से क़ब्ल अज़वक़्त[१३]।
के सब से पहले मेरी हश्र[१४] में पुकार न हो॥

—रेयाज़ ख़ैराबादी

क्या जानिए के हश्र[१५] हो, क्या सुबहे हश्र[१६] का।
बेदार[१७] तेरे देखने वाले हुए तो हैं॥

—फ़ानी बदायूनी

सुनता हूँ के हंगामए[१८] दीदार[१९] भी होगा।
एक और क़यामत है ये बालाये क़यामत[२०]॥

—फ़ानी

---

१ दयादृष्टि २ लाभान्वित ३ कण ४ सूर्य ५ मिट जाते हैं ६ दुःख, शोक ७ प्रेयसी का ८ दया का भाव ९ न्याय-याचना १० शक्ति ११ भयभीत १२ समाधि १३ समय से पहले १४ प्रलय १५ परिणाम १६ प्रलय के प्रभात १७ जाग्रत १८ भीड़भाड़ १९ दर्शन २० ऊपर।

हश्र की धूम है सब कहते हैं यूँहै, यूँहै।
फ़ितना[1] है एक तेरी ठोकर का मगर कुछ भी नहीं॥

—मोहम्मद अली तिश्ना

एक मैदाने क़यामत ही प मौक़ूफ़[2] नहीं।
तुम क़दम रखते जहाँ पर वहीं महशर[3] होता॥

—बेताब अज़ीमाबादी

गुनाहो ख़ता (पाप और अपराध):—

बेख़बर! [4]दिलकशीए दहर को इल्ज़ाम[5] न दे।
तेरी फ़ितरत[6] ने सिखाया तुझे इसयां[7] करना॥

—आरसी उल्दनी

तेरी हज़ार बर्तरी[8] तेरी हज़ार मस्लेहत[9]।
मेरी हरेक शिकस्त[10] में मेरे हरेक क़ुसूर[11] में॥

—असग़र गोंडवी

नाकर्दा[12] गुनाहों की भी हसरत[13] की मिले दाद[14]।
यारब[15]! अगर इन करदा[16] गुनाहों की सज़ा है॥

—ग़ालिब

मेरी ख़ता प आप को लाज़िम[17] नहीं नज़र।
ये देखिए मुनासिबे शाने[18] अता है क्या॥

—हसरत मुहानी

---

१ लीला २ निर्भर ३ प्रलय ४ जगत की मनमोहकता ५ दोष ६ स्वभाव ७ पाप ८ बड़ाई ९ नीति १० हार ११ दोष १२ नहीं किये हुए पाप १३ अभिलाषा १४ प्रशंसा १५ हे प्रभु १६ किये हुए १७ मुनासिब १८ पुरस्कार की शान।

तेरी एक एक अदा[१] पहचानी ।
अपनी एक एक ख़ता मान गए ॥

—ज़हरा निगाह

गुनाहगार (पापी)—

गुनाहगार की हालत[२] है रहम[३] के क़ाबिल ।
ग़रीब[४] कशमकशे[५] जब्रो एख़्तियार[६] में है ॥

—फ़ानी

जो ठोकर ही नहीं खाते वो सबकुछ हैं, मगर वाएज़ ।
वो, जिनको दस्ते रहमत[७] ख़ुद सम्हाले, और होते हैं ॥

—पं० हरिचंद अख़्तर

ग़ैरत[८] से रंगे नामए[९] आमाल[१०] उड़ न जाए ।
कैफ़ीयते[११] निगाहे गुनहगार देखकर ॥

—यगाना चंगेज़ी

वो है मोख़्तार[१२] सज़ा दे के जज़ा[१३] दे "फ़ानी" ।
दो घड़ी होश में आने के गुनहगार हैं हम ॥

—फ़ानी

बात क्या चाहिए जब मुफ़्त की हुज्जत[१४] ठहरी ।
इस गुनह पर मुझे मारा, के गुनहगार न था ॥

—दाग़

---

१ हावभाव २ दशा ३ दयनीय ४ बेचारा ५ खींचतान ६ विवशता-अधिकार ७ प्रभु के दया के हाथ ८ लज्जा ९ लेख १० कार्य ११ दशा १२ अधिकारी १३ इनाम १४ विवाद ।

"तलाशो जुस्तजू"

खोज-ढूँढ़
(अन्वेषण)

आबलएपा (पाँव के छाले)—

शिकवये[1] आबला[2] अभी से "मीर"।
है प्यारे हनोज़[3] दिल्ली दूर॥

—मीर

तड़प के आबलेय-पा उठ खड़े हुए आख़िर।
तलाशे-यार[4] में जब कोई कारवाँ[5] निकला॥

—यगाना चंगेज़ी

दुआ[6] देती हैं राहें[7] आज तक मुझ आबलापा[8] को।
मेरे क़दमों[9] की गुलकारी[10] बयाबां[11] से चमन तक है॥

—मजरुह सुलतानपुरी

ये सोहबतें[12] भी देखिए लाती हैं रंग क्या।
मेहमाने ख़ार[13] पाँव के छाले हुए तो हैं॥

—फ़ानी

बेदर्दी[14] से तय कीजो न राहे तलबे यार[15]।
हाँ टूटने पाये न कोई पाँव का छाला॥

—रासिख़ अज़ीमाबादी

---

१ निंदा २ छालोंकी ३ अभी ४ मित्र की खोज ५ यात्री-दल ६ आशिष ७ मार्ग ८ पाँव में छाले रखने वाले ९ पाँव १० चित्रकारी ११ जंगल १२ सम्पर्क १३ काँटों के मेहमान १४ कठोरता १५ मित्र की खोज

बगूला :—

जिनको हम समझा किये अबरे बहार[१] ।
वो बगूले कितने गुलशन[२] खा गये ॥

—अहमद नदीम क़ासमी

हर चन्द बगूला मुज़्तर[३] है, एक जोश तो इसके अन्दर है।
एक वज्द[४] तो है, एक रक़्स[५] तो है, बेचैन सही बर्बाद सही ॥

—अकबर इलाहाबादी

जुस्तोजू (खोज) :—

कहाँ कहाँ दिले मुश्ताक़े[६] दीद ने न कहा।
वो चमकी बर्क़े-तजल्ली[७], वो कोहेतूर[८] आया ॥

—दाग़

उसे ढूंढ़ते मीर खोए गए।
कोई देखे इस जुस्तोजू की तरफ़ ॥

—मीर

दिल को होना था जुस्तोजू में ख़राब।
पास थी वरना मंज़िले मक़सूद[९]

—मोइन अहसन जज़्बी

भटकती हैं नज़रें मेरी हर तरफ़।
ख़ुदा जाने किस भेस में तू मिले ॥

—अफ़सर मेरठी

---

१ वसन्त के बादल २ उपवन ३ बेचैन ४ उन्मत्तता ५ नृत्य ६ दर्शनाभिलाषी ७ दर्शन के चमक की बिजली ८ तूर नामक पहाड़ जसपर ईश्वर ने मूसा पैग़म्बर को दर्शन दिया था ९ लक्ष्य ।

सरहदे अक़्ल[1] से परे रिफ़अते अर्श से बलन्द।
जाने कहाँ निकल गया मैं तुझे ढूंढ़ता हुआ॥
—*असर सहबाई*

हमें ख़ुदा के सिवा[2] कुछ नज़र नहीं आता।
निकल गए हैं बहुत दूर, जुस्तोजू से हम॥
—*रैयाज़ ख़ैराबादी*

अपनी ही ख़बर नहीं है हमको।
बेकार किसी की जुस्तोजू है॥
—*जगमोहन नाथ रैना शौक़*

जाके शायद पलट आता हूँ, के मंज़िल के क़रीब[3]।
नज़र आता है मुझे नक़्शे कफ़ेपा[4] अपना॥
—*फ़ानी*

पहले हस्ती[5] कि जुस्तोजू है ज़रूर।
फिर जो गुम हो तो जुस्तोजू न करे॥
—*असग़र गोंडवी*

हसरते ना-काम[6] मेरी, काम से ग़ाफ़िल[7] नहीं।
एक तरीक़े[8] जुस्तोजू ये दर्दे-महजूरी[9] भी है॥
—*असग़र गोंडवी*

---

१ बुद्धि की सीमाओं से कहीं आगे, आकाश की ऊँचाइयों से कहीं ऊँचा
२ अतिरिक्त, ३ निकट, ४ पद चिह्न, ५ अस्तित्व, ६ अपूर्ण कामनायें,
७ असावधान ८ ढंग ९ दूरी की पीड़ा।

अदम[1] से जानिबे हस्ती[2] तलाशे यार[3] में आए ।।
हवाये गुल[4] में हम किस वादिए पुरख़ार[5] में आए ।।

—आतिश

हौसला[6] ये है के हम ढूँढ़ निकालेंगे उन्हें ।
और मालूम हमें नामो निशां कुछ भी नहीं ।।

—शम्स अज़ीमाबादी

उठाए जाके कहाँ लुत्फ़े जुस्तोजू[7] कोई ।
जगह वो कौन सी है, तू जहाँ नहीं होता ।।

—अज़ीज़ लखनवी

शर्त उनकी जुस्तोजू थी, न पाया, नहीं सही ।
ये तो नहीं हुआ के हम अरमां[8] न कर सके ।।

—नातिक़ गलाओंठवी

कल तक उसकी तालाश थी लेकिन ।
आज है अपनी जुस्तोजू मुझको ।।

—दाग़

जरस (शंख) :—

थी किसी दरमन्दा रहरौ[9] की सदाय दर्दनाक[10] ।
जिसको आवाज़े रहीले कारवाँ[11] समझा था मैं ।।

—एक़बाल

---

१ अनस्तित्व २ विश्व की ओर, ३ मित्र की खोज, ४ पुष्प की अभिलाषा, ५ कांटों से भरा मैदान ६ सोत्साह कामना ७ खोज का आनन्द ८ कामना ९ श्रांत पथिक १० दुख भरी आवाज़ ११ यात्री-दल की शंखनाद ।

आती है सदाये जरसे[1] नाक़ए लैला[2]।
सद हेफ़[3] ! के मजनूं का क़दम उठ नहीं सकता ॥

—ज़ौक़

एक दिन तुझसे सुलग उठते न देखा कारवाँ।
ऐ जरस ! हासिल[4] कुछ इस फ़रयादे[5] बेतासीर[6] का ॥

—सौदा

याराने तेज़गाम[7] ने महमिल[8] को जा लिया।
[9]हम महवे नालए जरसे कारवाँ रहे ॥

—अज्ञात

खार (काँटा) :—

सुर्ख़िए ख़ारे बयाबाँ[10] ये निशां[11] देती है।
के यहाँ से तेरे दीवाने यहाँ तक पहुँचे ॥

—बेताब अज़ीमाबादी

फिर बहार[12] आइ वही दश्त न वर्दी[13] होगी।
फिर वहीं पाँव, वही[14] ख़ारे मोग़ीलां होंगें ॥

—मोमिन

गुलशन परस्त[15] हूँ मुझे गुल[16] ही नहीं अज़ीज़[17]।
काँटों से भी निबाह किए जा रहा हूँ मैं ॥

—जिगर मुरादाबादी,

---

१ शंखनाद २ लैला की ऊँटनी ३ हन्त ४ लाभ ५ पुकार ६ व्यर्थ ७ तेज़ चलनेवाले मित्रों ने ८ ऊँट पर कसने का कजावा, जिसमें पर्दा डाल कर स्त्रियाँ बैठती हें ९ हम यात्री-दल के शंखनाद में लीन रहे १० जंगल के काँटों की लाली ११ पता १२ बसंत १३ जंगल में फिरना १४ बबूल के काँटे १५ उपवन का पुजारी १६ फूल १७ प्यारा।

दुआएँ[१] दे मेरे बाद आनेवाले, मेरी वहशत[२] को।
बहुत काँटे निकल आए, मेरे हमराह[३] मंज़िल से॥

—साक़िब-लखनवी

काँटों का भी कुछ हक़ है आख़िर।
कौन छुड़ाए दामन[४] अपना॥

—जिगर मुरादाबादी

राह व राहबर (पथ और पथ प्रदर्शक):—

एलाही[५]! राहे-मुहब्बत[६] को तय करें क्यों कर।
ये रास्ता तो मुसाफ़िर के साथ चलता है॥

—अहमद सहारनपुरी

मंज़िल की जुस्तोजू[७] से पहले किसे ख़बर थी।
रस्तों के पेंच होंगे और रहनुमा[८] न होगा॥

—आज़ाद अंसारी

ठहरा गया है ला के जो मंज़िल में इश्क़ की।
क्या जाने रहनुमा[९] था, के रहज़न[१०] था, कौन था॥

—आग़ाहज्जो शरफ़

चलता हूँ थोड़ी दूर हरेक राहरौ[११] के साथ।
पहचानता नहीं हूँ अभी राहबर को मैं॥

—ग़ालिब

---

१ आशीर्वाद २ उन्माद ३ साथ ४ कुर्ते आदि के नीचे का हिस्सा (अंचल) ५ हे प्रभु! ६ प्रेम मार्ग ७ खोज ८ पथ प्रदर्शक ९ मार्ग दर्शक १० लुटेरा ११ यात्री।

गदा नवाज़[1] कोई शाह सवार राह में है।
बलन्द[2] आज नेहायत[3] गुबार[4] राह में है॥

—आतिश

रहे गुर्बत[5] में अपना ज़ोर पाए नातवाँ[6] तक है।
मगर इकसा भरोसा क्या है ये भी है जहाँ तक है॥

—नातिक़ गला ओंठवी

सफ़र (यात्रा)—

सफ़र ज़रूर है और उज्र[7] की मजाल[8] नहीं।
मज़ा तो ये है, न मंज़िल न रास्ता मालूम॥

—शाद अज़ीमाबादी

ये तूले[9] सफ़र, ये नशेबो[10] फ़राज़।
मुसाफ़िर कहाँतक सम्हलता रहे॥

—अर्श-मल सियानी

सफ़र है शर्त मुसाफ़िर[11] नवाज़ वह तेरे।
हज़ारहा[12] शजरे[13] सायदार[14] राह में है॥

—आतिश

दरो[15] दीवार पे हसरत[16] से नज़र[17] करते हैं।
ख़ुश रहो अहले वतन[18] हम तो सफ़र करते हैं॥

—वाजिद अली शाह अख्तर

---

१ भिक्षुक पर दया करने वाला २ ऊँचा ३ बहुत ४ धूल ५ यात्रा के मार्ग पर ६ दुर्बल पांव ७ आपत्ति ८ शक्ति ९ यात्रा की दूरी १० ऊँच नीच ११ मुसाफ़िर पर दया करनेवाले १२ हज़ारों १३ वृक्ष १४ छायावाले १५ द्वार १६ दुःख १७ देखते हैं १८ देश वासियों।

ग़ुबारे राह (राह की धूल)—

गर ख़ाक[१] ही होना था मुझको तो ख़ाके रहे सेहरा[२] होता।
एक कोशिशे[३] पैहम तो होती, उठता होता, गिरता होता ॥
—*जमील मज़हरी*

हुए हैं ख़ाके सरेरह[४] उसके हम "इनशा"।
बड़ा ग़ज़ब है जो ये भी फ़लक[५] न देख सके ॥
—*इनशा*

क़ाफ़ले[६] या मिट गए या बढ़ गए।
अब ग़ुबारे राह[७] भी उठता नहीं ॥
—*फ़िराक़ गोरखपुरी*

क़ुर्बो दूरी (सामीप्य तथा दूरी)—

दिल ही में नहीं रहते, आँखों में भी रहते हो।
तुम दूर भी रहते हो तो दूर नहीं होते ॥
—*फ़ानी*

मेरी महरूमी[८] की राहों से यह दी उसने सदा[९]।
क़ुर्ब[१०] की राहों में मेरी राह एक दूरी भी है ॥
—*असग़र गोंडवी*

जिन्हें हासिल[११] है तेरा क़ुर्ब ख़ुश क़िस्मत[१२] सही लेकिन।
तेरी हसरत[१३] प मर जाने वाले और होते हैं ॥
—*हरिचन्द अख़्तर*

---

१ धूल २ जंगल की राह की धूल ३ अनवरत चेष्टा ४ राह की धूल ५ आकाश ६ यात्रीदल ७ राह की धूल ८ निराशा ९ आवाज़ १० सामीप्य ११ प्राप्त १२ भाग्यवान १३ कामना।

कारवाँ (यात्रीदल) :—

झपक रही हैं ज़मानों[1] ज़मीन की आँखें।
मगर है क़ाफ़ला[2] आमादए[3] सफ़र फिर भी ॥

—फ़िराक़ गोरखपुरी

हज़ार गर्दिशें[4] शामो सेहर से गुज़रे हैं।
वो क़ाफ़ले जो तेरी रहगुज़र[5] से गुज़रे हैं ॥

—सूफ़ी तबस्सुम

सफ़र करते हुए मंज़िल ब मंज़िल जा रहे हैं हम।
मुझे ये सारी दुनियाँ कारवाँ मालूम होती है ॥

—तिलोक चन्द महरुम

अंधेरी रात थकी हिम्मतें[6] गिरां[7] मंज़िल।
सलामती[8] की दुआ[9] मांग कारवाँ के लिए ॥

—नेहाल सेवहारवी

मैं अकेला ही चला था जानिबे[10] मंज़िल मगर।
लोग साथ आते गए और कारवाँ बनता गया ॥

—मजरुह सुल्तान पुरी

न परवा की हमारी कारवाँ ने जब तो फिर हम भी।
बिछड़ कर कारवाँ से क्यूं तलाशे कारवाँ करते ॥

—वहशत कलकत्तवी

---

१ विश्व २ यात्रीदल ३ यात्रा के लिए उद्यत ४ दिन रात का चक्कर ५ गली ६ साहस ७ कड़ी ८ सुरक्षा ९ प्रार्थना कर १० लक्ष्य की ओर।

गुमरही (पथभ्रष्टता) ।—

जमील को गुमरही मुबारक के अब तो सामान भी वही है।
जो दिल की वहशत[१] का है तक़ाज़ा[२] ख़ेरद[३] का मैलान[४] भी वही है ।।

—जमील मज़हरी

तनहा[५] उठालूँ मैं भी ज़रा लुत्फ़े[६] गुमरही।
ऐ रहनुमा[७] ! मुझे मेरी क़िस्मत[८] प छोड़ दे ।।

—हुमायूँशाह

मुसाफ़िर :—

मुसाफ़िरे[९] रहे ना आशनाए मंज़िल हैं।
मिसाले रेगे रवाँ[१०] जायेंगे कहाँ देखें ।।

—दोस्त अली ख़लील

ह रूह[११] तारीकियों[१२] में हेरां[१३] बुझा हुआ है चिराग़े मंज़िल[१४]।
कहीं सरे राह[१५] ये मुसाफ़िर पटक न दे बोझ ज़िन्दगी का ।।

—जमील मज़हरी

न पूछो कौन हैं, क्यूँ राह में नाचार बैठे हैं।
मुसाफ़िर हैं, सफ़र करने की हिम्मत हार बैठे हैं ।।

—आज़ाद अंसारी

न कोई सहारा न कोई ठिकाना।
चले जा रहे हैं चले जाने वाले ।।

—फ़िराक़ गोरखपुरी

---

१ उन्माद २ मांग ३ बुद्धि ४ इच्छा ५ अकेला ६ आनन्द ७ पथ-प्रदर्शक ८ भाग्य ९ लक्ष्य का मार्ग न जाननेवाला १० उड़ती हुई रेत के समान ११ आत्मा १२ अन्धकार १३ घबराई हुई १४ मंज़िल का दीप १५ रास्ते ही में।

मंज़िल (लक्ष्य) :—

नहीं मुझे [1]जुस्तोजूए मंज़िल के ख़ुद है मंज़िल मेरी तलब में।
कोई तो मुझको बुला रहा है, किसी तरफ़[2] को तो जा रहा हूँ ॥

—वहशत कलकतवी

मंज़िले मक़सूद[3] तक पहुँचे बड़ी मुश्किल से हम।
ज़ोफ़[4] ने अकसर[5] बिठाया, शौक़[6] अकसर ले चला ॥

—दाग़

गिरा पड़ता हूँ क्यूँ हर हर क़दम पर।
इलाही[7]! आ गई क्या पास[8] मंज़िल ॥

—जज़बी

जहाँ प चाके गरीबां[9] भी चाके दिल[10] बन जाय।
गुज़र रहे हैं अब उन मंज़िलों से दीवाने ॥

—एक़बाल सफ़ीपुरी

फिर मैं आया हूँ तेरे पास ऐ अमीरे कारवाँ[11]।
छोड़ आया था जहाँ तू, वो मेरी मंज़िल न थी ॥

—सीमाब अकबराबादी

फ़रेब[12] खाता है हर हर क़दम पे मंज़िल का।
वो क्या करे के न देखा हो जिसने मंज़िल को ॥

—वहशत कलकतवी

---

१ लक्ष्य की खोज २ ओर ३ लक्ष्य की चरम सीमा ४ दुर्बलता ५ अधिकतर ६ अभिलाषा ७ हे प्रभु ८ निकट ९ कुर्ते का टुकड़ा १० हृदय का टुकड़ा ११ यात्री दल का सरदार १२ धोखा।

मंज़िले इश्क़[१] तक न पहुँचा, आह !
मैं तो चलते ही चलते हार गया ।।

—बशीर अली अफ़सोस

तेरी मंज़िल पे पहुँचना कोई आसान न था ।
सरहदे[२] अक़्ल से गुज़रे तो यहाँ तक पहुँचे ।।

—हफ़ीज़ होशियारपुरी

पहुँचा कोई काबे से कोई दैर[३] से पहुँचा ।
थी जिस पे तेरी मेहर[४] वही ख़ैर[५] से पहुँचा ।।

—जुनूँ अज़ीमाबादी

हम थक के गिरे, गिर के उठे, उठ के चले भी ।
तुझ पर असर[६] ऐ दूरिए मंज़िल[७] नहीं होता ।।

—रेयाज़ ख़ैराबादी

मंज़िलें गर्द[८] के मानिन्द[९] उड़ी जाती हैं ।
वही अन्दाज़े[१०] जहाने गुज़राँ[११] है के जो था ।।

—फ़िराक़ गोरखपुरी

कटते भी चलो, बढ़ते भी चलो, बाज़ू[१२] भी बहुत हैं सर भी बहुत ।
चलते भी चलो के अब डेरे मंज़िल ही पे डाले जाएंगे ।।

—फ़ैज़ अहमद फ़ैज़

---

१ प्रेम की मंज़िल २ सीमा ३ मंदिर ४ दया ५ सुरक्षित रूप से ६ प्रभाव ७ मंज़िल की दूरी ८ धूल ९ समान १० रीति ११ प्रगतिशील संसार १२ भुजाएँ

"हुस्न"

(सौंदर्य)

बेदादे हुस्न (सौन्दर्य का अनर्थ) :—

न ख़ौफ़े[1] आह बुतों[2] को न डर है नालों[3] का,
बड़ा कलेजा है इन दिल दुखाने वालों का ॥

—ज़ामिन अली जलाल

किया जो तुमने अपने दिल से पूछो।
हमारा एतबार[4] आए न आए ॥

—अली सिकंदरवज्द

जी भी नहीं देते, मरने भी नहीं देते।
क्या तुमने मुहब्बत की हर रस्म[5] उठा डाली ॥

—फ़ानी

है क़लमरौ[6] में हुस्न के सब कुछ।
एक नहीं है सो दादरस[7] इसमें ॥

—ज़ियाउद्दीन ज़िया

सर झुकाकर चलनेवाले साथ लाशे[8] के मेरे।
ग़ौर[9] करता चल ज़रा इस पर, ये मुझको क्या हुआ।

—अज़ीज़ लखनवी

नहो लुत्फ़,[10] बेदाद[11] भी कम नहीं।
सलामत[12] रहो तुम मुझे ग़म[13] नहीं ॥

—असर लखनवी

---

१ डर २ सुन्दर रूपवालों को ३ क्रंदन (रोना चिल्लाना) ४ विश्वास ५ रेवाज ६ देश ७ दुखी की पुकार सुनने वाला ८ शव ९ विचार १० दया ११ अनर्थ १२ सुरक्षित १३ शोक।

दिल ले ही चुके नाज़ से शोख़ी से, हंसी से।
अब उनकी बला आँख मिलाती है किसी से॥

—दाग़

सितम[१] को उनके सरमाया[२] समझ अपनी सआदत का[३]।
बड़ी तक़दीर[४] उसकी है वो जिस पर नाज़[५] करते हैं॥

—बेताब अज़ीमाबादी

ये भी एहसान[६] है उसका जो वो बेदाद[७] करे।
वरना क्या उसको ग़रज़,[८] क्यूं वो मुझे याद करे॥

—बेताब अज़ीमाबादी

हुस्न (सौन्दर्य):—

कार फ़रमा[९] है फ़क़त,[१०] हुस्न का नैरंगे कमाल[११]।
चाहे वो शमा[१२] बने, चाहे वो परवाना[१३] बने॥

—असग़र गोंडवी

अपने हुस्न को ज़रा तू मेरी नज़र से देख।
दोस्त ! शशजेहात[१४] में कुछ तेरे सिवा[१५] नहीं॥

—ताजवर नजीबाबादी

कसरते[१६] हुस्न[१७] की ये शान न देखी न सुनी।
बर्क़ लर्ज़ां[१८] है कोई गरमे तमाशा क्या[१९] हो॥

—हसरत मुहानी

---

१ अनर्थ २ पूंजी ३ भाग्यवान होने का ४ भाग्य ५ गर्व ६ कृतज्ञता ७ अनर्थ ८ मतलब ९ आदेशक १० केवल ११ विचित्रता का चमत्कार १२ दीप १३ पतंगा १४ अखिल विश्व १५ अतिरिक्त १६ अधिकता १७ सौन्दर्य १८ बिजली तड़प रही है १९ तमाशा क्या देखे

हाँ हाँ तुम्हारे हुस्न की कोई ख़ता[1] न थी।
मैं हुस्ने इत्तफ़ाक़[2] से दीवाना[3] हो गया॥

—अज्ञात

कोई मानी[4] के सदक़े[5] हो, कोई बहज़ाद के सदक़े।
तेरी सूरत है लिखी जिस, हम उस ओस्ताद के सदक़े॥

—अली शाहजहाँबादी

निगाहें जज़्ब[6] हो जाती हैं, उसके हुस्ने दिलकश[7] में।
किसी जानिब[8] फिर उसको देख कर, देखा नहीं जाता॥

—अथर हापुड़ी

न जाने बात ये क्या है तुम्हें जिस दिन से देखा है।
मेरी नज़रों में दुनियाँ भर हँसीं[9] मालूम होती है॥

—असर लखनवी

तेरे हुस्ने[10] हयात[11] अफ़रोज़ को देखा है जिस दिन से।
बहुत मुझको अज़ीज़[12] उस दिन से अपनी ज़िन्दगानी[13] है॥

—जिगर मुरादाबादी

तुम जिसको समझते हो के है हुस्न तुम्हारा।
मुझको तो वो अपनी ही मुहब्बत नज़र आई॥

—आनन्द नारायण मुल्ला

---

१ दोष २ संयोग ३ बावरा ४ मानी और बहज़ाद दो प्रसिद्ध चित्रकार ५ न्योछावर ६ लीन ७ मनमोहक ८ ओर ९ सुन्दर १० सौंदर्य ११ जीवन बढ़ानेवाला १२ प्यारी १३ जीवन।

हुस्न को एक हुस्न ही समझे नहीं हम ऐ "फ़िराक़"।
मेहरबाँ[१] ना-मेहरबाँ[२], क्या क्या समझ बैठे थे हम ॥

—फ़िराक़ गोरखपुरी

तू जो चाहे के रहे हुस्न प मग़रूर[३] सदा।
ये ग़लत है, नहीं निभने का ये दस्तूर सदा ॥

—घासीराम ख़ुशदिल

हुस्नो इश्क़ (सौन्दर्य और प्रेम)

हज़ार हुस्न दिल आराए[४] दोजहाँ होता।
नसीबे इश्क़[५] न होता तो रायगाँ[६] होता ॥

—रविश सिद्दिक़ी

ये हुस्नों इश्क़ में क्या रब्त[७] है ख़ुदा जाने।
चिराग़े[८] बज़्म को लोदे[९] रहे हैं परवाने[१०] ॥

—मेहदी शेख़पुरवी

हुस्न[११] वो ख़ाब[१२] नहीं है जो मोकम्मल[१३] हो कभी।
इश्क़ वो कैफ़[१५] नहीं है के जो कामिल[१६] हो जाय ॥

—रवीश सिद्दिक़ी

इश्क़ का विज्दान[१७] हर पहलू से है बे क़ैदो बन्द[१८]।
हुस्न को जिस रुख़ से देखोगे असीरे[१९] नाज़ है ॥

—एहसान दानिश

१ दयालु २ निर्दय ३ गर्वित ४ विश्व-मोहन ५ प्रेम के लिए ६ व्यर्थ ७ सम्बन्ध ८ मजलिस का दीपक ९ दीया की बत्ती बढ़ा कर उसकी रोशनी तेज़ करना १० पतंगे ११ सौन्दर्य १२ स्वप्न १३ पूर्ण १४ प्रेम १५ मादकता १६ पूर्ण १७ अंतःप्रेरणा १८ असीमित १९ गिरफ्तार।

माना हुस्न की फ़ितरत[१] बहुत नाज़ुक[२] है ए "वामिक़"।
मेज़ाजे इश्क़[३] की लेकिन नज़ाकत और होती है॥
—वामिक़ जौनपुरी

असरे हुस्ने यार[४] से आख़िर।
आ गई इश्क़ में भी रानाई[५]॥
—हसरत

ये माहताब[६] नहीं है के आफ़ताब[७] नहीं।
सभी है हुस्न मगर इश्क़ का जवाब नहीं॥
—मजाज़

मार्का[८] है आज हुस्नो इश्क़ का।
देखिए वो क्या करें, हम क्या करें॥
— दाग़

हुस्न के भी डगमगाते हैं क़दम।
इश्क़ करता है जहाँ दाराइयाँ[९]॥
— जिगर

अर्श[१०] तक तो ले गया था साथ अपने हुस्न को।
फिर नहीं मालूम अब ख़ुद इश्क़ किस मंज़िल में है॥
—असग़र गोंडवी

---

१ स्वभाव २ कोमल ३ प्रेम का स्वभाव ४ प्रेयसी के सौन्दर्य प्रभाव से ५ सुन्दरता ६ चन्द्र ७ सूर्य ८ प्रतियोगिता ९ शासन १० आकाश।

हुस्न परस्ती (सौन्दर्य-उपासना):—

दिल से शौक़े[1] रुख़े निको[2] न गया।
झांकना ताकना कभू न गया॥

—मीर

ख़ूब रुयों[3] से यारियाँ[4] न गईं।
मेरी बे एख़्तियारियाँ[5] न गईं॥

—हसरत

माना के दिन सिधारे "मुबारक" शबाब[6] के।
रंगीं तबीयतों[7] से मुलाक़ात भी गई॥

—मुबारक अज़ीमाबादी

हुस्ने सीरतः—

हुस्ने सूरत[8] के लिए ख़ूबिये सीरत[9] है ज़रूर।
गुल[10] वही जिसमें के ख़ुश्बू[11] भी हो रंगत के सिवा॥

—आसी जौनपुरी

सीरत[12] के हम ग़ुलाम हैं सूरत हुई तो क्या।
सुर्ख़ो सुफ़ैद[13] माटी की मूरत हुई तो क्या॥

—अहसनुल्लाह बयान

रोबे हुस्न (सौन्दर्य का रोब):—

नहीं है ताब[14] मुझे तेरे सामने जानाँ।
कहाँ "सेराज" कहाँ आफताबे आलमताब[15]॥

— सेराज औरंगाबादी

---

१ अभिलाषा २ सुन्दर मुख ३ हसीनों से ४ दोस्ती ५ विकलता ६ जवानी ७ रंगीले स्वभाव वाले ८ रूप सौन्दर्य ९ चरित्र की सुन्दरता १० फूल ११ सुगन्ध १२ चरित्र १३ लाल और उजला १४ शक्ति १५ संसार को जगमगा देने वाला सूर्य।

वो रोबे हुस्न था के बन आई न हम से बात।
यूँ हाले दिल कहा के न कहना कहें जिसे॥

—तिलोकचन्द महरूम

टूटते हैं रात भर तारे ये रोबे हुस्न है।
बे खबर यूँ आप कोठे पर न सोया कीजिए॥

—नासरी

फ़रेबे हुस्न (सौन्दर्य की माया):—

फ़रेबे हुस्न से गबरो मुसल्मां[1] का चलन बिगड़ा।
ख़ुदा की याद भूला शैख़[2] बुत से बरहमन बिगड़ा॥

—आतिश

दिल व कैफ़ियाते दिल

(हृदय और हृदय की रचनाएँ)

बेतमन्नाइये दिल (हृदय की निष्कामता):—

बे तमन्नाइ[3] ने बरहम[4] रंगे महफ़िल[5] कर दिया।
दिल की बज़्म आराइयाँ[6] थीं आरज़ूये दिल[7] के साथ॥

—अमरनाथ साहिर

सरापा आरज़ू[8] होने में बन्दा[9] कर दिया हमको।
वगरना[10] हम ख़ुदा थे गर दिले बे मुद्दआ[11] होता॥

—मीर

---

१ मुस्लिम वो गैर मुस्लिम २ मुल्ला ३ निष्कामता ४ छिन्न-भिन्न ५ मजलिस का रंग ६ सभा को सजाना ७ दिल की कामना ८ सिर से [illegible]र तक कामना ९ दास १० नही तो ११ निष्काम हृदय।

लाख देने का एक देना है।
दिले बे मुद्दआ दिया तूने॥

—दाग़

बेदिली :—

दिल बुझा शमए[1] कायेनात[2] गई।
ज़िन्दगी[3] की उजाली रात गई॥

—आनन्द नारायण मुल्ला

दिल से अर्ज़ां[4] नहीं दुनिआ में कोई शये[5] "साहिर"।
बेदिली हमने मगर उससे भी सस्ती देखी॥

—अमरनाथ साहिर

कुछ और बेदिली के सिवा आरज़ू[6] नहीं।
ऐ दिल! ये याद रखियो के हम हैं तो तू नहीं॥

— शेफ़्ता

बेदिलों की हस्ती[7] क्या जीते हैं न मरते हैं।
ख़्वाब[8] है न बेदारी,[9] होश है न मस्ती है॥

—यगाना

वो दिल लेकर हमें बेदिल न समझें उनसे कह देना।
जो हैं मारे हुए नज़रों के उनकी हर नज़र दिल है॥

—सीमाब अकबराबादी

---

१ दीपक २ सृष्टि ३ जीवन ४ सस्ता ५ वस्तु ६ कामना ७ जीवन ८ सोना ९ जागना।

बेक़रारिये दिल (हृदय की विकलता) :—

कुछ इन रोज़ों[१] दिल अपना सख़्त[२] बे आराम रहता है।
इसी हालत[३] में लेकर सुबह से ता[४] शाम रहता है॥

—*मीर मोहम्मद असर*

तुझको पाकर भी न कम हो सकी बेताबिये दिल[५]।
इतना आसान तेरे इश्क़ का ग़म[६] था भी कहाँ॥

—*फ़िराक़ गोरखपुरी*

ले गया छीन के कौन आज तेरा सब्रोक़रार[७]।
बेक़रारी तुझे ऐ दिल! कभी ऐसी तो न थी॥

—*बहादुरशाह ज़फ़र*

शायद के इधर आके कोई लौट गया है।
बेताबी[८] से यूँ मुँह को कलेजा नहीं आता॥

—*निज़ाम रामपुरी*

पा चुके चैन तहे ख़ाक[९] भी हम कुश्तए इश्क़[१०]।
दिले बेताब[११] को अल्लाह सलामत[१२] रक्खे॥

—*अमीर मीनाई*

कुछ ठहरती नहीं के क्या होगी।
इस दिले बेक़रार की सूरत॥

—*शाह मुबारक आरज़ू*

एक करवट से सो नहीं सकता।
इस दिले बेक़रार के बाएस[१३]।

—*नवाब आसिफ़ुद्दौला आसिफ़*

---

१ आजकल २ बहुत ३ दशा ४ तक ५ हृदय की विकलता ६ शोक ७ सन्तोष, धैर्य ८ बेचैनी ९ मिट्टी के नीचे १० प्रेम के मारे हुए ११ विकल हृदय १२ सुरक्षित १३ कारण।

जब्र[1] है, क़हर[2] है, क़यामत[3] है।
दिल जो बे एख़्तियार[4] होता है॥
—मीर

झुटपुटा वक़्त है, बहता हुआ दरिया ठहरा।
सुबह से शाम हुई दिल न हमारा ठहरा॥
—आग़ा हज्जो शरफ़

क़ासिद[5] आया है वहाँ से, तू ज़रा थम तो सही।
बात तो करने दे उससे दिले बेताब मुझे॥
—तस्कीन

कल जहाँ से के उठा लाए थे अहबाब[6] मुझे।
ले चला आज वहीं फिर दिले बेताब मुझे॥
—ज़ौक़

दिल परेशान हुआ जाता है।
और सामान हुआ जाता है॥
—दाग़

बीमारिए दिल (हृदयशूल) :—

उलटी हो गईं सब तदबीरें[7] कुछ न दवा ने काम किया।
देखा! इस बीमारिए दिल ने आख़िर काम तमाम[8] किया॥
—मीर

---

१ मुसीबत २ विपत्ति ३ आफ़त ४ अधिकार से बाहर ५ पत्रवाहक ६ मित्र ७ चेष्टाएँ ८ समाप्त।

मुफ़्त कब आज़ाद करती है गिरफ़्तारी मुझे।
जी[1] ही लेके छोड़ेगी आख़िर ये बीमारी मुझे॥

—यक़ीन

दिल (हृदय) :—

आदम[2] का जिस्म[3] जबके अनासिर[4] से मिल बना।
कुछ आग बच रही थी, सो आशिक़[5] का दिल बना॥

—सौदा

ख़ामये क़ुदरत[6] ने दिल का नाम ये कह कर लिखा।
हर जगह इस लफ़्ज़[7] के मानी[8] बदलते जायेंगे॥

—अज़ीज़ लखनवी

राज़े हक़ीक़त[9] जाननेवाले देखिए अब क्या कहते हैं।
दिल को हम अपना दिल नहीं कहते, उनकी तमन्ना[10] कहते हैं॥

—फ़ानी

दैरो हरम[11] में बहस[12] रही दिल कहाँ रहे।
आख़िर ये तय हुआ के ये बेख़ानुमां[13] रहे॥

—नातिक़ लखनवी

बहुत बलन्द[14] है दिल का मोक़ामे[15] ख़ुद्दारी[16]।
मगर शिकस्त का इमकाँ[17] नहीं तो कुछ भी नहीं॥

—रविश सिद्दिक़ी

---

१ प्राण २ मनुष्य ३ शरीर ४ पंचतत्व ५ प्रेमिका ६ प्रभु की लेखनी ७ शब्द ८ अर्थ ९ तत्व भेद १० कामना ११ मंदिर मस्जिद १२ तर्क १३ गृहविहीन १४ ऊँचा १५ स्थान १६ आत्मसम्मान १७ टूटने का सम्भावना।

है यहाँ काम की हर शै[1] मगर एक चीज है दिल।
जिसकी हाजत[2] है न उनको न जरूरत मुझको॥

—उम्मीद अमैठवी

आबादी भी देखी है, वीराने भी देखे हैं।
जो उजड़े और फिर न बसे, दिल की निराली बस्ती है॥

—फ़ानी

अच्छे हुए ज़माने[3] के बीमार सैकड़ों।
दिल वो मरीज़ है के अभी ज़ेरे ग़ौर[4] है॥

—आसी उल्दनी

मुख़्तसर[5] क़िस्सए ग़म[6] ये है के दिल रखता हूँ।
राज़े कौनैन[7] ख़ुलासा[8] है इस अफ़साने[9] का॥

—फ़ानी

दिल भी तेरे ढंग सीखा है।
आन[10] में कुछ है आन में कुछ है॥

—मीर

मेरी बहारो[11] ख़िज़ाँ[12] जिसके एख़्तियार[13] में थी।
मिज़ाज उस दिले बेएख़्तियार[14] का न मिला॥

—यगाना चंगेज़ी

---

१ वस्तु २ आवश्यकता ३ संसार ४ विचाराधीन ५ संक्षेप ६ ग़म की कहानी ७ लोक परलोक का भेद ८ सारांश ९ कहानी १० क्षण ११ बसंत १२ पतझड़ १३ बस १४ अधिकार से बाहर।

मैं दुश्मनें जां[1] ढूँढ़ के अपना जो निकाला।
सो हज़रते[2] दिल सल्लमहुल्लाह तआला[3] ॥

—सौदा

यारब[4] ! ये दिल है या कोई मेहमां सराये[5] है।
ग़म रह गया कभी, कभी आराम रह गया ॥

—मीर दर्द

कलेजा पक गया मैं क्या कहूँ, इस दिल के हाथों से।
हमेशा कुछ न कुछ इसमें ख़याले ख़ाम[6] रहता है ॥

—मीरमो: असर

दिल के हाथों बहुत ख़राब हुआ।
'हसरते ख़ानोमां ख़ाराब[7] का रंग ॥

—हसरत मुहानी

शाम ही से बुझा सा रहता है।
दिल है गोया चिराग़ मुफ़लिस[8] का ॥

—मुसहफ़ी

यक क़तरा[9] ख़ून होके पलक से टपक पड़ा।
क़िस्सा ये कुछ हुआ दिले गुफ़रां पनाह[10] का ॥

—मीर

---

१ जान का शत्रु २ श्रीमान् ३ ईश्वर इन्हें सुरक्षित रखें ४ हे प्रभु ५ अतिथि गृह ६ व्यर्थ विचार ७ गृह विहीन ८ निर्धन ९ एक बूंद १० मुक्त

रुका इतना ख़फ़ा इतना हुआ था।
के आख़िर ख़ून हो हो कर बहा दिल ॥
—मीर

दिल, के जिसकी ख़ाना वीरानी[1] का तुमको ग़म नहीं।
क्या बतायें हम तुम्हें, इस घर में कौन आबाद था ॥
—साकिब लखनवी

चली सिम्ते ग़ैब[2] से एक हवा के चमन सुरूर[3] का जल गया।
मगर एक शाख़े नेहाले ग़म[4], जिसे दिल कहें वो हरी रही ॥
—सिराज औरंगाबादी

दिल से था हंगामए हस्ती[5], अब "अख़्तर" दिल कहाँ।
साज़ इधर ठहरा, उधर नग़मे[6] परीशां हो गए ॥
—अलीअख़्तर अख़्तर

न तो आहो नाला ही निकले हे, न उठे हे कल से सदाए[7] दिल।
तू ख़बर तो सीने में ले 'हसन' कहीं चल बसा न हो, हाय दिल ॥
—मीर हसन

लाखों में इन्तेख़ाब के क़ाबिल[8] बना दिया।
जिस दिल को तुम ने देख लिया, दिल बना दिया ॥
—जिगर

१ घर का उजड़ना २ अगम स्थान ३ हर्ष ४ शोक के वृक्ष की डाली ५ जीवन की चहल पहल ६ संगीत स्वर ७ आवाज़ ८ चुन लिए जाने योग्य

बहुत शोर सुनते थे पहलू[1] में दिल का।
जो चीरा तो एक क़तरए[2] खूँ न निकला॥

—आतिश

दिले बर्बाद[3] को भी कहने वाले दिल ही कहते हैं।
खेज़ाँ दीदा चमन[4] को भी चमन कहना ही पड़ता है।

—नज्म नदवी

दिले दीवाना (उन्मत्त हृदय) :—

ज़ुबाँ पर जब किसी के दर्द का अफ़साना[5] आता है।
हमें रह रह के याद अपना दिले दीवाना आता है॥

—सिद्क़ जायसी

वस्ल[6] में बेखुद[7] रहे और हिज्र[8] में बेताब[9] हो।
इस दिवाने दिल को "रुस्वा" किस तरह समझाइए॥

—आफ़्ताबजान रुस्वा

दिल का जाना :—

मसाएब[10] और[11] थे, पर दिल का जाना।
अजब एक सानेहा[12] सा हो गया है॥

—मीर

दिल के जाने का "शहीदी" वाक़ेया[13] ऐसा नहीं।
कुछ न रोये आह, अगर हम उम्रभर[14] रोया किये॥

—शहीदी

---

१ सीना २ बून्द ३ उजड़ा हुआ दिल ४ पतझड़ में उजड़ा हुआ उपवन ५ कहानी ६ मिलन ७ तन्मय ८ वियोग ९ विकल १० दुःख ११ दूसरे-दूसरे १२ दुर्घटना १३ घटना १४ आजीवन

मेरा दिल किसने लिया, नाम बताऊँ किसका।
मैं हूँ या आप हैं घर में, कोई आया न गया ॥

—इम्दाद अली बहर

दिल की चोट :—

कोफ़्त[१] से जान लब[२] प आई है।
हमने क्या चोट दिल प खाई है ॥

—मीर

चोट खाना दिले हज़ीं[३] न कहीं।
दर्द रह जायेगा कहीं न कहीं ॥

—दाग़

दाग़ व जराहते दिल (दिल का घाव और दाग़) :—

"मुसहफ़ी" हम तो ये समझे थे के होगा कोई ज़ख़्म।
तेरे दिल में तो बहुत काम रफ़ू[४] का निकला ॥

—मुसहफ़ी

दिले महरूमे तमन्ना[५] प दमकते हुए दाग़।
जैसे तुर्बत[६] प चिराग़ों का समां[७] होता है ॥

—ज़हीर कश्मीरी

लाले[८] को कहाँ नसीब वो दाग़।
जो दिल को दिए हैं आरज़ू[९] ने ॥

—फ़ज़लेहक़ आज़ाद अज़ीमाबादी

---

१ क्लेश २ होठों पर ३ दुःखी ४ मरम्मत ५ जिसकी कामनाएँ पूरी न हुई हों ६ समाधि ७ दर्शन ८ एक प्रकार का फूल जिसमें दाग़ जैसा चिह्न होता है ९ अभिलाषाओंने।

आती है बूए[1] दाग़ शबे तारे[2] हिज्र में।
सीना भी चाक[3] हो न गया हो क़ब्रा[4] के साथ॥

—मोमिन

करेगा क़ब्र से अपनी एक आफ़ताब[5] ज़हूर[6]।
अगर हयाते[7] दिले दाग़दार[8] बाक़ी है।

—बेताब अज़ीमाबादी

ऐ दाग़े दिल! ऐ खोए हुए दिल की निशानी!
आ, "फ़ानिए" बेदिल तुझे सीने से लगाले॥

—फ़ानी

कुछ फूल चुनने आए थे ऐ बाग़बाँ[9] मगर।
कुछ दाग़ ले चले हैं तेरे गुलसिताँ[10] से हम॥

—अमर सहबाई

ऐ लाला गो[11] फ़लक[12] ने दिए तुझ को चार दाग़।
छाती मेरी सराह के एक दिल हज़ार दाग़।

—सौदा

दर्दे दिल:—

दिल तो सब को तेरी सरकार से मिल जाते हैं।
दर्द जब तक न मिले दिल नहीं होने पाता॥

—फ़ानी

---

१ गंध २ वियोग की अंधेरी रात ३ फटना ४ लम्बा ढीला पहनावा ५ सूर्य ६ उपस्थिति ७ अवस्था ८ दिल जिसपर ज़ख्मों का निशान हो ९ माली १० फुलवारी ११ यद्यपि १२ आकाश

इश्क़ की चोट का कुछ दिल प असर हो तो सही।
दर्द, कम हो के ज़्यादा हो, मगर हो तो सही॥

—जलाल

कौन से ज़ख़्म का खुला टाँका।
आज फिर दिल में दर्द होता है॥

—ज़ियाउद्दीन ज़िया

कोई ये पूछ ले दर्दे नेहाँ[1] से।
तुझे दिल ढूँढ़ लाया है कहाँ से॥

—जलाल

ऐसा न हो ये दर्द बने दर्दे ला दवा[2]।
ऐसा न हो के तुम भी मदावा[3] न कर सको॥

—सूफ़ी तबस्सुम

ऐ दर्द ये चुटकियाँ कहाँ तक
उठ और जिगर के पार हो जा॥

—फ़ानी

इस दर्द का इलाज अजल[4] के सिवा भी है।
क्यूँ चारासाज़[5]! तुझको उम्मीदे शफ़ा[6] भी है?॥

—फ़ानी

---

१ छिपा हुआ २. असाध्य रोग ३ इलाज ४ मत्यु ५ चिकित्सक ६ आरोग्यता की आशा

कुछ क़ैस[1] और मैं ही नहीं, सब के सब मुए[2] ।
अच्छा तो दर्दे इश्क़[3] का बीमार कम हुआ ॥

—*मोमिन*

धोखा न खाओ चारागरो[4] वाक़ेयात[5] से ।
पहलू[6] में दिल नहीं है तो क्या दर्द भी नहीं ? ॥

—*आसि उल्दनी*

आने वाली है क्या बला सर पर ।
आज फिर दिल में दर्द है कम कम ॥

—*जोश मलीहाबादी*

दर्द उठते ही तड़पने लगा नामहरमे राज़[7] ।
जो अदा[8] से तेरी वाक़िफ़[9] था वो ख़ामोश[10] रहा ॥

—*बेताब अज़ीमाबादी*

दर्द का मेरे यक़ीं[11] आप करें या न करें ।
अर्ज़[12] इतनी है के इस राज़[13] का चर्चा न करें ॥

—*वहशत कलकतवी*

दर्दे दिल के वास्ते पैदा किया इन्सान[14] को ।
वरना ताअत[15] के लिए कुछ कम न थे किर्रोबियाँ[16] ॥

—*मिर दर्द*

---

१ मजनूं २ मरे ३ प्रेम की पीड़ा ४ चिकित्सकों ५ घटनाओं ६ सीना ७ भेद का न जाननेवाला ८ हाव-भाव ९ जाननेवाला १० चुप ११ विश्वास १२ निवेदन १३ भेद १४ मनुष्य १५ भक्ति १६ देवता

दिले पुरखूँ (खून से भरा दिल) :—

दिले पुरखूँ[1] की एक गुलाबी[2] से।
उम्र भर[3] हम रहे शराबी से[4]॥

—मीर

दिल का बहलाना :—

अब ये सूरत[5] है दिलेज़ार[6] के बहलाने की।
ज़िक्रे नाकामिए अरबाबे वफ़ा करते हैं[7]॥

—दिल शाहजहाँपुरी

बाग़ में लगता नहीं सहरा[8] से घबराता है जी।
अब कहाँ ले जाके बैठें ऐसे दीवाने को हम॥

—अज्ञात

बहला न दिल न तीरगिए[9] शामे ग़म[10] गई।
ये जानता तो आग लगाता न घर को मैं॥

—फ़ानी

दिल की धड़कन :—

वक़्त की हर आवाज़ "ज़फ़र"।
मेरे दिल की धड़कन है॥

—अहमद ज़फ़र

बड़े शौक़ो[11] तवज्जोह[12] से सुना दिल के धड़कन को।
मैं ये समझा के शायद आपने आवाज़ दी होगी॥

—माहिरुलक़ादिरी

---

१ खून से भरा हृदय २ शराब की सुराही ३ आजीवन ४ तरह ५ ढंग ६ विकल हृदय ७ वफ़ादारी करनें वालों की असफलता की चर्चा करते हैं। ८ जंगल ९ अंधेरा १० शोक की संध्या ११ अनुराग १२ ध्यान

मैं ने ही कुछ न समझा, मेरी ही थीं ख़ताएं[१] ।
वोह दिल की धड़कनों से देते रहे सदाएं[२] ॥

—माहिरुलक़ादिरी

दिल का सौदा :—

यारब[३] ! कहीं से गरमिए बाज़ार[४] भेज दे ।
दिल बेचता हूँ कोई ख़रीदार भेज दे ॥

—सौदा

किसी ने मोल न पूछा दिले शिकस्ता[५] का ।
कोई ख़रीद के टूटा प्याला क्या करता ॥

—आतिश

बाज़ारे मुहब्बत[६] में कभी करती है तक़दीर[७] ।
बन बन के बिगड़ जाता है सौदा मेरे दिल का ॥

—तस्लीम

अजब क़िस्मत है अपने दिल की बाज़ारे मुहब्बत में ।
जो कोई सुबह इसको ले गया ताशाम[८] ले आया ॥

—गुलाम हैदर मज्जूब

खोटे दामों भी अगर कोई ख़रीदार मिले ।
कौन [९]कमबख़्त न अब बेच ही डाले दिल को ।

—हफ़ीज़ जौनपुरी

---

१ दोष २ आवाज़ ३ हे प्रभु ४ बाज़ार की भीड़भाड़ ५ टूटा हुआ ६ प्रेम के बाज़ार ७ भाग्य ८ संध्या तक ९ भाग्यहीन ।

एक तजल्ली[1] एक तबस्सुम[2] एक निगाहे बन्दानवाज़[3] ।
इससे ज्यादा[4] जलवए[5] जानां दिल की क़ीमत क्या कहिए ॥
—जिगर मुरादाबादी

दिल जल जो गया, ख़ूब हुआ[6], सोख़ता बेहतर[7] ।
वो जिन्स, कोई जिसका ख़रीदार न होवे ॥
—मोमिन

ज़ंग आलूदा[8] एक आइना सही ।
दिल की आख़िर कोई क़ीमत होगी ! ॥
—सफ़ी लखनवी

रुदादे दिलो ज़िन्दगी (हृदय और जीवन का वृत्तान्त) :—

पहले रुदादे दिले ना काम[9] पर हो एक नज़र[10] ।
फिर जहाँ से चाहिए चाके गरीबाँ[11] देखिए ॥
—दिल शाहजहाँपुरी

अफ़सोस ! दिल का हाल कोई पूछता नहीं ।
ये कह रहे हैं सब तेरी सूरत बदल गई ॥
—दिलेर मारहरवी

माजराए दर्दे दिल[12] को बेअसर[13] क्यों कर कहें ।
बन्दा परवर ![14] कोई इसका सुननेवाला ही नहीं ॥
—फ़ानी

---

१ झलक २ मुस्कान ३ दीनों पर दयादृष्टि ४ अधिक ५ शोभा ६ अच्छा हुआ ७ जलना ही उचित हुआ ८ मैल पड़ा हुआ ९ असफल हृदय का वृत्तान्त १० दृष्टि ११ फटे हुए कुर्ते का टुकड़ा १२ हृदय की पीड़ा की कहानी १३ प्रभावरहित १४ दीनबन्धु

कही किसी से न रुदादेजिन्दगी[1] मैं ने।
गुज़ार देने शय[2] थी गुज़ार दी मैं ने॥

—*हकीम मख़मूर*

ख़मोशी[3] से भी बारे तर्जुमानी[4] उठ नहीं सकता।
बहुत ग़मनाक[5] रुदादे मुहब्बत[6] होती जाती है॥

—*रविश सिद्दीक़ी*

इब्तेदा[7] से आज तक 'नातिक़' की है ये सरगुज़श्त[8]।
पहले चुप था फिर हुआ दीवाना अब बेहोश है॥

—*नातिक़ लखनवी*

दफ़अतन[9] उनकी निगाहे इल्तेफ़ात[10]।
इश्क़[11] की सबसे बड़ी रुदाद[12] है॥

—*नातिक़ लखनवी*

तूले रुदादे ग़म! मआज़ल्लाह[13]।
उम्र[14] गुज़री है मोख़्तसर[15] करते॥

—*फ़ानी*

ज़िन्दादिली :—

दिल दे तो इस मिज़ाज[16] का परवरदिगार[17] दे।
जो रंज[18] की घड़ी भी ख़ुशी में गुज़ार दे[19]॥

—*दाग़*

---

१ जीवन वृत्तान्त २ वस्तु ३ मौन ४ अनुवाद का बोझ ५ शोकजनक ६ प्रणयव्यथा ७ प्रारम्भ ८ जीवन चरित्र ९ अचानक १० आकृष्ट ११ प्रेम १२ घटना १३ शोक की लम्बी कहानी: ईश्वर बचायें १४ जीवन १५ संक्षेप १६ स्वभाव १७ प्रभु १८ दुःख १९ व्यतीत कर दे

जो ज़िन्दादिल[१] हैं हमेशा[२] जवान रहते हैं।
बहारे ज़ीस्त[3] यक़ीनन[४] इसी शबाब[५] में है॥
—*दत्तात्रेय कैफ़ी*

फ़सुर्दा दिल[६] कभी ख़िलवत[७] न अंजुमन[८] में रहे।
बहार होके रहे हम तो जिस चमन में रहे॥
—*दाग़*

सैयाद ख़ुशदिली[९] में है कुछ ज़िन्दगी[१०] का लुत्फ़[११]।
अफ़सुर्द ख़ातिरें[१२] की ख़ेज़ाँ[१3] क्या बहार क्या॥
—*सिदक़ जायसी*

सबसे हँसकर मिलनेवाले हमको किसी से बैर नहीं।
दुनियाँ है महबूब[१४] हमें और हम दुनियाँ को प्यारे हैं॥
—*जमील मलिक*

जिस अंजुमन[१५] में बैठ गया रौनक़[१६] आ गई।
कुछ आदमी 'रेआज़' अजब दिल्लगी का था॥
—*रेआज़*

ज़िन्दगी ज़िन्दादिली का है नाम।
मुर्दा दिल[१] खाक जिया करते हैं॥
—*नासिख़*

---

१ विनोदप्रिय २ सदा ३ जीवन का बसन्त ४ अवश्य ५ जवानी ६ मलीन हृदय ७ एकान्त ८ मजलिस ९ मन की ख़ुशी १० जीवन ११ आनन्द १२ उदासीन हृदयवाले १३ पतझड़ १४ प्यारी १५ सभा १६ चहलपहल १७ मरे दिल वाले

सुकूनेदिल (हृदय की शान्ति) :—

सकूने दिल जहाने[1] बेशो कम[2] में ढूँढ़नेवाले।
यहाँ हर चीज़ मिलती है सुकूने दिल नहीं मिलता॥
—जगन्नाथ आज़ाद

दिल को इस तरह ठहर जाने की आदत तो न थी।
क्यों अजल[3]! क्या मेरे नामे[4] का जवाब आता है॥
—फ़ानी

अब मुझको है क़रार[5] तो सबको क़रार है।
दिल क्या ठहर गया के ज़माना ठहर गया॥
—सीमाब अकबराबादी

सुकून[6] जब से है ख़तरा[7] ये दिल को हरदम है।
कहीं वो पूछ न बैठें के दर्द क्यों कम है॥
—हकीम नातिक़

आलम प है एक सकूने बेताब[8]।
या अक्स[9] है मेरी ज़िन्दगी का॥
—असग़र गोण्डवी

हम नशीं[10]! कुंजे क़फ़स[11] में मुतमइन[12] हो के न रह।
वरना हर्फ़ आयगा[13] तेरी जुरअते परवाज़[14] पर॥
—माहिरुलक़ादरी

---

१ संसार २ थोड़ा और बहुत ३ मृत्यु ४ पत्र ५ शान्ति ६ शान्ति ७ भय ८ विकल शान्ति ९ प्रतिबिम्ब १० साथी ११ पिंजड़ा १२ शान्तिपूर्वक १३ कलंक लगेगा १४ उड़ने का साहस

शिकस्तगीएदिल (हृदय का टूटना) :—

दीदनी[1] है शिकस्तगी[2] दिल की।
क्या इमारत[3] ग़मों[4] ने ढाई है॥

—मीर

तू बचा बचा के न रख इसे तेरा आइना है वो आइना।
के शिकस्ता[5] हो तो अज़ीज़तर[6] है निगाहे आइना साज़[7] में॥

—एक़बाल

दिल तोड़ के जाने वाले सुन, दो और भी रिश्ते[8] बाक़ी हैं।
एक साँस की डोरी अटकी है, एक प्रेम का बंधन रहता है॥

—क़यूम नजर

अल्लह रे शामे ग़म[9] मेरे दिल की शिकस्तगी।
तारों का टूटना भी मुझे नागवार[10] था॥

—सीमाब अकबराबादी

अक़्लोदिल (बुद्धि और हृदय) :—

अक़्लो दानिश[11] से तो कुछ काम न निकला अपना।
कब तक आखिर दिले दीवाना[12] का कहना न करें।

—वहशत कलकत्तवी

दिल ने खोया हमें के था आह!।
दीवाना शरीक[13] मश्वरत[14] का॥

—मीर

---

१ देखने योग्य २ टूटना ३ भवन ४ शोक ने ५ टूटे ६ प्रियतर ७ आइना बनानेवाले की नजर ८ नाते ९ शोक की संध्या १० नापसन्द ११ समझ १२ उन्मत्त हृदय १३ साथी १४ परामर्श

अच्छा है दिल के पास रहे पासबाने[1] अक़्ल।
लेकिन कभी कभी इसे तनहा[2] भी छोड़ दे॥

—एक़्बाल

वीरानीए दिल (दिल का उजड़ना) :—

दिल की वीरानी का क्या मज़कूर[3] है।
ये नगर सौ मर्तबा लूटा गया॥

—मीर

दिल को बर्बाद करके बैठा हूँ।
कुछ ख़ुशी भी है कुछ मलाल[4] भी है॥

—जिगर

दिल अजब शहर था ख़यालों[5] का।
लूटा मारा है हुस्नवालों का॥

—मीर

ख़राब[6] क्यों के न हो शहरे दिल की आबादी।
हमेशा लूटने वाले ही इस दयार[7] में आये॥

—जुरअत

दिल वो नगर नहीं जो फिर आबाद हो सके।
पछताओगे, सुनो हो, ये बस्ती उजाड़ के॥

—मीर

---

१ पहरेदार २ अकेला ३ वृतान्त ४ दुःख ५ कल्पनाओं ६ बर्बाद ७ देश

दिल का उजड़ना सहल[1] सही, बसना सहल नहीं, ज़ालिम[2]! ।
बस्ती बसना खेल नहीं, बसते बसते बस्ती है ॥

—फ़ानी

जुनूनो खेरद

(उन्माद और बुद्धि)

बेहोशी और होशः—

ठहर के पाँव से काँटे निकालने वाले ! ॥
ये होश है तो जुनूँ[3] कामयाब[4] क्या होगा ॥

—राज़ यज़दानी रामपुरी

होशो खेरद[5] गए निगहे सेहरफ़न[6] के साथ ।
अब जो है अपनी बात सो दीवानापन के साथ ॥

—ज़ौक़

होश जाता नहीं रहा, लेकिन ।
जब वो आते हैं तब नहीं आता ॥

—मीर

कमाले होश[7] है यूँ बे नेआज़े होश[8] हो जाना ।
तेरी आग़ोश[9] में बेगानए[10] आग़ोश हो जाना ॥

—फ़ानी

---

१ आसान २ निर्दय ३ दीवानगी ४ सफल ५ बुद्धि ६ जादू भरी नज़र ७ चेतना की पूर्णता ८ होश से निस्पृह ९ गोद १० अपरिचित

इश्क़ करता है तो फिर इश्क़ की तौहीन[1] न कर।
या तो बेहोश न हो, हो तो न फिर होश में आ॥
—आनन्दनारायण मुल्ला

गए दिन टिकटिकी के बांधने के।
अब आँखें रहती हैं दो दो पहर बन्द॥
—मीर

कोई दम को[2] तो भूल जाते ग़म।
ग़शी[3] भी इस क़द्र नहीं आती॥
—निज़ाम रामपुरी

जुनून (उन्माद):—

जिसे दीवानगी कहते हैं उल्फ़त[4] की नबुव्वत[5] है।
ग़नीमत है जो सदियों में कोई दीवाना हो जाय॥
—सीमाब

दिल से तंग आए हैं हम, जोश जुनूँ का कैसा।
यूं गरीबाँ[6] नहीं क्या फाड़ते? सौदा[7] कैसा?॥
—जलाल

कहती थी जुनूँ जिसको दुनिया, बिगड़ी हुई सूरत अक़्ल की थी।
फाड़ा था गरीबाँ तेरे लिए, जब तू न रहा सीना ही पड़ा॥
—जमील मज़हरी

खींच ले जाये जो तेरे दर[8] तक।
ऐसी दीवानगी को क्या कहिए॥
—रविश सद्दीक़ी

---

१ अपमान २ कुछ समय के लिए ३ बेहोशी ४ प्रेम ५ ईश दौत्य ६ कुर्ते का ऊपरी हिस्सा ७ दीवानगी ८ द्वार।

दिलों को फ़िक्रे दो आलम[१] से कर दिया आज़ाद[२]।
तेरे जुनूँ का ख़ुदा सिलसिला[३] दराज़[४] करे॥
—हसरत

है जुनूँ का ज़ोरे तूफ़ाँ[५] इन दिनों।
मैं हूँ और मेरा गरीबाँ इन दिनों॥
—जज़्ब अज़ीमाबादी

जोशे जुनूँ[६] में वो तेरे वहशी[७] का चीख़ना।
बन्द अपने हाथ से दरे ज़िन्दाँ[८] किये हुए॥
—आरज़ू लखनवी

हर एक सूरत हर एक तस्वीर मुब्हम[९] होती जाती है।
इलाही[१०] क्या मेरी दीवानगी कम होती जाती है॥
—जिगर मुरादाबादी

मेरी बातों प दुनिया की हँसी कम होती जाती है।
मेरी दीवानगी शायद मुसल्लम[११] होती जाती है॥
—आनन्दनारायण मुल्ला

ऐ ख़िरदमन्दो[१२]! मुबारक हो तुम्हें फ़रज़ानगी[१३]।
हम हों और सहरा[१४] हो और वहशत[१५] हो और दीवानगी॥
—शाह हातिम

अब के जुनूँ में फ़ासला[१६] शायद न कुछ रहे।
दामन[१७] के चाक और गरीबाँ[१८] के चाक[१९] में॥
—मीर

---

१ दोनों लोक की चिन्ता से २ निश्चिन्त ३ क्रम ४ लम्बा ५ आँधी का ज़ोर ६ दीवानगी के जोश में ७ पागल ८ कारागार का द्वार ९ अस्पष्ट १० हे प्रभु ११ निश्चित १२ ज्ञानियो १३ ज्ञान १४ जंगल १५ पागलपन १६ दूरी १७ कुरते का निचला हिस्सा १८ कुरते का ऊपर का हिस्सा १९ फटा हुआ।

जुनूँ, पसन्द मुझे छाँव है बबूलों की।
अजब बहार है इन ज़र्द[1] ज़र्द[2] फूलों की ॥

—नासिख़

जुनूनो ख़ेरद (ज्ञान और प्रमाद) :—

ख़ेरद[3] का नाम जुनूँ[4] पड़ गया जुनूँ का ख़ेरद।
जो चाहे आप का हुस्नेकरश्मा-साज़[5] करे ॥

—हसरत

हमारे काम आखिर आगया जोशे जुनूँ, वरना।
ख़ेरद[6] की रहबरी[7] में हम ख़ुदा जाने कहाँ जाते ॥

—शफ़क़ भागलपुरी

अपना दीवाना बनाया मुझे होता तू ने।
क्यों ख़ेरदमन्द[8] बनाया, न बनाया होता ॥

—बहादुरशाह ज़फ़र

दामनो गरीबाँ :—

न जाने क्यों ज़माना[9] हँस रहा है मेरी हालत[10] पर।
जुनूँ में जैसा होना चाहिये वैसा गरीबाँ है ॥

—सेराज लखनवी

हज़ारहा जो गरीबाँ में तार बाक़ी है ॥
जुनूँ! बता, के ये कैसी बहार बाक़ी है।

—बेताब अज़ीमाबादी

---

१ पीले २ पीले ३ बुद्धि ४ दीवानगी ५ लीला रचनेवाला सौन्दर्य ६ बुद्धि ७ मार्ग-दर्शन ८ बुद्धिमान ६ संसार १० दशा।

जाऊँ सहरा[१] में दिवानों में मेरी इज्जत[२] हो।
अपने हाथों से मेरा चाक गरीबाँ करदे॥
—मीर मुस्तक़ीम जुरअत

ये दामन है, ये है गरीबाँ, आओ कोई काम करें।
मौसम का मुँह तकते रहना काम नहीं दीवानों का॥
—हफ़ीज़ जालंधरी

हाय! कबतक न मैं घबराऊँगा ऐ दस्ते[३] जुनूँ।
अब तो दामन भी नहीं है के बहल जाऊँगा॥
—तस्लीम

हाय! उस चारगिरह कपड़े की क़िस्मत[४] 'ग़ालिब'।
जिसकी क़िस्मत में हो आशिक़[५] का गरीबाँ होना॥
—ग़ालिब

दीवाना :—

आशिक़ तो था 'हवस' कहो दीवाना कब हुआ।
लो उठ गया हेजाब[६] बड़ा ही ग़ज़ब हुआ॥
—मुहम्मद तक़ी ख़ाँ हवस

कोई ऐसा नहीं यारब[७] जो इसके दर्द को समझे।
नहीं मालूम क्यों ख़ामोश[८] है दीवाना बरसों से॥
—असग़र गोंडवी

कोई नासेह[९] है, कोई दोस्त है कोई ग़मख़ार[१०]।
सब ने मिलकर मुझे दीवाना बना रक्खा है॥
—आसी उल्दनी

---

१ जंगल २ सम्मान ३ पागलपन के हाथ ४ भाग्य ५ प्रेमी ६ पर्दा ७ हे प्रभु! ८ मौन ९ उपदेशक १० दुख बटानेवाला।

मस्तीओ नाआशनाई[1], वहशतो बेगानगी[2]।
या तेरी आँखों में देखा या तेरे दीवाने में॥

—ज़ौक़

देखता है न इमारत को न वीराने[3] को।
जिस जगह पड़ रहा नींद आ गई दीवाने को॥

—आसी उल्दनी

कहता था कसू से कुछ तकता था कसू का मुंह।
कल 'मीर' खड़ा था याँ, सच है के दिवाना था॥

—मीर

चल के 'बिस्मिल' की हेकायत[4] तो सुनो।
कौन कहता है के दीवाना है॥

—मो० हसन बिस्मिल अज़ीमाबादी

ज़िन्दाँ (कारागार) :—

बड़े ख़तरे में हैं हुस्ने गुलिस्ताँ[5], हम न कहते थे!
चमन तक आ गई दीवारे ज़िन्दाँ[6] हम न कहते थे!!

—सैफ़ उद्दीन सैफ़

देखकर हर दरो[7] दीवार[8] को हैराँ[9] होना।
वो मेरा पहले पहल दाख़िले ज़िन्दाँ[10] होना॥

—अज़ीज़ लखनवी

फ़स्ले गुल[11] आई या अजल[12] आई, क्यों दरे ज़िन्दाँ[13] खुलता है।
क्या कोई क़ैदी और आ पहुँचा या कोई क़ैदी छूट गया।

—फ़ानी

---

१ अपरिचित होना २ परायापन ३ उजाड़ जगह ४ कहानी ५ उपवन का सौंदर्य ६ कारागार की दीवार ७ द्वार ८ दीवार ९ अचंभित १० क़ैदख़ाने में प्रवेश करना ११ वसन्त ऋतु १२ मृत्यु १३ क़ैदख़ाने का द्वार।

जंजीर :— → Amithabh bhachan)

हाल बाक़ी न रहा कुछ तेरे दीवाने में।
अब तो जंजीर ही जंजीर नज़र आती है॥
—जलील मानिकपुरी

मर के टूटा है कहीं सिलसिलए क़ैदेहयात[१]।
मगर इतना है के जंजीर बदल जाती है॥
—फ़ानी

जाये क्योंकर बाग़ से वो क़ैदिये ज़िन्दाने इश्क़[२]।
उलझते गुल[३] हो गई जंजीरे पाये अन्दलीब[४]॥
—रिन्द

एक मौजे हवा[५] पेचाँ,[६] ऐ 'मीर' नज़र आई।
शायद के बहार आई, जंजीर नज़र आई॥
—मीर

सहरा नवर्दी (बन में भटकना) **:—**

अज़ल[७] से दश्तनवर्दी[८] का शौक़ है दिल को।
ग़ेज़ाले दश्त[९] के अन्दाज़े रम[१०] की बात नहीं॥
—जोश मलीहाबादी

अपनी क़िस्मत में अज़ल से लिखी थी सरगश्तगी[११]।
गर्दोबाद आसा[१२] जो कारे दश्त पैमाई[१३] मिला॥
—सुल्तान शाह आलम आफ़ताब

जंगल जंगल सहरा सहरा, मारे मारे फिरते हैं।
आहू[१४] वहशी जान के हमको, साथ हमारे फिरते हैं॥
—इम्दाद इमाम असर

---

१ जीवन बन्धव का क्रम २ प्रेम-कारागार का बन्दी ३ पुष्प-प्रेम ४ बुलबुल के पांव की ज़ंजीर ५ पवन का झोंका ६ बलखाया हुआ ७ अनादि काल ८ जंगल में भटकना ९ जंगल के मृग १० भागने का ढंग ११ परीशानी १२ धूल और हवा के प्रकार १३ जंगल छानने का काम १४ मृग।

मानेए सहरा नवर्दी[1] पाँव की ईज़ा[2] नहीं।
दिल दुखा देता है लेकिन टूट जाना ख़ार[3] का॥
—नासिर

अक्ल (बुद्धि) :—

गुज़र जा अक़्ल से आग, के यह नूर[4]।
चिराग़े राह[5] है, मंज़िल नहीं है॥
—एक़बाल

ये खेल सब है बिगाड़ा हुआ तेरा ऐ अक़्ल।
के ज़र्रा[6] ज़र्रा मुझे एक तलिस्म ख़ाना[7] हुआ॥
—बेताब अज़ीमाबादी

वहमो क़यास[8] के सिवा हासिले होश[9] कुछ नहीं।
फ़हम[10] की इब्तेदा[11] है वहम,[12] अक़्ल की हद[13] क़यास[14] है॥
--फ़ानी

मजनूं फ़रहाद :—

कुछ यही कोहकनो[15] क़ैस[16] प गुज़री होगी।
मिलती जुलती है कहानी मेरे अफ़साने से॥
- ज़हीर देहलवी

तहक़ीक़[17] हो तो जानूं के मैं क्या हूँ क़ैस क्या।
लिखा हुआ है यूं तो सभी कुछ किताब में॥
—सदरुद्दीन आज़ुर्दा

क़ैस का ज़िक्र मेरी शाने जुनूँ[18] के आगे।
अगले वक़्तों[19] का कोई बादिया पैमा[20] होगा॥
—अकबर इलाहाबादी

---

१ जंगल मे फिरने से रोकने वाला २ पीड़ा ३ कांटेका ४ ज्योति ५ मार्ग का दीप ६ अणु ७ मायाजाल ८ भ्रम और अनुमान ९ समझ का फल १० समझ ११ आरम्भ १२ भ्रम १३ सीमा १४ अनुमान १५ फ़रहाद १६ मजनू १७ छानबीन १८ दीवानगी की तड़क भड़क १९ प्राचीन काल का २० जंगल में भटकनेवाला।

क़ैस बन कर फिर न उट्ठा कोई दश्ते[1] नज्द[2] से।
आशिक़ी दुश्वार[3] है, लैला-वशी[4] मुश्किल नहीं॥
—सीमाब

महमिल[5] :—

हाय वो "शेफ़्ता" की बेताबी[6]!।
थाम लेना वो तेरे महमिल का॥
—शेफ़्ता

हाल महमिल-नशीं[7], तेरे दिल का।
कहता जाता है पर्दा महमिल का॥
—जमील मज़हरी

होते जाते हैं बन्द दीदये क़ैस[8]।
हटते जाते हैं पर्दे महमिल के॥
—अ० मन्नान बेदिल अज़ीमाबादी

उठ गया क़ैस उठ गई लैला।
पर्दा अबतक उठा न महमिल का॥
—मुज़्तर मुज़फ़्फ़रपुरी

वहशत (उन्माद) :—

क्या एरादे हैं वहशते-दिल के।
किस से मिलना है खाक[9] में मिलके॥
—नातिक़ गुलाओठी

दिल पर अपना बस चलता तो वहशत काहे को होती।
और किसी से क्या मतलब है, तू खुद क्या कहता होगा॥
—अफ़सर मेरठी

---

१ जंगल २ अरब का एक प्रदेश जहाँ मजनू रहता था ३ कठिन ४ प्रेयसी बनना ५ ऊँट पर कसने का कजावा जिसमें स्त्रियाँ पर्दा डालकर बैठती हैं ६ तड़प ७ महमिल मे बैठनेवाले ८ मजनू की आँखें ९ धूल।

लोग कहते हैं मुझे तुमसे मुहब्बत है मगर।
तुम जो कहते हो के वहशत है, तो वहशत होगी ॥

—अदम

चैन आएगा कहाँ दिल को ख़ुदा ही जाने।
दश्त[1] से भी वही वहशत है जो थी घर से मुझे ॥

—वहशत कलकतवी

सरापाये महबूब

(प्रियतम का सर्वांग)

अब्रू (भवें):—

तेरे अब्रूए पैवस्ता[2] का आलम[3] में फ़साना[4] है।
किसी ओस्ताद शायर का ये बैत[5] आशिक़ाना[6] है।

—आतिश

ख़मे अब्रू[7] तेरा जब यार ! नज़र आता है।
कोई खैंचे हुए तलवार नज़र आता है ॥

—ज़ौक़

क़त्ल को बस है ख़ंजरे अब्रू[8]।
हाजते[9] तेग़े आबदार[10] नहीं ॥

—गंगालाल दिमाग़

ज़ुल्फ़ों[11] की हर गिरह को अता[12] की मताए दिल[13]।
अब्रू की हर शिकन[14] को रगेजाँ[15] बना दिया ॥

—जोश मलीहाबादी

---

१ जंगल २ जुटी हुई भवें ३ संसार ४ चर्चा ५ एक शेर जिसमें दो मिसरे होते हैं। ६ शृंगार रस से युक्त ७ भौं के बल ८ भौं की तलवार ९ आवश्यकता १० तेज़ तलवार ११ बाल की लटों १२ दिया १३ दिल की पूंजी १४ सिलवट १५ प्राण की नाड़ी।

यादे अब्रू[1] में है "अकबर" महव[2] क्यों।
कब तेरी ये कज ख़यालो[3] जायगी॥

—अकबर इलाहाबादी

आँखें :—

वो चश्मे मस्त[4], वो तिरछी नज़र, मआज़ल्लाह[5]।
हया[6] हज़ार भरी है, मगर मआज़ल्लाह!॥

—शाद अज़ीमाबादी

मीर उन नीमबाज़[7] आँखों में।
सारी मस्ती शराब की सी है॥

—मीर

खिलना कम कम कली ने सीखा है।
उसकी आँखों की नीमबाज़ी से॥

—मीर

आफ़त की सुफ़ैदी[8] है, क़यामत[9] की स्याही[10]।
नैरंगे दो आलम[11] मुझे दिखला गईं आँखें॥

—अमीर मीनाई

उन रस भरी आँखों में हया[12] खेल रही है।
दो ज़हर के प्यालों में क़ज़ा[13] खेल रही है॥

—अख़्तर शीरानी

जो फिरी तो तेग़े क़ज़ा[14] बनी, जो मिली तो आबेबक़ा[15] बनी।
ये अजब तरह का कमाल है तेरी चश्मे[16] इशवातराज़[17] में॥

—वली काकवी

---

१ भौं की याद २ लीन ३ टेढी समझ ४ मतवाले नयन ५ ईश्वर बचावें ६ लज्जा ७ अधखुली ८ उज्ज्वलता ९ बलाकी १० कालिमा ११ दोनों लोक की विचित्रता १२ लज्जा १३ मृत्यु १४ मृत्यु की तलवार १५ अमृत १६ आँख १७ अदाओं से भरी।

ये तेरी चश्मे फ़सूंगर[1] में कमाल अच्छा है।
एक का हाल बुरा एक का हाल अच्छा है॥

—जलाल

कैफ़ीयते चश्म[2] उसकी, मुझे याद है "सौदा"।
साग़र को मेरे हाथ से लेना के चला[3] मैं॥

—सौदा

देखो तो चश्मे यार[4] की जादू निगाहियाँ[5]।
हर एक को है गुमां[6] के मुख़ातिब[7] हमीं रहे॥

—हसरत

बसी हुई है जिन आँखों में शोख़ियों की बहार।
अदाए शर्म[8] उन्हें, क्यों सिखाइ जाती है॥

—हसरत

न और खोल अभी नीम बाज़[9] आँखों को।
तेरे निसार,[10] ये जादू अभी जगाए जा॥

—फ़िराक़ गोरखपुरी

जीने न देगीं आँखें तेरी, दिलरुबा[11] मुझे।
इन खिड़कियों से झाँक रही है क़ज़ा[12] मुझे॥

—शम्स लखनवी

जिस तरफ़ तू ने किया एक इशारा न जिया।
न जिया, आह! तेरी चश्म[13] का मारा न जिया॥

—अज्ञात

---

१ जादू भरे नयन २ आँखों की मादकता ३ मुझे मूर्च्छा आने लगा ४ प्रेयसी की आंख ५ नज़र की जादूगरी ६ खयाल ७ सम्बोधित ८ लज्जा के भाव ९ अधखुली १० तेरे निछावर ११ हे हृदयेश १२ मृत्यु १३ आंख।

तेरी आँखें तो बहुत अच्छी हैं।
सब इसे कहते हैं बीमार, ये क्या ॥

—दाग़

तुम्हारी आँख भी कितनी हसीं मालूम होती है।
के बे सुरमा लगाए सुर्मगीं[1] मालूम होती हैं॥

—तमन्ना अमादी फुलवारवी

दूर बहुत भागो हो हमसे, सीख तरीक़[2] ग़ज़ालों[3] का।
वहशत करना शेवा[4] है कुछ अच्छी आँखों वालों का॥

—मीर

उन मस्त अँखड़िओं को कवंल कह गया हूँ मैं।
महसूस कर रहा हूँ ग़ज़ल कह गया हूँ मैं॥

—अदम

आईनए रुख़ (मुख का आईना) :—

रुख़े रौशन[5] के आगे शमअ[6] रख कर वो ये कहते हैं।
उधर जाता है देखें, या इधर परवाना[7] आता है॥

—दाग़

आखें स्यह मस्त, चेहरा किताबी।
बादा[8] शबाना[9] जाम[10] आफ़ताबी[11]॥

—हफ़ीज़ जालंधरी

ये नूर[12] है [13]रुए महजबीं का के हो ख़जिल[14] चाँद चौदहवीं का।
जो हलक़ा[15] है ज़ुल्फ़े अम्बरीं[16] का वो एक नाफ़ा[17] है [18]मुश्के चीं का॥

—नासिख़

---

१ सुरमा लगाई हुई २ ढग ३ मृग ४ दस्तूर ५ दमकता चेहरा ६ दीपक ७ पतंग। ८ शराब ९ रात की १० पात्र ११ सूर्य की तरह १२ प्रकाश १३ चांद सा चेहरा १४ लज्जित १५ गिरह १६ अम्बर जैसे काले बाल १७ कस्तूरी १८ चीन का मुश्क।

आइना रुख़ को तेरे अहले सफ़ा[1] कहते हैं।
इस प दिल अटके है मेरा, इसे क्या कहते हैं॥
— जुरअत

तेरी सूरत से किसी की नहीं मिलती सूरत।
हम जहाँ[2] में तेरी तस्वीर लिए फिते है॥
—नासिख़

बड़े सीधे साधे, बड़े भोले भाले।
कोई देखे इस वक़्त चेहरा तुम्हारा॥
—आग़ा शायर देहलवी

पा व कफ़ेपा (पांव और तलवा) :—

रंगीनियों की जान है वोह पाये नाज़नी[3]।
मेरी निगाहे शौक़[4] जहाँ सर के बल गई॥
—हसरत

भीगे से तेरा रंगे हेना[5] और भी चमका।
पानी में निगारी[6] कफ़ेपा[7] और भी चमका॥
—मुसहफ़ी

पसीना :—

अरक़[8] है मुँह प तेरे या गुलाब टपके है।
अजब[9] है मुझको के शोले[10] से आब[11] टपके है॥
— मुहम्मद हुसैन कलीम

आरिज़[12] उसके थे अरक़ से यूँ सेहर[13] भीगे हुए।
जिस तरह शबनम[14] से दो गुल बर्गेतर[15] भीगे हुए॥
—वलीउल्लाह मोहिब

---

१ सफ़ाई पसन्द करने वाले २ संसार ३ कोमल पाँव ४ अभिलाषा भरी नज़र ५ मेहदी का रंग ६ चित्र जैसा ७ तलवा ८ पसीना ९ आश्चर्य १० अग्निशिखा ११ पानी १२ गाल १३ सुबह १४ ओस १५ खिले हुए गुलाब की दो पंखुड़ियाँ।

उस रूए ताबनाक[1] प हर क़तरए[2] अरक़[3]।
गोया के एक सितारा है सुबहे बहार[4] का॥
—ज़ौक़

तनासुबे आज़ा (शरीर के अवयव) :—

वो मस्तीए क़ामत[5] के घटा झूम के उट्ठे।
वो चुस्तिए[6] हर अज़्व[7] के बिजुली को ग़श आये॥
—फ़िराक़ गोरखपुरी

फ़क़त[8] तुझ में अनासिर[9] ने अजब तरकीब पाई है।
बदन शफ़्फ़ाफ़[10] शाने[11] गोल, क़द मौज़ूँ[12] कमर पतली॥
—औसत अली रश्क

समरे जवानी (स्तन) :—

किसी के महरमें आबेरवाँ[13] की याद आई।
होबाब[14] के जो बराबर कभी होबाब आया॥
—आतिश

उड़ाये जाते हैं आशिक़ के दिल को सीनाज़ोरी से।
ग़ज़ब के दो उचक्के भेस में जोबन के बैठे हैं॥
—दाग़

जबीं (ललाट) :—

ग़ज़ब की इश्वगरी[15] रूए खश्मगीं[16] में रही।
करिश्मा[17] बनके शिकन[18] यार की [19]जबीं में रही॥
रैयाज़ खैराबादी

---

१ दमकता हुआ चेहरा २ बूंद ३ पसीना ४ वसन्त प्रभात ५ क़द ६ चंचलता ७ अंग ८ केवल ९ पंचतत्व १० स्वच्छ ११ कन्धा १२ मुनासिब १३ आबे खाँ कपड़ा की अँगिया १४ बुलबुला १५ नाज़ो अदा १६ क्रुद्ध मुख-मन्डल १७ अद्‌भुत कार्य १८ सिलवट १९ ललाट।

शिकन जब से देखी है उनकी जबीं पर।
अजब सदमा[1] है जाने[2] अन्दोहगीं[3] पर॥

—हसरत मुहानी

जिस्म (शरीर) :—

हर वज़अ[4] दिलफ़रेब[5] है हर रंग दिलपज़ीर[6]।
क्या बात है किसी के तने जामा ज़ेब की[7]॥

— हसरत मुहानी

गुलेतर[8], सर्वेरवाँ[9], नर्गिसे शहलाये चमन[10]।
सदक़े आँखों के फ़िदा क़द प निसारे[11] आरिज़[12]॥

—फ़ानी

अल्लह रे जिस्मेयार की ख़ूबी[13] के ख़ुद ब ख़ुद[14]।
रंगीनियों में डूब गया पैरहन[15] तमाम॥

—हसरत मुहानी

ख़ाल (तिल) :—

ख़ाल तेरी ब्याज़े गर्दन पर।
नुक़्तए इन्तेख़ाब[17] है गोया॥

—मीर शमशुद्दीन फ़क़ीर

कमसिनी का हुस्न था वो, ये जवानी की बहार।
था यही तिल पहले भी रुख़ पर[18] मगर क़ातिल[19] न था॥

— माजिद

---

१ शोक २ प्राण ३ दुखी ४ सजधज ५ लुभावनी ६ मन मोहक ७ ऐसा शरीर जिस पर हर तरह का लिबास खुलता हो ८ खिलाफूल ९ चलने वाला 'सर्व' का वृक्ष १० चमन में खिलनेवाला नर्गिस का फल ११ निछावर १२ गाल १३ प्रिय के शरीर का सौंदर्य १४ अपने आप १५ लेबास १६ तिल १७ चुनाव का बिन्दु १८ चेहरेपर १९ बधिक।

रुखसार (गाल) :—

है तकल्लुफ़ नक़ाब[१], वे रुखसार[२]।
क्या छुपें आफ़ताब[३] हैं दोनों ॥
—*मीर*

आरिज़े गुलगूँ[४] प उनके रंग सा एक आगया।
उन गुलों[५] को छेड़ कर मैंने गुलिस्ताँ[६] कर दिया ॥
—*असग़र गोंडवी*

जोशे सरमस्ती में[७] वो मौजे सबा की[८] छेड़ छाड़।
वो तेरे आरिज़[९] प एक हलके तबस्सुम[१०] की शिकन[११]॥
—*मुईन अहसन जज़्बी*

देखकर आये हैं क्या आरिज़ो गेसू[१२] उनके।
लोग हैरान परीशान चले आते हैं ॥
—*शब्बीर हसन नसीम भरतपुर*

ज़ुल्फ़ (बाल) :—

ज़ाहिद[१३] ने मेरा हासिले ईमाँ[१४] नहीं देखा,
रुख़ पर तेरे ज़ुल्फ़ों[१५] को परीशाँ[१६] नहीं देखा ॥
—*असग़र गोंडवी*

बल खा रहे हैं चेहरे प गेसूए पुरशिकन[१७]।
मारे - सेयाह[१८] खेल रहे हैं चिराग़ से ॥
—*अज्ञात*

ज़ुल्फ़ों वालो ! ये अन्धेर।
दोहरे दोहरे काले नाग ! ॥
—*आज़ाद अन्सारी*

---

१ मुखावरण २ गाल ३ सूरज ४ फूल जैसे गाल ५ फूलों ६ फुलवाड़ी ७ मस्ती के उमंग में ८ हवा की लहरों की ९ गाल १० मुस्कान ११ सिलवट १२ बाल १३ ईश्वर भक्त १४ धर्म का सारांश १५ मुखड़ा १६ बालों १७ बिखरे हुए १९ उलझे हुए काल १९ काले नाग।

परीशाँ हों तो[1] सुम्बुल[2], और जो बल खायें तो काले[3] हैं।
तुम्हारे गेसुओं[4] के ढंग दुनिया से निराले हैं॥

—अज्ञात

न जिया तेरी चश्म[5] का मारा।
न तेरी ज़ुल्फ़[6] का बँधा छूटा॥

—सौदा

जुनूँ अंगेज़ियाँ[7] बढ़ती चलीं हैं उसके गेसू[8] की।
बहुत से हाथ अब सरफ़े गरीबाँ[9] होते जाते हैं॥

—वहशत कलकतवी

बिखेर दे जो वो ज़ुल्फ़ों को अपने मुखड़े पर।
तो मारे शर्म के आई हुई घटा फिर जाय

—मुसहफ़ी

किसने भीगी हुई ज़ुल्फ़ों से ये झटका पानी।
झूम के आई घटा टूट के बरसा पानी॥

—आरज़ू

वो ज़ुल्फ़ें दोश[10] पर बिखरी हुई हैं।
जहाने आरज़ू[11] थर्रा रहा है॥

—जिगर मुरादाबादी

बिखर रहे हैं अभी से हयात[12] के अजज़ा[13]॥
अभी तो दोश[14] प वो काकुले दराज़[15] नहीं॥

—अली अख़्तर अख़्तर अलीगढ़ी

---

१ बिखरें तो २ एक वृक्ष जो बालों की तरह बलखाया होता है ३ नाग ४ बालों ५ आँख ६ बाल ७ पागल बना देने की शक्ति ८ बाल ९ गरीबाँ फाड़ने में लीन १० कंधा ११ अभिलाषाओं का संसार १२ जीवन १३ अंश १४ कंधा १५ लम्बे बाल।

मैं सोचता हूँ ज़माने का हाल क्या होगा।
अगर ये उलझी हुई ज़ुल्फ़ तू ने सुलझाई॥
—अहमद राही

एक न एक ज़ुल्मत[१] से जब वाबिस्ता रहना[२] है, तो 'जोश।'
ज़िन्दगी पर सायए ज़ुल्फ़े परीशाँ[३] क्यों न हो॥
—जोश मलीहाबादी

ख़याले ज़ुल्फ़े दोता[४] में 'नसीर' पीटा कर।
गया है साँप निकल अब लकीर पीटा कर॥
—शाह नसीरूद्दीन नसीर

तुम्हारी ज़ुल्फ़ ख़ुद[५] दिल माँग लेगी।
ये चोटी किस लिए पीछे पड़ी है॥
—नसीम भरतपुरी

शमीमे ज़ुल्फ़ (बालों की सुगन्ध):—

मोअत्तर[६] है उसी कूचे[७] की सूरत[८] अपना सहरा[९] भी।
कहाँ खोले हैं गेसू[१०] यार ने ख़ुश्बू कहाँ तक है॥
—शफ़क़ अमादपूरी

नहीं हवा में ये बू नाफ़ए ख़ुतन[११] की सारी।
लिपट है ये तो किसी ज़ुल्फ़े पुर्शेकन[१२] की सी॥
—नज़ीर अकबराबादी

उड़ाके निकहेत गेसूए अम्बरीं[१३] लाई।
तेरी गली से सबा[१४] मुश्क-नाब[१५] हो के फिरी।
—शफ़क़ अमादपुरी

---

१ अंधकार २ सम्बद्ध रहना ३ बिखरी लटों की छाया। ४ बलखाये हुए ५ स्वयं ६ सुगन्धित ७ गली ८ प्रकार ९ जंगल १० बाल ११ ख़ुतन देश के मृग में जो सुगन्धित कस्तुरी होती है १२ बलखाए बाल १३ अम्बर जैसे काले बालों का सुगन्ध १४ प्रभात समीर १५ कस्तूरी जैसी सुगंधित।

शौक़[1] मख़मूरे हवस[2] होने लगा।
निकहते गेसूए यार[3] आने लगी॥

—*हसरत मुहानी*

नसीमे सुबह[4] बूए गुल[5] से क्या इतराती फिरती है।
ज़रा सूंघे शमीमे ज़ुल्फ़[6], ख़ुश्बू इसको कहते हैं॥

—*अकबर इलाहाबादी*

हरीमे शौक़[7] महकता है आज तक "आबिद"।
यहां से निकहते गेसूए यार गुज़री है॥

—*आबिद अली आबिद*

गई थी कहके के लाएगी ज़ुल्फ़े यार की बू[8]।
फिरी, तो बादे सबा का दिमाग़ भी न मिला॥

—*जलाल*

शमीमे तुर्रए गेसूए यार[9] लाया हूँ।
मैं अपने साथ चमन की बहार लाया हूँ॥

—*इब्राहिम नज्म नदवी,*

ये भीनी भीनी सी मस्त ख़ुश्बू, ये हल्की हल्की सी दिलनशीं बू[10]।
यहीं कहीं तेरी ज़ुल्फ़ के पास कोई परवाना जल रहा है॥

—*अब्दुल हमीद अदम,*

चोरी कहीं खुले न नसीमे बहार की।
ख़ुश्बू उड़ाके लाई है गेसूए यार की॥

— *आग़ा हश्र काश्मीरी*

---

१ अभीलाषा २ कामवासना से मस्त ३ प्रेयसी के बालों का सुगन्ध ४ प्रभात-समीर ५ पुष्प सौरभ ६ केश सौरभ ७ अभिलाषाओं का मंदिर ८ सुगन्ध ९ प्रेयसी के लटों का सौरभ १० मन मोहक।

क़ामत (क़द) :—

दूर से जलवए[१] क़ामत ही सही।
कुछ तो दिखलाओ, क़यामत ही सही॥

—अनवर अली यास आरवी

तुम, के बैठे हुए एक आफ़त हो।
उठ खड़े हो तो क्या क़यामत हो॥

—शाह हातिम

तफ़ावुत[२] क़ामते यारो क़यामत[३] में है क्या "ममनूं"।
वही फ़ितना[४] है लेकिन याँ[५] ज़रा साँचे में ढ़लता है॥

—निज़ामुद्दीन ममनून

तसव्वुर[६] क़ामते महबूब[७] का है दीदए तर[८] को।
तरीक़े इश्क़[९] में सरवे लबे जू[१०] इसको कहते हैं॥

—अकबर इलाहाबादी

कमर :—

या तंग न कर नासेहे नादां[११] मुझे इतना।
या चलके दिखा दे देहन[१२] ऐसा कमर ऐसी॥

—पं महताबराय बेताब देहलवी,

रफ़्तार[१३] क़यामत यूं हीं क्या कम थी फिर उस पर।
एक तुर्रा है फ़ितना तेरी नाज़ुक कमरी[१४] का॥

--हसरत मुहानी,

---

१ शोभा २ फ़र्क ३ प्रेयसी का क़द और क़यामत ४ आपद ५ यहां ६ ध्यान ७ प्रेयसी का क़द ८ डबडबाई हुई आंख ९ प्रेम रीति १० स्रोत किनारे खड़ा हुआ सर्व का वृक्ष ११ मूर्ख उपदेशक १२ मुंह १३ चाल १४ कमर की कोमलता।

लबो देहन (होंठ और मुंह) :—

तुझ लब[1] की सीफ़त[2] लाले बदुख़्शां[3] से कहूँगा।
जादू हैं तेरे नैन ग़ज़ाला[4] से कहूँगा॥
वलीउल्लाह वली, दक्नी

नाज़ुकी[5] उसके लब की क्या कहिए।
पंखड़ी एक गुलाब की सी है॥
—मीर

गुलशन[6] में तेरे लबों ने गोया।
रस चूस लिया कली कली का॥
—दाग़

बातों में लब जो हिलते हैं उस ख़ुश ख़ेसाल[7] के।
हीरों की छूट पड़ती है टुकड़ों प लाल के॥
—मीर अनीस

मौजे बादा[8] रंगीं है, इस क़द्र कहाँ रंगीं।
उसके लोल लब[9] देखो जब वो मुस्कुराता हो॥
—जाफ़र अली ख़ाँ असर लखनवी

वो लब खुलें तो बिखर जायं नग़महाए एरम[10]।
वो आँख उठे तो बरस जाये कैफ़े मयख़ाना[11]॥
—रविश सिद्दीक़ी

जिन ने देखे तेरे लबेशीरीं[12]॥
नज़र उनकी नहीं शकर की तरफ़।
—मो० शाकिर नाजी

---

१ होठ २ गुण ३ बदुख़्शां देश में होने वाला मानिक ४ मृग ५ कोमलता ६ उपवन ७ शीलवान ८ मदिरा की लहर ९ मानिक जैसे होंठ १० स्वर्गीय संगीत ११ मधुशाला की मस्ती १२ मीठे होठ।

कुछ तो मिल जाए लबे शीरीं से।
ज़हर[1] खाने की इजाज़त[2] ही सही॥
—आरज़ू लखनवी

सामाने आराइश व आराइश

(शृङ्गार तथा शृङ्गार प्रसाधन)

आराइश (शृंगार):—

वो आप अपनी नज़र में समाए जाते हैं।
संवरते जाते हैं और मुस्कुराए जाते हैं॥
—मुज़्तर मुज़फ़्फ़रपुरी

याद है हंगामे आराइश[3] किसी की देख भाल।
हाय वो तन तन के क़द झुक झुक के काकुल[4] देखना॥
—मुबारक अज़ीमाबादी

दीदनी[5] था वो समां[6], तेरे निखरने की क़सम।
सकता[7] आइने का[8], जलवा[9] तेरा हैरत[10] मेरी॥
—शाद अज़ीमाबादी

वो जब तक के जुल्फ़ें सँवारा किया।
खड़ा उस प मैं जान वारा किया॥
—मीर हसन

करे है ज्यों ज्यों अपने हुस्न की वो शोख़ आराइश[11]।
हमारे इश्क़ की होती है याँ, उतनी ही अफ़ज़ाइश[12]॥
—मुसहफ़ी

---

१ विष २ आज्ञा ३ शृंगार के समय ४ बाल ५ देखने योग्य ६ दृश्य ७ गुप्त होना ८ दर्पण का ९ आभा १० आश्चर्य ११ शृंगार १२ वृद्धि।

तर्ज़ई[1] कुछ और कहती है, देखो तो आइना।
मैं क्या के आप अपने से तुम बदगुमाँ हो आज॥
—आरज़ू लखनवी

तुमको आशुफ़्ता मिज़ाजों[2] की ख़बर से क्या काम।
तुम संवारा करो बैठे हुए गेसू[3] अपना॥
—दाग़

आइना (दर्पण) :—

मुहं तकाही करे हे जिस तिस का।
हैरती[4] है ये आइना किसका॥
—मीर

समा रहे हैं मगर तेरे नौ बनौ जलवे[5]।
के बन गया है तलिस्मे बहार[6] आइना॥
—मोमिन

जब से आया है वो मुखड़ा नज़र आइने को॥
तब से अपनी भी नहीं है ख़बर आइने को॥
मजनू अज़ीमाबादी

अन्दाज़ अपना देखते हैं आइने में वो।
और ये भी देखते हैं, कोई देखता न हो॥
—निज़ाम रामपुरी

देखिएगा संभल के आइना।
सामना आज है मोक़ाबिल का[7]॥
—रेआज़ ख़ैराबादी

---

१ शृंगार २ तड़पनेवालों ३ बाल ४ देख के चकित होनेवाला ५ नई नई शोभाएँ ६ बसंत का जादू ७ बराबरी वाले का।

कहता है अक्स[1] हुस्न को रुसवा[2] न कीजिए।
हर वक़्त आप आइना देखा न कीजिए॥

—रिआज़ ख़ैराबादी

ताबे नज़्ज़ारा[3] नहीं आइना क्या देखने दूँ।
और बन जायेंगे तस्वीर जो हैरां होंगे।

—मोमिन

आइने में वो देख रहे थे बहारे हुस्न।
आया मेरा ख़याल तो शर्मा के रह गए॥

—हसरत मुहानी

आस्तीन :—

ये साअदों[4] का है, उसके आलम[5], के जिसने देखा हुआ वो[6] बेदम।
नेयामे[7] तेग़े क़ज़ाए मब्रम[8] है नाम क़ातिल की आस्ती का॥

—नासिख़

बूए दोस्त (प्रेयसी का सौरभ) :—

बदमस्त[9] जहान[10] हो रहा है।
है यार की बू हरेक शय में॥

—शेफ़्ता

सबा[11] तसद्दुक़[12] तेरे नफ़स[13] पर, चमन तेरे पैरहन[14] प क़ुर्बां[15]।
शमीमे दोशीज्गी[16] में कैसा बसा हुआ है शबाब[17] तेरा॥

—जोश मलीहाबादी

१ प्रतिबिम्ब २ बदनाम ३ दर्शन की शक्ति ४ कलाइओं ५ अन्दाज़ ६ बेजान ७ म्यान ८ अटल मृत्यु की तलवार ९ मतवाला १० ससार ११ प्रभात समीर १२ निछावर १३ सास १४ परिधान १५ न्योछावर १६ कौमार्य सौरभ १७ जवानी।

मेरी तरफ़ से सबा कहियो मेरे यूसुफ़[1] से।
निकल चली है बहुत पैरहन[2] से बू तेरी।
—आतिश

मेरा पयाम[3] सबा मेरे गुल से कह देना।
चली गई मुझे बेहोश करके बू तेरी॥
—तअश्शुक़ लखनवी

नसीम[4] तेरे शबिस्ताँ[5] से हो के गुज़री है।
मेरी सेहर[6] में महक है तेरे बदन की सी॥
—फ़ैज़ अहमद फ़ैज़

पैरहन व बूए पैरहन (परिधान तथा परिधान सौरभ):—

एक तो था आतिशे सोज़ाँ[7] बदने सुर्ख़[8] तेरा।
शोला[9] बर शोला हुआ पैरहने-सुर्ख़[10] तेरा॥
—मुसहफ़ी

यही पोशाक का है रंग तो ऐ गुल! होगा।
तिश्नए-ख़ूने-चमन[11] पैरहने सुर्ख़ तेरा॥
—मुसहफ़ी

रौनक़े-पैरहन[12] हुई ख़ूबिये-जिसमे-नाज़नीं[13]।
और भी शोख़ हो गया रंग तेरे लेबास का॥
—हसरत मुहानी

आज तक जिससे मुअत्तर[14] है मुहब्बत का मशाम[15]।
आह क्या चीज़ थी वो पैरहने यार की बू॥
—हसरत मुहानी

---

१ एक पैग़म्बर जो अत्यन्त सुन्दर थे २ परिधान ३ संदेश ४ प्रभात समीर ५ निशा विश्रान्ति स्थान ६ सुबह ७ भड़कती हुई आग ८ लाल ९ ज्वाला पर ज्वाला १० रक्त वस्त्र ११ उपवन के खून का प्यासा १२ पोशाक की शोभा १३ कोमल काया की कमनीयता १४ सुगन्धित १५ घ्राण शक्ति।

बसा हुआ है तेरे पैरहन से अपना दिमाग़।
हज़ार फूलों को सूंघा किसी में बूही नहीं॥
—शाद अज़ीमाबादी

हेना (मेंहदी)

बुताँ[१] कुर्बानिए[२] उश्शाक़[३] की तमहीद[४] करते हैं।
लगाकर मेंहदी को हाथों में ज़ालिम ईद करते हैं॥
—ग़ुलाम हैदर मजज़ूब

चश्मे-खूँबार[५] मेरी आप ने तलवों से मली।
वर्ना ऐसा भी कहीं रंगे हेना होता है॥
—अज्ञात

हेनाए-नाख़ुने-पा[६] हो के हल्क़ए-सरे ज़ुल्फ़[७]।
छुपाओ लाख ये जादू निकल ही आते है॥
—मु: दीन तासीर

तन्हा[८] न वो हाथों कि हेना लेगइ दिल को।
मुखड़े के छुपाने कि अदा लेगइ दिल को॥
—मुसहफ़ी

मेंहँदी ने ग़ज़ब दोनों तरफ़ आग लगा दी।
तलवों में उधर और इधर दिल में लगी है॥
—अज्ञात

अजब रेसाइए-क़िस्मत[९] है ऐ हेना तेरी।
चमन जो छूट गया दस्ते-नाज़नीं[१०] में रही॥
—रयाज़ ख़ैराबादी

१ सुन्दर रूप वाले २ बध ३ प्रेमियों ४ भूमिका ५ खूब रोनेवाली आँख ६ पाँव के नाख़ून की मेंहदी ७ बालों की गिरहें ८ अकेले ९ सौभाग्य १० प्रेयसी के हाथ।

दामने महबूब (प्रेयसी का दामन) :—

यूं तो हर दर प लहकते नज़र आए दामन।
खींचते नाज़ से जिसको वही दामन न मिला ॥

—अख़्तर शीरानी

दुपट्टा :—

आँचल ढलारहा मेरे मस्ते-शबाब[1] का।
ओढ़ा गया कभी न दुपट्टा संभाल के ॥

—रेयाज़ ख़ैराबादी

ये सैर[2] है के दुपट्टा उड़ा रही है हवा।
छुपाते हैं जो वो सीना, कमर नहीं छुपती ॥

—दाग़

रंगे पान (पान का रंग) :—

पान खाने कि अदा ये है तो एक आलम[3] को।
खूँ रुलाएगा मेरी जाँ देहने[4] सुर्ख़[5] तेरा ॥

—मुसहफ़ी

क़यामत-ख़ेज़[6] है सुर्ख़ी ये पानों की लबे-तर[7] में।
ख़ुदा जाने ये दोनों लाल[8] हैं किसके मुक़द्दर[9] में ॥

—सफ़ीर बिल्ग्रामी

सुर्ख़िए-लब[10] हर आन में कुछ है।
यूं कुछ और रंग, पान में कुछ है ॥

—म: सज्जाद, सज्जाद

---

१ जवानी से मतवाला २ तमाशा ३ संसार ४ मुंह ५ लाल ६ प्रलयकारी ७ भीगे होंठ ८ मानिक ९ भाग्य १० होठों की लालिमा ।

मिस्सी-आलूदा-लब[1] पर रंगे पाँ है।
तमाशा है तहे-आतिश[2] धुआँ है॥
—नासिख़

देखना ऐ 'ज़ौक़' होंगे आज फिर लाखों के खूँ।
फिर जमाया उसने लाले लब प लाखा पान का॥
—ज़ौक़

गुस्ल (स्नान):—
कनार[3] खोल के हसरत[4] से रह गया दरिया।
हुबाब[5] फूट के रोए जो तुम नेहा के चले॥
—आतिश

नेहाने में जो लहराती है ज़ुल्फ़े यार पानी में।
तड़पने लगती हैं पानी प मौजें मछलियाँ होकर।
—ख़्वाजा वज़ीर

शोख़ी, अदाओ नाज़

(चंचलता और हावभाव)

अदाओ नाज़:—
हमारी आँखों में आओ तो हम दिखाएँ तुम्हें।
अदा तुम्हारी, जो तुम भी कहो के हाँ कुछ है!॥
—रियाज़ ख़ैराबादी

ये बात, ये तबस्सुम[6] ये नाज़, ये निगाहें।
आख़िर तुम्हीं बताओ क्योंकर न तुम को चाहें॥
—जोश मलीहाबादी

मुझसे इर्शाद ये होता है[7] के तड़पा न करो!।
कुछ तुम्हें अपनी अदाओं प नज़र है के नहीं?॥
—जलाल मानिकपुरी

---

१ मिस्सी लगा हुआ होठ २ आग के नीचे ३ गोद ४ निराशा ५ बुलबुले ६ मुस्कान ७ कहा जाता है।

तलब करती है[१] उसकी हर अदा दिल।
कहाँ से लाऊँ इतने या खुदा! दिल॥

—जलाल

साबित[२] अपना न हुआ खून किसी पर दमे हश्र[३];
नाज़ ने ग़म्ज़े[४] प, ग़म्ज़े ने अदा पर रक्खा॥

—असीर लखनवी

अदा वो क्या के चुराये न दिल को दम-भर[५] में।
वो हुस्न क्या जो मअन[६] दिलनशीं न हो जाए[७]॥

—अता काकवी

अदाए बेनाम:—

हम जिस प मर रहे हैं वो है बात ही कुछ और।
आलम[८] में तुमसा लाख सही तू मगर कहाँ॥

—हाली

आफ़त तो है वो नाज़ भी, अन्दाज़ भी लेकिन।
मरता हूँ मैं जिस पर वो अदा और ही कुछ है॥

—अमीर मीनाई

इश्वा[९] भी है, शोख़ी भी, तबस्सुम[१०] भी हया[११] भी।
ज़ालिम में और एक बात है इन सब के सिवा[१२] भी॥

—अकबर इलाहाबादी

अहले-नज़ार[१३] की जान है जिस चीज़ पर निसार[१४]।
एक बात उनमें और भी कुछ है वराएनाज़[१५]॥

—हसरत मुहानी

---

१ मांगती है २ प्रमाणित ३ क़यामत में ४ नखरे ५ क्षण भर में ६ तुरंत ७ दिल में न बैठ जाय ८ संसार ९ नाज़ १० मुस्कान ११ लज्जा १२ अतिरिक्त १३ पारखी १४ न्योछावर १५ नाज के सिवा।

अल्हड़पन :—

घर से हर वक़्त निकल आते हो खोले हुए बाल।
शाम देखो न मेरी जान, सवेरा देखो।।

—हसरत मुहानी

एक तीर लगाना जानते हो।
देखो न जिगर न दिल न सीना।।

—मुबारक अज़ीमाबादी

उमंगें :—

मासूम[१] उमंगें झूल रही हैं दिलदारी के झूले में।
ये नन्ही कलियाँ क्या जानें कब खिलना कब मुरझाना है।।

—हफ़ीज़ जालंधरी

आँसू :—

करे है क़त्ल लगावट में तेरा रो देना।
तेरी तरह कोई तेगे-नजर[२] को आब तो दे[३]।।

—ग़ालिब

क्या मेरे हाल प सचमुच उन्हें ग़म[४] था क़ासिद[५]!।
तू ने देखा था सितारा सरे-मिज़गाँ[६] कोई।।

—असग़र गोंडवी

नहीं मालूम किस-किस का लहू पानी हुआ होगा।
क़यामत है सरिश्क-आलूद-होना[७] तेरे मिज़गाँ[८] का।।

—ग़ालिब

देख सकता है भला कौन ये प्यारे आँसू।
मेरी आँखों में न आ जायें तुम्हारे आँसू।।

—अख़्तर शीरानी

---

१ भोले भाले २ नज़रों की तलवार ३ तेज़ तो करे ४ शोक ५ पत्रवाहक ६ पलकों पर ७ आँसुओं से भीग जाना ८ पलक।

क्या जानिये के दिल पर गुज़रे है 'मीर' क्या क्या।
करता है बात कोई आँखें पुरआब कर-कर[1] ॥
—*मीर*

उमंड आया दिल उनका भी मेरे गर्दन झुकाने पर।
गले में मेरे बाँहें डालकर किस प्यार से रोये ॥
—*शाद अज़ीमाबादी*

अँगड़ाई :—

इश्क़ पर भी छागईं रानाइयाँ[2] ।
उफ़ ! तेरी तोड़ी हुई अँगड़ाइयाँ ॥
—*आरज़ू लखनवी*

अपने मरकज़[3] की तरफ़ माएले परवाज़[4] था हुस्न।
भूलता ही नहीं आलम[5] तेरी अँगड़ाई का ॥
—*अज़ीज़ लखनवी*

लबरेज़े तमव्वुज[6] था एक-एक ख़ते-पैमाना[7] ।
महफ़िल से जो उठ्ठे वो लेते हुए अँगड़ाई ॥
—*फ़ानी*

तोड़ डाला तेरे दीवानों ने जंजीरों को।
उफ़ रे मस्ताना वो आलम तेरी अँगड़ाई का ॥
—*बेताब अज़ीमबादी*

हस्बे-मनशा[8] दिले-पुर-शौक़[9] की बातों का जवाब।
दे दिया शर्म में डूबी हुई अँगड़ाई ने ॥
—*जाफ़र हुसैन मंज़र लखनवी*

---

१ आंसु भर के २ सुन्दरताएँ ३ केन्द्र ४ उड़नेवाला ५ दृश्य ६ लहरों से लबालब ७ मधुपात्र की रेखाएँ ८ इच्छानुसार ९ अभिलाषा पूर्ण हृदय।

जब तक़ाज़ा नींद का हो और तनहाई[1] न हो।
उफ़ ! वो कैफ़ियत[2] के हो भी, और अँगड़ाई न हो॥

—*असर लखनवी*

इलाही[3] क्या इलाक़ा[4] है, वो जब लेता है अँगड़ाई।
मेरे सीने के सब ज़ख्मों के टाँके टूट जाते हैं॥

—*अज्ञात*

अँगड़ाई लेने पाये न थे वो उठाके हाथ।
देखा जो मुझ को छोड़ दिये मुस्कुरा के हाथ॥

—*निज़ाम रामपुरी*

बाँकपन :—

सूरत में तो कहता नहीं ऐसा कोई कब है।
एक धज है के वो क़हर है, आफ़त है, ग़ज़ब है॥

—*सौदा*

तुझ प है इन दिनों में, नामे ख़ुदा।
कुछ अजब धूम धाम का आलम॥

—*सुलेमान शिकोह सुलेमान*

क्यों सादगी में तौर[5] कुछ अब बाँकपन के हैं।
कल तक तो सादगी की अदा बाँकपन में थी॥

—*फ़ानी*

ग़म्ज़े[6] भी हों ख़ूँरेज़[7] निगाहें भी हो सफ़्फ़ाक[8]।
तलवार के बाँधे से तो क़ातिल[9] नहीं होता॥

—*दाग़*

---

१ एकांत २ हालत ३ हे प्रभु ! ४ सम्बन्ध ५ ढंग ६ हाव-भाव ७ रक्तप ८ निर्मम ९ बधिक ।

बदगुमानी (दुर्भावना) :—

कहाँ जवाब है इस हद की बदगुमानी का।
के शुक्र भी जो करूँ आय उसे गिला[१] कहिये॥
—शाद अज़ीमाबादी

मेरे मरने की ख़बर सुन के ख़फ़ा हो जाना।
बदगुमानी ये नहीं तो इसे क्या कहते हैं॥
—फ़ानी

उधर वो बदगुमानी है, इधर ये नातवानी[२] है।
न पूछा जाय है उनसे न बोला जाय है हम से॥
—ग़ालिब

बरहमीओ अताब (क्रोध और आवेश) :—

मैं इस बरहम-मिज़ाजी[३] के [४]तसद्दुक़।
उलझते हैं वो ज़ुल्फ़े-अम्बरी[५] से॥
—अज्ञात

लाखों लगाओ एक चुराना निगाह का।
लाखों बनाओ एक बिगड़ना अताब[६] में॥
—ग़ालिब

नहीं छुपता तेरे अताब का रंग।
के बदलने लगा नक़ाब[७] का रंग॥
—रियाज़ ख़ैराबादी

बिगड़े हुए हैं, ज़िद प हैं, कौन उनसे क्या कहे।
इस वक़्त बात बात के दफ़्तर बनायेंगे।
—अनीसुल हसन बिसमील मुहानी

---

१ शिकायत २ दुर्बलता ३ क्रोधी स्वभाव ४ न्योछावर ५ कस्तूरी जैसे काले केश ६ आवेश ७ मुखावरण।

लबों[1] प मौजे तबस्सुम,[2] निगह में बर्क़ेग़ज़ब[3]।
कोई बताये ये अन्दाज़े[4]बरहमी क्या है॥
—*जिगर मुरादाबादी*

बिगड़े हुए हैं आज, ख़ुदा ख़ैर ही करे।
कुछ बल[5] भी है जबीं[6] प कुछ अबरू[7] प ख़म[8] भी है॥
— *निज़ाम रामपुरी*

वो बात सारे फ़साने[9] में जिसका ज़िक्र[10] नहीं।
वो बात उनको बहुत नागवार[11] गुज़री है।
—*फ़ैज़ अहमद फ़ैज़*

छेड़ा है दस्ते शौक़[12] ने मुझसे ख़फ़ा हैं वो।
गोया के अपने दिल प मुझे इख़्तियार[13] है॥
—*हसरत मुहानी*

ग़ुस्से में तेरे हमने बड़ा लुत्फ़[14] उठाया।
अब तो अमदन[15] और भी तक़सीर[16] करेंगे॥
—*इन्शा*

उनको आता है प्यार पर ग़ुस्सा।
मुझको ग़ुस्से प प्यार आता है॥
—*जिगर मुरादाबादी*

शिकवे[17] के बदले किया शुक्रे सितम[18]।
फिर ख़फ़ा हैं, क्या मज़े की बात है॥
—*दाग़*

---

१ होंठ २ मुस्कान की लहरें ३ क्रोध की बिजली ४ क्रोध ५ सिलवट ६ ललाट ७ भौं ८ खिंचाव ९ कहानी १० चर्चा ११ नापसन्द १२ अभिलाषा के हाथ १३ अधिकार १४ आनन्द १५ जानबूझकर १६ अपराध १७ शिकायत १८ अनर्थ।

अर्ज़े-मतलब[1] प बुरा मान के ग़ुस्सा कैसा।
'शाद' दीवाना भी तेरा है गदा[2] भी तेरा॥

—शाद अज़ीमाबादी

बिगड़ बैठे अबस[3] ज़िक्रे-अदू[4] पर।
सुना क्या आपने, मैं ने कहा क्या॥

—दाग़

कुछ उनके मेह्‌रो-लुत्फ़[5] ने मशहूर[6] कर दिया।
कुछ रंजिशो अताब[7] ने रुसवा[8] किया मुझे॥

—दाग़

मिलते हैं इस अदा से के गोया ख़फ़ा नहीं।
क्या आप की निगाह से हम आशना[9] नहीं॥

—हसरत मुहानी

थे जो ख़फ़ा वो हैं ख़फ़ा आज तक।
क्यों हैं ख़फ़ा, ये न खुला आज तक॥

—असर लखनवी

निगाहे यार हम से आज बे-तक़्सीर[10] फिरती है।
किसी की कुछ नहीं चलती है जब तक़दीर[11] फिरती है[12]॥

—ग़ाफ़िल

डरूँ मैं किस लिए ग़ुस्से से, प्यार में क्या था?।
मैं अब ख़िज़ाँ[13] को जो रोऊँ, बहार[14] में क्या था?॥

—फ़ज़ले अली मुमताज़

---

१ भावाभिव्यक्ति २ भिक्षुक ३ व्यर्थ ४ शत्रु की चर्चा ५ दया और मेहरबानी ६ प्रसिद्ध ७ आवेश ८ बदनाम ९ परिचित १० निरपराध ११ भाग्य १२ विरुद्ध हो जाती है १३ पतझड़ १४ बसंत।

तू तो जिस ख़ाक[1] को चाहे वो बने बन्दए पाक[2]।
मैं ख़ुदा किसको बनाऊँ जो ख़फ़ा तू हो जाए॥
—बर्क़

बे एतनाई (विमुखता) :—

जैसे हम सूरत-आशना[3] ही नहीं।
सदक़े[4] इस मुँह छुपा के जाने के॥
—आरज़ू लखनवी

हम बसों प वाँ गये पर उन ने।
ये भी न कहा के तू कहाँ था॥
—रासिख़ अज़ीमाबादी

ओ आँख चुरा के जाने वाले।
हम भी थे कभी तेरी नज़र में॥
—जलील मानिकपुरी

बैठे तकते तो हैं कनखियों से।
ये नहीं पूछते खड़े क्यों हो॥
—आरज़ू लखनवी

वो अपने दर[5] के फ़क़ीरों[6] से पूछते भी नहीं।
के तुम लगाये हुए किसकी आस बैठे हो॥
—तअश्शुक़

अब वो मिलते भी हैं तो यूँ के कभी।
हम से कुछ वास्ता[7] न था गोया॥
—हसरत मुहानी

---

१ धूल २ पवित्र मानव बन जाय ३ परिचित ४ न्योछावर ५ द्वार ६ भिक्षुकों ७ सम्बन्ध।

नज़र जिसकी तरफ़ करके निगाहें फेर लेते हो।
क़यामत तक फिर उस दिल की परेशानी नहीं जाती ॥
—आनन्दनारायण मुल्ला

यूँ याद आओगे हमें इस्ला[1] ख़बर न थी।
यूँ भूल जाओगे हमें वहमो-गुमाँ[2] न था ॥
—आज़ाद अंसारी

मैं अपने हाल से ख़ुद बेख़बर हूँ।
तुम्हारी कमनिगाही[3] का गिला[4] क्या ॥
—सीमाब

आपके होते दुनिया वाले मेरे दिल पर राज करें।
आपसे मुझको शिकवा[5] है, ख़ुद आपने बे परवाई की ॥
—क़तील शेफ़ाई

सितम[6] समझे हुए थे हम तेरी बे-एतनाई[7] को।
मगर जब ग़ौर से देखा तो एक लुत्फ़े[8] नेहाँ[9] पाया ॥
—हसरत मुलनी

पशीमानिए जफ़ा (अनर्थों पर लज्जित होना) :—

की मेरे क़त्ल[10] के बाद उसने जफ़ा[11] से तौबा[12]।
हाय उस ज़ूद-पशीमाँ[13] का पशीमाँ[14] होना ॥
—ग़ालिब

रूह[15] अरबावे-मुहब्बत[16] की लरज़ जाती है।
तू पशीमान न हो अपनी जफ़ा[17] याद न कर ॥
—फ़ानी

---

१ बिल्कुल २ संदेह तथा अनुमान ३ विमुखता ४ शिकायत ५ शिकायत ६ अनर्थ ७ विमुखता ८ दया ९ निहित १० बध ११ अनर्थ १२ पश्चात्ताप १३ तुरत लज्जित होनेवाला १४ लज्जित १५ आत्मा १६ प्रेमी जन १७ अनर्थ।

ग़मे पिनहाँ[१] की न हो जाये कहीं पर्दादरी[२] ।
आह रहने दो ये अन्दाज़े पशैमाँ नज़री[३] ॥
—रविश सिद्दीक़ी

आप पछताएँ नहीं, जौर[४] से तौबा न करें ।
आप के सर की क़सम 'दाग़' का हाल अच्छा है॥
—दाग़

जफ़ा से अपनी पशीमाँ न हो, हुआ सो हुआ ।
तेरी बला से मेरे जी प जो हुआ सो हुआ ॥
—अब्दुल हई ताबाँ

दे तेरा हुस्ने तग़ाफ़ुल[५] जिसे जो चाहे फ़रेब[६] ।
वरना तू और जफ़ाओं प पशीमाँ होना !!
—फ़ानी

वो आये हैं पशीमाँ लाश[७] पर अब ।
तुझे ऐ ज़िन्दगी लाऊँ कहाँ से ॥
—मोमिन

तबस्सुम (मुस्कान):—

तुम ने हर जर्रे में[८] बरपा कर दिया तूफ़ाने शौक़[९] ।
एक तबस्सुम, इस क़दर जलवों की तुग़यानी[१०] के साथ ॥
—अख़्तर अलीगढ़ी

एक बर्क़े-तपाँ[११] है के तकल्लुम[१२] है तुम्हारा ।
एक सेहर[१३] है लरज़ाँ[१४] के तबस्सुम है तुम्हारा ॥
—हसरत मुहानी

---

१ गुप्त शोक २ अनावरण ३ नज़रों में पश्चात्ताप का भाव ४ अनर्थ ५ उपेक्षा का सौन्दर्य ६ धोखा ७ शव ८ कण-कण में ९ अभिलाषाओं की आँधी उठा दी १० शोभाओं की बाढ़ ११ तड़पती हुई बिजली १२ वार्ता १३ जादू १४ थर-थराता हुआ ।

तबस्सुम था इस रंग से उनके लब[1] पर।
मैं समझा कोई जाम[2] छिलका रहे हैं।

—जलील मानिकपुरी

एक बर्क़[3] सरे तूर[4] है लहराई सी।
उफ़! वो तेर होंठों प हँसी आई हुई सी॥

—फ़ानी

एक तबस्सुम में किया ख़ल्क़[5] को सारी तस्ख़ीर[6]।
मुस्कुराना है तेरा या के कोई अफ़सूँ[7] है।

—ज़िया उद्दीन ज़िया

ग़ज़ब वो देखना नीची नज़र से।
सितम वो मुस्कुराना मुँह फिरा कर॥

—निज़ाम शाह रामपुरी

हाय वो तेरे तबस्सुम की अदा वक़्ते सहर[8]।
सुबह के तारों ने अपनी जान तक करदी नेसार[9]॥

—जज़्बी

तुम तो निगाह फेर के नाज़ से मुस्कुरा दिए।
शीशाए आरज़ू[10] मगर टूट के क्या से क्या हुआ॥

—असर सहबाई

हाथ में लेके जामे मय[11] उसने जो मुस्कुरा दिया।
अक़्ल[12] को सर्द[13] कर दिया रूह[14] को जगमगा दिया।

—असग़र गोंडवी

---

१ होंठ २ मधुपात्र ३ बिजली ४ तूर पर ५ संसार ६ मुग्ध ७ जादू ८ प्रातःकाल ९ न्योछावर १० कामनाओं का शीशा ११ मधुपात्र १२ बुद्धि १३ ठंढा १४ आत्मा।

वो तबस्सुम भी क़यामत है तेरा बादे-जफ़ा[1]।
तू ने दी है जिसे ख़िदमत[2] नमक-अफ़शानी[3] की ॥

—हसरत मुहानी

लुटा दे दौलते-कौनैन[4], और मेरे लिए।
बस एक तबस्सुमे आजिज़-नवाज़[5] रहने दे ॥

—जिगर मुरादाबादी

गुज़र रहा है इधर से तो मुस्कुराता जा।
चिराग़ मज्लिसे-रूहानिओं[6] जलाता जा ॥

—जोश मलीहाबादी

ये तो ठीक है के तेरी जफ़ा भी है एक अता[7] मेरे वास्ते।
मेरी हसरतों[8] की क़सम तुझे, कभी मुस्कुरा के भी देख ले ॥

—आनन्द ना० मुल्ला

लो तबस्सुम भी शरीके[9] निगहे नाज़[10] हुआ।
आज कुछ और बढ़ा दी गई क़ीमत मेरी ॥

—फ़ानी

तबस्सुम उनके लब पर एक दिन वक़्ते-अताब[11] आया।
उसी दिन से हमारी ज़िन्दगी में इन्क़ेलाब[12] आया ॥

—नातिक़ लखनवी

यूँ देख के मुझ को मुस्कुराना !।
फिर तुम को मैं बे खबर कहूँगा ॥

—निज़ाम रामपुरी

---

१ अनर्थ के बाद २ सेवा ३ नमक छिड़कना ४ सभी लोक की सम्पत्ति ५ दीनों पर दया करनेवाली ६ कल्पनानगर के निवासियों की सभा ७ देन ८ अभिलाषाओं ९ सम्मिलित १० नाज़भरी दृष्टि ११ आवेश के समय १२ परिवर्तन ।

नहीं ऐ हम-नफ़स[1] बे वजह मेरी गिरिया सामानी[2]।
नज़र अब वाक़िफ़े राज़े तबस्सुम[3] होती जाती है।।
— अली अख्तर अख्तर

अबस[4] तुम अपनी रुकावट से मुँह बनाते हो।
वो आई लब प हंसी, देखो मुस्कराते हो!।।
—ज़ौक़

तजाहुल (अनजान बनना) :

अपनी सूरत को जो कहते हो ये सूरत क्या है। ✓
तुमको यूसुफ़[5] कहें हम इसकी ज़रूरत क्या है?।।
— मुबारक अज़ीमाबादी

अनजान तुम बने रहे ये और बात है। ✓
ऐसा तो क्या है तुम को हमारी ख़बर न हो।।
—मन्नान बेदिल अज़ीमाबादी

तग़ाफ़ुल (उपेक्षा) : --

है वहाँ शाने-तग़ाफ़ुल[6] को जफ़ा से भी गुरेज़[7]।
इल्तेफ़ाते[8] निगहे यार[9] कहाँ से लाऊँ।।
—हसरत मुहानी

नज़रे तग़ाफ़ुले यार का गिला[10] किस ज़बाँ से करूँ अदा।
के शराबे हसरतो आरज़ू[11] खुमे[12] दिल में थी सो भरी रही
— सिराज औरंगाबादी

दिल गवारा नहीं करता है शिकस्ते-उम्मीद[13]। ✓
हर तग़ाफ़ुल प नवाज़िश[14] का गुमाँ[15] होता है।।
—रविश सिद्दीक़ी

---

१ साथी २ क्रंदन ३ मुस्कान के भेद मे परिचित ४ व्यर्थ ५ एक पैगम्बर जो अत्यन्त सुन्दर थे ६ उपेक्षा की शान ७ विमुखता ८ आकृष्टि ९ प्रेयसी की दृष्टि १० प्रेयसी की उपेक्षा दृष्टि की शिकायत ११ इच्छाओं और कामनाओं की मदिरा १२ मधुपात्र १३ आस टूटना १४ कृपा १५ अनुमान।

एक तर्ज़-तग़ाफ़ुल[१] है सो वो उनको मुबारक।
एक अर्ज़े तमन्ना[२] है सो हम करते रहेंगे॥

—फ़ैज़ अहमद फ़ैज़

"सौदा" का हाल तु ने न देखा के क्या हुआ।
आइना लेके आप को देखे है तू, हनोज़[३]॥

—सौदा

आने में सदा देर लगाते ही रहे तुम।
जाते रहे हम जान से आते ही रहे तुम॥

—रासिख़ अज़ीमाबादी

नेहाँ[४] शाने तग़ाफ़ुल में है रमज़े इमतेयाज़[५] उसका।
ब अन्दाज़े जफ़ा[६] है इल्तेफ़ाते दिल नवाज़[७] उसका॥

—हसरत मुहानी

सादगी ओ पुरकारी[८] बेख़ुदी[९] ओ होशियारी।
हुस्न को तग़ाफ़ुल[१०] में जुरअत-आज़माँ[११] पाया॥

—ग़ालिब

फिर और तग़ाफ़ुल का सबब[१२] क्या है ख़ुदाया।
मैं याद न आऊँ उन्हें मुमकिन[१३] ही नहीं है॥

—हसरत मुहानी

हम ने माना के तग़ाफ़ुल न करोगे लेकिन।
ख़ाक हो जायगे हम तुम को ख़बर होने तक॥

—ग़ालिब

---

१ उपेक्षा का भाव २ कामनाओं की अभिव्यक्ति ३ अबतक ४ छुपा हुआ ५ अच्छे और बुरे की पहचान का भेद ६ अनर्थ के अनुमान से ७ मनमोहक आकृष्टि ८ बाँकपन ९ आत्मविस्मृति १० उपेक्षा ११ साहस-परीक्षक १२ कारण १३ संभव।

अब भी दिले हज़ीं[1] से तग़ाफ़ुल शआरियाँ[2] !
अब ये तेरी नज़र है, मेरा दिल नहीं रहा ॥
—इक़बाल अहमद सुहैल

उनका तग़ाफ़ुल, उनकी तवज्जोह[3] ।
एक दिल उस पर लाख तहलके[4] ॥
—अदा जाफ़री बदायूनी

तक़रीरे माशूक़ (प्रेयसी की बोल-चाल) :—

देखना तक़रीर[5] की लज़्ज़त[6], के जो उसने कहा ।
मैंने ये जाना के गोया ये भी मेरे दिल में है ॥
—ग़ालिब

जादू है या तलिस्म[7] तुम्हारी ज़ुबान में ।
तुम झूठ कह रहे थे मुझे एतबार[8] था ॥
—बेखुद देहलवी

ऐ मैं सौ जान से इस तर्ज़े-तकल्लुम[9] के निसार[10] ।
फिर तो फ़र्माइये, क्या आपने इर्शाद किया !!
—जोश मलीहाबादी

तासीरे[11] बर्क़[12] हुस्न जो उनके सोख़न[13] में थी ।
एक लर्ज़िशे-ख़फ़ी[14] मेरे सारे बदन[15] में थी ॥
—हसरत मुहानी

मुँह फेर के, हँस-हँस के वो एक़रार[16] की बातें ।
इस तौर[17] से करते हैं के बावर[18] नहीं आता ॥
—निज़ाम शाहरामपुरी

---

१ दुखी दिल २ उपेक्षा की भावनाएँ ३ अपेक्षा ४ कोलाहल ५ बोली ६ आनन्द ७ इन्द्रजाल ८ विश्वास ९ बोलने की अदा १० निछावर ११ असर १२ बिजली १३ बात १४ छुपी हुई थरथरी १५ शरीर १६ स्वीकृति १७ प्रकार १८ विश्वास ।

असर लोभाने का प्यारे तेरे बयान[1] में है।
किसी की आँख में जादू तेरी ज़ुबान में है॥
—अज्ञात

एक बार सुनी थी सो मेरे दिल में है मौजूद।
ऐ जाने-तमन्ना[2] तेरी तक़रीर अभी तक॥
—हसरत मुहानी

अब शौक़ से बिगाड़ की बातें किया करो।
कुछ पा गये हैं आप के तर्ज़े-बयां[3] से हम॥
—हाली

तलव्वुन-तबई (स्वभाव परिवर्तन) :—

अल्लह रे तलव्वुन[4] अभी क्या थे अभी क्या हो।
शोख़ी[5] हो तो शोख़ी हो, हया[6] हो तो हया हो॥
—दाग़

कभू दोस्ती है कभू दुश्मनी।
तेरी कौन सी बात पर जाइये॥
—मीर मुहम्मद असर

तेरे तलव्वुन[7] ने मार डाला, तेरी नहीं और हाँ के सदक़े[8]।
न जाने फिर शाम होते होते नहीं रहेगी के हाँ रहेगी॥
—बेताब अज़ीमाबादी

चितवन :—

क्या है देखो हो जो इधर को तुम।
और चितवन में प्यार सा है कुछ॥
—मीर

---

१ वक्तव्य २ ऐ कामनाओं के प्राण ३ बातचीत का अन्दाज़ ४ वर्णान्तरण ६ चंचलता ६ लाज ७ वर्णान्तरण ८ निछावर।

मैं अर्ज़े-हाल[1] में जब तक ज़ुबान को रोकूँ।
तेरी बदलती हुई चितवनों ने क्या न किया॥

—आरज़ू लखनवी

दिल में क्या-क्या हवसे-अर्ज़े-तमन्ना[2] थी मेरे।
तेरी चितवन का वो ढब मानेए-तक़रीर[3] रहा॥

—ममनून सोनीपती

चितवनों से मिलता है कुछ कुछ सुराग़[4] बातिन[5] का।
चाल से तो काफ़िर[6] पर सादगी बरसती है॥

—यगाना चंगेज़ी

हया (लज्जा) :—

फूल डूबा हुआ गुलाब में था।
उफ़, वो चेहरा हेजाब-आलूदा[7]॥

—असर लखनवी

किस ने हया से नीची नज़र की, के हो गया।
आसाँ[8] न देखना मुझे, दुश्वार[9] देखना॥

— ज़करिया खाँ ज़की

बर्क़[10] को अब्र[11] के दामन में छुपा देखा है।
हम ने उस शोख़[12] को मजबूरे-हया[13] देखा है।

—हसरत मुहानी

शर्म से आँख मिलाते नहीं देखा उनको।
पार होती हैं कलेजे से निगाहें क्यों कर॥

— दाग़

---

१ दशा की अभिव्यक्ति २ कामनाओं की अभिव्यक्ति की आकांक्षा ३ बोलने से रोकनेवाला ४ पता ५ अंतर ६ ईश्वर को न मानने और उससे न डरनेवाला (प्रेयसी) ७ लज्जा में डूबा हुआ ८ सुगम ९ कठिन १० बिजली ११ बादल १२ चंचल १३ लाज से बेबस।

साथ शोखी के कुछ हेजाब[१] भी है।
इस अदा का कहीं जवाब भी है!॥
—दाग़

ख़ुद नुमाई—(आत्मप्रदर्शन) :—
हुई जो चश्मे-हवस[२] कामयाबे-नज़्ज़ारा[३]।
करम[४] है ये भी तेरे ज़ौक़े[५] ख़ुदनुमाई का॥
—वहशत कलकतवी

आरसी[६] देखकर न हो मग़रूर[७]।
ख़ुदनुमाई न कर ख़ुदा सों[८] डर॥
—वली दकनी

ख़ूए दोस्त (प्रेयसी का स्वभाव):—
नाज़ुक मुआमला है बहुत ख़ूए दोस्त का।
देख उसको, और अपनी नज़र से छुपा के देख॥
—माहिरूलक़ादरी

उस बलाए जाँ से 'आतिश' देखिये क्यों कर बने।
दिल सिवा[९] शीशे से नाज़ुक,[१०] दिल से नाज़ुक ख़ूए दोस्त॥
—आतिश

दहर[११] में क्या-क्या हुए हैं इन्क़ेलाबाते अज़ीम[१२]।
आसमाँ बदला, ज़मीं बदली, न बदली ख़ूए दोस्त॥
—शाद अज़ीमाबादी

रफ़्तार (चाल) :—
दिल चले जाते हैं ख़राम[१३] के साथ।
देखी चलने में उन बुताँ[१४] की अदा॥
—मीर।

१ शर्म २ कामवासना की दृष्टि ३ दर्शन में सफ़ल ४ दया ५ अभिरुचि ६ दर्पण ७ घमंडी ८ से ९ अधिक १० कोमल ११ संसार १२ महान परिवर्तन १३ चाल १४ सुन्दर रूपवाले।

तेरी रफ़्तार से एक बेख़बरी निकले है।
मस्तो मदहोश[1] कोई जैसे परी निकले है॥
—मुसहफ़ी

कब्क[2] रफ़्तार अपनी भूल गये।
देख कर उस ख़राम[3] का आलम॥
—सुलैमान शिकोह सुलैमान

पैदा न हो ज़मीं से नया आसमाँ कोई।
दिल काँपता है आप की रफ़्तार देख कर।
— यगाना चंगेज़ी

नर्मीओ आहिस्तगी से पाँव रखने की अदा।
सीख लें शबनम के क़तरे आप की रफ़्तार से॥
—जोश मलीहाबादी

ख़ुदा जाने करेगा चाक किस किस के गरीबाँ को।
अदा से उनका चलने में वो दामन को उठा लेना॥
—जुरअत

मुझ को पामाल[4] कर गया है अभी।
ये जो दामन उठाये जाता है॥
—मुसहफ़ी

तुम तो सुकूने-ख़ातिरे-नाशाद[5] बन गये।
समझा था मैं कुछ और ये रफ़्तार[6] देख कर॥
—दिल शाहजहाँपुरी

१ मतवाली २ चकोर ३ चाल ४ पददलित ५ दुखी मन की शान्ति ६ चाल।

कौन आये है के सीने में बेदार हो गईं[1]।
सद-आरज़ूए-खुफ़्ता[2] सदाए क़दम[3] के साथ॥

— *निज़ामउद्दीन ममनून*

इसी ख़राम[4] को कहते हैं फ़ितनए महशर[5]।
के उस गली में हमारा मज़ार[6] बाक़ी है॥

—*बेताब अज़ीमाबादी*

अरे ओ मुँह छुपाकर आने वाले मेरी मैयत[7] पर।
तेरे क़दमों की लग़ज़िश[8] को सफ़े-मातम[9] ने पहचाना॥

—*अज्ञात*

सादगी :—

है जवानी ख़ुद जवानी का सिंगार।
सादगी गहना है इस सिन के लिए॥

— *अमीर मीनाई*

इस सादगी प कौन न मरजाये, ऐ ख़ुदा!।
लड़ते हैं और हाथ में तलवार भी नहीं॥

—*दाग़*

शोख़ि ओ शरारत :—

आँखों ही में रहे हो, दिल से नहीं गये हो।
हैरान[10] हूँ ये शोख़ी आई तुम्हें कहाँ से।

— *मीर*

वो शोख़िये मोहतात[11] के बचते हुए अन्दाज़।
दुनियाँ भी न रहने दे क़यामत भी न ढाए[12]॥

—*फ़िराक़ गोरखपुरी*

---

१ जाग उठीं २ सैकड़ों सोई हुई कामनाएँ ३ पाँव की आवाज ४ चाल ५ क़यामत का फ़ितना ६ कब्र ७ शव ८ लड़खड़ाहट ९ शोक करनेवालो की पंक्ति १० चकित ११ सावधान १२ प्रलय भी न लाये।

शोख़ी से ठहरती नहीं क़ातिल की नज़र आज।
ये बर्क़े-बला[1] देखिये गिरती है किधर आज॥

—दाग़

शरीर आँख, निगह बेक़रार,[2], चितवन शोख़।
तुम अपनी शक्ल तो पैदा करो हया[3] के लिए॥

—दाग़

शोख़ी से हर शेगूफ़े[4] के टुकड़े उड़ा दिए।
जिस गुञ्चे[5] पर निगाह पड़ी दिल बना दिया॥

—रेयाज़ ख़ैराबादी

तग़ाफ़ुल[6] में शोखी निराली अदा थी।
ग़ज़ब था वो मुँह फेर कर देख लेना॥

—दाग़

एक सी शोख़ी ख़ुदा ने दी है हुस्नो इश्क़ को।
फ़र्क़ बस इतना है, वो आँखों में है ये दिल में है॥

—ज़ामिन अली जलाल

इश्वों[7] को चैन ही नहीं आफ़त किए बग़ैर।
तुम, और मान जाओ शरारत किए बग़ैर!॥

—जोश मलीहाबादी

नासेह[8] को बुलाओ मेरा ईमान[9] सम्हाले।
फिर देख लिया उसने शरारत की नज़र से॥

—हफ़ीज़ जालंधरी

---

१ मुसीबत की बिजली २ तड़पती हुई ३ लज्जा ४ कली ५ कली ६ उपेक्षा ७ नाज़ो अदा ८ उपदेशक ९ धर्म।

"हसरत" तेरी निगाहे-मुहब्बत[1] को क्या कहूँ।
महफ़िल में उनसे रात शरारत न हो सकी॥
--हसरत मुहानी

ग़ारुर (घमण्ड) :—

सुनता नहीं है बात किसी की तू, ए सजन!।
तुझको तेरा ग़ुरूर न जाने करेगा क्या॥
—ग़ुलाम मुस्तफ़ा एकरंग

ये नाज़ ये ग़ुरूर लड़कपन में तो न था।
क्या तुम जवान होके बड़े आदमी हुए॥
—सिराजुद्दीन आरज़ू

ग़ुरूरे हुस्न[2] मुमकिन[3] क्या किसी की दाद को पहुँचे[4]।
ग़रज़, तुम सुन चुके अहवाल[5], हम फ़रियाद को पहुँचे[6]॥
—मो० हुसैन कलीम

ग़ोरुर (आशिक़ का) :—

ख़ाकसारों[7] में अपने दे के जगह।
तुम ने मग़रूर[8] कर दिया हमको॥
—हसरत मुहानी

तेरा ग़ुरूर समाया है इस क़दर दिल में।
निगाह भी न मिलाऊँ जो बादशाह मिले।
—दाग़

कज अदाई (हाव भाव की कुटिलता) :—

हम फ़क़ीरों[9] से कज-अदाई[10] क्या।
आन बैठे[11] जो तुम ने प्यार किया॥
—मीर

---

१ प्रेम दृष्टि २ सौंदर्य का घमण्ड ३ सम्भव ४ न्याय करे ५ हालत ६ पुकार सफल हुई ७ सेवकों ८ घमण्डी ९ भिक्षुकों १० कुटिल भाव ११ आके बैठ गए।

क्या ज़िद है मेरे साथ ख़ुदा जाने वगरना ।[1]
काफ़ी है तसल्ली[2] को मेरे एक नज़र भी ।।
—सौदा

आए जो मेरे पास तो मुँह फेर के बैठे ।
ये आज नया आप ने दस्तूर निकाला ।।
—जुरअत

कुछ हद से बढ़ गईं हैं तेरी कज अदाइयाँ ।
इस दर्जा[3] एतबारे-तमन्ना[4] न चाहिए ।।
—हसरत

हम बड़ी देर से ये देखते हैं ।
इस तरफ़ कोई देखता भी नहीं ।।
—नूह नारवी

उज़्रे-गुनाह[5] पर भी इस दर्जा कजअदाई ।
अल्लाह रे कम-निगाही,[6] अल्लहरी बेवफ़ाई ।।
—हसरत मुहानी

करमो मेहरबानी (दया और कृपा) :—

असरे आहे दिलेज़ार की अफ़वाहें हैं[7] ।
यानी मुझ पर करमे यार[8] की अफ़वाहें[9] हैं ।।
—शेफ्ता

दिल की हर लर्ज़िशे-मुज़तर[10] प नज़र रखते हैं ।
वो मेरी बेख़बरी की भी ख़बर रख़ते हैं ।।
—फ़ानी

---

१ नहीं तो २ संतोष ३ इतना ४ अभिलाषाओं पर विश्वास ५ अपराध की क्षमा मांगने पर ६ बिमुखता ७ दुःखी दिल की आह में असर हुआ ऐसी कुछ उड़ती पुड़ती खबर है ८ मित्र की दया ९ किंबदन्ती १० विकल कंपन ।

तेरे करम[१] का सज़ावार[२] तो नहीं "हसरत"।
अब आगे तेरी ख़ुशी है जो सरफ़राज़[३] करे॥

—हसरत मुहानी

ज़रा जो हम ने उन्हें आज मेहरबाँ देखा।
न हम से पूछिए क्या रंगे आस्मां देखा॥

—रेयाज़ ख़ैराबादी

मुद्दत के बाद उस ने जो की लुत्फ़[४] की निगाह।
जी ख़ुश तो हो गया मगर आँसू निकल पड़े॥

—कैफ़ी आज़मी

उसे कौनैन[५] की कोई ख़ुशी रास आ नहीं सकती[६]।
जिसे तेरी नवाज़िश-हाय बेग़ाया[७] ने मारा है॥

—माहिरूलक़ादरी

अजब न था[८] के ग़मे-दिल[९] शिकस्त खा जाता[१०]।
हज़ार शुक्र[११] तेरे लुत्फ़[१२] में कमी आई॥

—अर्श मलसियानी

सितम[१३] हो जाय तमहीदे-करम[१४] ऐसा भी होता है?।
मुहब्बत में बता ऐ ज़ब्ते-ग़म[१५]! ऐसा भी होता है?॥

—हसरत मुहानी

फिर नवाज़िश[१६] आप की हद से सेवा[१७] होने लगी।
फिर दिले-आफ़त-रसीदा[१८] बदगुमाँ[१९] होने लगा॥

—वहशत कलकतवी

---

१ दया २ योग्य ३ सम्मानित करे ४ दया ५ उभयलोक ६ अनुकूल नही हो सकती ७ असीम कृपाएँ ८ आश्चर्य न था ९ हृदय शोक १० हार मान लेता ११ धन्यवाद १२ दया १३ अनर्थ १४ दया की भूमिका १५ शोक का सहन १६ कृपा १७ असीम १८ आर्त हृदय १९ प्रतिकूल।

लुत्फ़े जानां[1] है जौर[2] की तमहीद[3]।
देख "हसरत" न खा फ़रेबे[4] सराब[5]॥

—हसरत मुहानी

लुत्फ़ पर उसके हमनशीं[6]! मत जा।
कभी हम पर भी मेहरबानी थी॥

—मीर

नेहाँ[7] न हो करमे-यार[8] में सितम[9] "हसरत"।
बहुत न कीजिए इज़हार[10] शादकामी[11] का॥

—हसरत मुहानी

अपने दीवाने प इतमामे-करम[12] कर यारब[13]!।
दरो दीवार दिए, अब इन्हें वीरानी दे[14]!॥

—फ़ानी

मेहरबानी को मुहब्बत नहीं कहते, ऐ दोस्त!।
आह, अब मुझ से तेरी रंजिशे बेजा[15] भी नहीं॥

—फ़िराक़ गोरखपुरी

मेहरबानी की आस रहने दे।
कौन जीता है मेहरबानी तक॥

—फ़ानी

नामेहरबानिओं का[16] गिला[17] तुम से क्या करें।
हम भी कुछ अपने हाल प अब मेहरबाँ नहीं॥

—फ़ानी

---

१ प्रेयसी की दया २ अत्याचार ३ भूमिका ४ धोखा ५ मृग मरीचिका ६ साथी ७ छिपा ८ प्रेयसी की कृपाओं ९ अत्याचार १० प्रगट ११ प्रसन्नता १२ दया की पूर्ति १३ हे प्रभो १४ उजाड़ करदे १५ अनुचित क्रोध १६ निष्करुणता की १७ शिकायत।

खजिल[१] जिससे होना पड़े दिल ही दिल में।
वो कुछ और है मेहरबानी नहीं है॥

—*जिगर*

तस्कीने-दिले-महज़ूँ[२] न हुई वो सइए-करम[३] फ़रमा भी गए।
इस सइए करम को क्या कहिए, बहला भी गए, तड़पा भी गए॥

—*मजाज़*

कैफ़ीयते बेदारी (जाग्रत अवस्था के दृश्य):—

आया है सुबह नींद से उठ रसमसा हुआ।
जामा[४]-गले में रात का फूलों बसा हुआ॥

—*शाह मो० आबरू*

न पूछ मुझ से वो आलम[५] के सुबह नींद से उठ।
जब अंखड़िओं को वो मलता हुआ ख़ुमार[६] में आये॥

—*जुरअत*

यों खुली है चश्मे मख़मूर[७] उसकी ख़ाबे नाज़ से[८]।
जिस तरह जादू जगाकर कोई जादूगर उठे॥

—*नातिक़ लखनवी*

मख़मूरे ख़ाव[९] बिस्तरे-गुल[१०] से उठे हैं वो।
अंगड़ाई ली है बाग़ में सुबहे-बहार[११] ने॥

—*अख़्तर शीरानी*

अंगड़ाई लेते उठे जो वो ख़ाबे नाज़[१२] से।
हर चीज़ ग़र्क़ हो गई[१३] रंगे-शबाब[१४] में॥

—*असर सहबाई*

---

१ लज्जित २ व्यथित हृदय की शान्ति ३ दया का परिश्रम ४ वस्त्र ५ दृश्य ६ नींद से मतवाला ७ मतवाली आँखें ८ नाज़ की नींद से ९ नींद से मतवाले १० पुष्प शय्या ११ वसंत प्रभात १२ नाज़ की नींद १३ डूब गई १४ जवानी का रंग।

ये उड़ी उड़ी सी रंगत, ये खुले खुले से गेसू[1] ।
तेरी सुबह कह रही है तेरी रात का फ़साना[2] ।।
—एहसान दानिश

लगावट :—

तो क्या हमीं हैं गुनहगार[3], हुस्ने यार नहीं ?
लगावटों का गुनाहों में क्या शुमार[4] नहीं ? ।।
—यगाना चंगेज़ी

देना किसी का साग़रे-मय[5] याद है "निज़ाम" ।
मुँह फेर कर उधर को इधर को बढ़ा के हाथ ।।
—निज़ाम रामपुरी

नेज़ाकत (कोमलता):—

नेज़ाकत[6] उस गुले-राना[7] कि देखिओ "इन्शा" ।
नसीमे-सुब्ह[8] जो छू ले तो रंग हो मैला ।।
— इन्शा

नाज़[9] है गुल[10] को नेज़ाकत प चमन में ए "ज़ौक़" ।
उस ने देखे ही नहीं नाज़ो[11] नेज़ाकत वाले ।।
—ज़ौक़

नज़ाकते आवाज़ (ध्वनि की कोमलता) :—

ये कैसी सरगोशीए-अज़ल[12] साज़े-दिल[13] के पर्दे हिला रही है ।
मेरी समाअत[14] खनक रही है के तेरी आवाज़ आ रही है ।।
—अब्दुल हमीद अदम

सब्र[15] पर दिल को तो आमादा[16] किया है लेकिन ।
होश उड़ जाते हैं अब भी तेरी आवाज़ के साथ ।।
—आसी उल्दनी

---

१ केश २ कहानी ३ अपराधी ४ गिनती ५ मदिरा पात्र ६ कोमलता ७ सुन्दर पुष्प ८ प्रभात समीर ९ गौरव १० फूल ११ अदा १२ दिव्य ध्वनि १३ दिल का साज़ १४ श्रवण शक्ति १५ संतोष १६ तैय्यार ।

उस ग़ैरते[1] नाहीद[2] की हर तान है दीपक।
शोला सा चमक जाय है, आवाज़ तो देखो!॥

—मोमिन

नक़्शेपा (पदचिह्न):—

क्या बहारे[3] नक़्शेपा[4] है, ऐ नयाज़े-आशिक़ी[5]!।
लुत्फ़[6] सर रखने में क्या! सर रख के मर जाने में है॥

—असग़र गोंडवी

अभी इस राह से कोई गया है।
कहे देती है शोख़ी[7] नक़्शेपा की॥

—तस्कीन

हर नक़्शेपा को देख के धुनता हूँ सर को मैं।
पहचानता नहीं हूँ तेरी रहगुज़र[8] को मैं॥

—फ़ानी

पड़ता है ठीक पाँव जो तारीक राह[9] में।
ऐ चश्म[10]! रौशनी ये किसी नक़्शेपा की है!!

—शाद अज़ीमाबादी

मिट चली थी ख़लिशे[11] सिज्दये[12] शौक़[13]।
फिर तेरा नक़्शे क़दम याद आया॥

—जोश मलीहाबादी

उस नक़्शेपा के सिज्दे ने क्या क्या किया ज़लील[14]।
मैं कूचये[15] रक़ीब[16] में भी सर के बल गया॥

—मोमिन

---

१ लज्जित करने वाला २ एक सितारे का नाम जिसको गायक का रूप दिया जाता है ३ सौन्दर्य ४ पदचिन्ह ५ प्रेम-विनय ६ आनन्द ७ चपलता ८ रास्ता ९ अंधेरी राह १० आँख ११ कसक १२ सिर टेकना १३ अभिलाषा १४ अपमानित १५ गली १६ प्रेयसी का दूसरा प्रेमी; प्रतिद्वन्द्वी।

निगाह व नावके निगाह (दृष्टि और दृष्टिवाण) :--

उसकी तर्ज़े-निगाह[१] मत पूछो।
जी ही जाने है, आह ! मत पूछो ॥

—*मीर*

शिर्कते सेह्[२] है तर्ज़े-निगहे-यार[३] के साथ।
मार रक्खा उसे, देखा जिसे टुक प्यार के साथ ॥

—*रासिख़ अज़ीमाबादी*

कलमा भरे तेरा[४] जिसे देखे तू भर नज़र।
काफ़िर असर है ये तेरी काफ़िर[५] निगाह में ॥

—*जुरअत*

तिर्छी नज़रों से न देखो आशिक़े-दिलगीर[६] को।
कैसे तीरअंदाज़[७] हो, सीधा तो कर लो तीर को ॥

—*ख़्वाजावज़ीर*

कहे देती हैं ये तिरछी निगाहें।
के बालाए-ज़र्मी[८] क्या क्या न होगा ॥

—*नसीम देहलवी*

चश्मक मेरी वहशत[९] प है क्या हज़रते[१०] नासेह्[११]।
तर्ज़े - निगहे - चश्मे फ़ुसूँसाज़[१२] तो देखो ॥

—*मोमिन*

जिसको तीरे-निगह[१३] लगा होगा।
एक दम में[१४] वो मर गया होगा ॥

—*शेरअली अफ़सोस*

---

१ नेत्र विक्षेप २ जादू सम्मिलित ३ प्रेयसी का नेत्र विक्षेप ४ तेरा ही हो जाय ५ ज़ालिम ६ प्रेमी जो कलेजा थामे हुए हैं ७ बाण चलानेवाला ८ पृथ्वी पर ९ उन्माद १० श्रीमान् ११ उपदेशक १२ जादू भरे नयन का विक्षेप १३ नयन वाण १४ क्षण भर में।

दिल गर्मिए-निगाह[१] से बेताब[२] हो गया।
जब तक इसे मैं थामूँ, जिगर आब[३] हो गया॥

—ग़ाज़ीउद्दीन ख़ाँ अमादुलमुल्क

कोई मेरे दिल से पूछे तेरे तीरे-नीमकश[४] को।
ये ख़लिश[५] कहाँ से होती, जो जिगर के पार होता॥

—ग़ालिब

एक हालत[६] पर न रहने पाईं दिल की हसरतें[७]।
तुम ने जब देखा नए अन्दाज़[८] से देखा मुझे॥

—आसी उल्दनी

क्या कह गई हैं उनकी नज़र, कुछ न पूछिए।
क्या कुछ हुआ है दिल प असर[९] कुछ न पूछिए॥

—अख़्तर शीरानी

एक उचटती सी निगह पर है ये बेताबिये-दिल[१०]।
हाल पूछे कोई इस वक़्त तो मुश्किल हो जाय॥

—असर लखनवी

सौ सौ उमीदें[११] बंधती हैं एक एक निगाह पर।
मुझको न ऐसे प्यार से देखा करे कोई॥

—एक़बाल

उस निगाहे-शर्मगीं[१२] ने कर दिया रुस्वा[१३] हमें।
हाय वो अफ़सूँ[१४] के जो आख़िर[१५] को अफ़साना[१६] हुआ।

—वहशत कलकत्तवी

---

१ नेत्र की गर्मी २ व्याकुल ३ पानी ४ आधा चुभा तीर ५ चुभन ६ दशा ७ कामनाएं ८ ढंग ९ प्रभाव १० हृदय की विकलता ११ आशायें १२ लज्जा शील दृष्टि १३ बदनाम १४ जादू १५ अन्त में १६ कहानी।

यूँ यका-यक[1] नज़र उठी उनकी।
हम ने जाना कि कामयाब[2] हुए॥
—शम्स फ़र्रुख़ाबादी

घड़ी घड़ी न इधर देखिए, के दिल प हमें।
है एख़्तियार पर[3], इतना भी एख़्तियार[4] नहीं॥
—नेआज़ फ़तहपुरी

निगाहे-यार[5] जिसे आशनाए-राज़[6] करे।
वो क्यूँ न ख़ूबिए-क़िस्मत[7] प अपनी नज़ करे॥
—हसरत मुहानी

न अब सुकून[8] है मेरा, न इज़्तेराब[9] मेरा।
अजीब हाल हुआ, ऐ निगाहे यार! मेरा॥
—रविश सिद्दीक़ी

कुछ नहीं कहती वो निगाह, मगर।
बात पहुचती है कहाँ से कहाँ!॥
—फ़िराक़ गोरखपुरी

उस नज़र के उठने में, उस नज़र के झुकने में।
नग़मये सेहर[10] भी है आहे सुब्हगाही[11] भी॥
—मजरूह सुलतानपुरी

हम उस निगाहे नाज़ को समझे थे नश्तर[12]।
तुमने तो मुस्कुरा के रगेजाँ[13] बना दिया।
—असग़र गोंडवी

---

१ अचानक २ सफल ३ मगर ४ अधिकार ५ प्रेयसी की नज़र ६ रहस्य से परिचित ७ सौभाग्य ८ शान्ति ९ विकलता १० प्रभात संगीत ११ प्रातः कालीन क्रन्दन १२ छुर १३ मुख्य नाड़ी।

मस्ती निगाहे नाज़ की कैफ़े-शबाब[1] में।
जैसे कोई शराब मिला दे शराब में॥
—सब्र मुख़्दूमपुरी

निगाहे बेमहाबा[2] चाहता हूँ।
तग़ाफ़ुल-हाय[3] तम्कीं-आज़मां[4] क्या!॥
—ग़ालिब

उठा के नाज़ से शब-आफ़री[5] निगाहों को।
किसी की सोई हुई रूह[6] को जगाता जा॥
—जोश मलीहाबादी

आप से आँख मिलाऊँ ये मेरी ताक़त है?।
देखता हूँ के वो अगली सी नज़र है के नहीं॥
—जलील मानिकपुरी

जीना भी आगया मुझे मरना भी आ गया।
पहचानने लगा हूँ तुम्हारी नज़र को मैं॥
—असग़र गोंडवी

फिर आ गया क़रार दिले बेक़रार को।
फिर एक बार देखलो मुझको उसी तरह॥
—बेख़ुद देहलवी

वो दुश्मनी से देखते हैं, देखते तो हैं।
मैं शाद[7] हूँ, के हूँ तो किसी के निगाह में॥
—अमीर मीनाई

---

१ जवानी का नशा २ बेझिझक ३ उपेक्षायें ४ धैर्य की परीक्षा करनेवाला ५ निशाजननी ६ आत्मा ७ खुश।

शबाब (जवानी) :—

शबाब नाम है उन जाँनवाज़[1] लमहों[2] का।
जब आदमी को ये महसूस हो[3] जवाँ हूँ मैं॥

—नेआज़ फ़तहपुरी

मोअत्तर[4] साँस, चेहरा रश्केगुल,[5] मस्ती भरी आँखें।
जवानी है के एक सैलाबे-रंगोबू[6] का धारा है॥

—एहसान दानिश

बदमस्तिओं का रंग है जोशे शबाब में।
गोया के वो नहाए हुए हैं शराब में॥

—उमराव मीर्ज़ा अनवर

छिलकायें लाओ भरके गुलाबी शराब की।
तस्वीर खैंचें आज तुम्हारे शबाब की॥

—रैयाज़ ख़ैराबादी

ये मय[7] छिलक के भी उस हुस्न[8] को पहुँच न सकी।
ये फूल खिल के भी तेरा शबाब हो न सका॥

—अख्तर शीरानी

क़दम डगमगाए, नज़र बहकी बहकी।
जवानी का आलम है सरशारियाँ[9] हैं॥

—जिगर मुरादाबादी

घटा,[10] सब्ज़ा,[11] सितारे, फूल, सब अपनी जगह बरहक़[12]।
तेरी काफ़िर[13] जवानी फेर तेरी काफ़िर जवानी !!

—महिरुलक़ादरी

---

१ आनन्द दायक २ क्षण ३ अनुभव हो ४ सुगन्धित ५ जिससे गुलाब के फूल को ईर्ष्या हो ६ रंग और सुगन्ध की बाढ़ ७ शराब ८ सुन्दरता ९ मतवालापन १० बादल ११ हरी दूब १२ सत्य १३ ज़ालिम।

ज़िक्र[1] जब छिड़ गया क़यामत[2] का।
बात पहुँची तेरी जवानी तक॥
—फ़ानी

जड़ें पहाड़ों की टूट जातीं, फ़लक[3] तो क्या अर्श[4] काँप उठता।
अगर मैं दिल पर न रोक लेता तमाम ज़ोरे शबाब तेरा॥
—जोश मलीहाबादी

ख़याल और किसी का अगर नहीं, न सही।
तुझे तो चैन से तेरा शबाब रहने दे!॥
—उमीद उमैठवी

वो शबाब के फ़साने[5] जो मैं सुन रहा हूँ दिल से।
अगर और कोई कहता तो न एतबार[6] होता॥
—साक़िब लखनवी

अभी शबाब है, कर लूँ ख़तायें[7] जी भर के।
फिर इस मोक़ाम[8] प उम्रे-रवाँ[9] मिले न मिले॥
—आनन्द ना० मुल्ला

कमबख़्त जवानी सीने में नागन की तरह लहराती है।
हर मौजे-नफ़स[10] एक तूफ़ाँ है, कौनैन शिकन अरमानों का[11]।
—जोश मलीहाबादी

मेरी जवानी के गर्म लम्हों[12] प डाल दे गेसुओं[13] का साया[14]।
ये दोपहर कुछ तो मोतदिल[15] हो, तमाम माहौल[16] जल रहा है॥
—अब्दुल हमीद अदम

---

१ चर्चा २ प्रलय ३ आकाश ४ सबसे ऊँचा आकाश ५ कहानियाँ ६ विश्वास ७ अपराध ८ स्थान ९ बहती आयु १० साँस की प्रत्येक लहर ११ लोक-परलोक को मिटा डालनेवाली कामनाओं का १२ क्षण १३ केश १४ छाया १५ माध्यमिक १६ परिधि।

शबाब आया, किसी बुत[1] पर फ़िदा होने का[2] वक़्त आया।
मेरी दुनिया में बन्दे[3] के ख़ुदा होने का वक़्त आया॥
—*प० हरिचन्द अख़्तर*

आया था साथ लेके मुहब्बत कि आफ़तें।
जाएगा जान लेके ज़माना शबाब का॥
—*जिगर बसवानी*

ज़ईफ़ी (वृद्धावस्था):—

कल हम आईने में रुख़[4] की झुर्रियाँ देखा किए।
कारवाने उम्रे रफ़्ता का निशाँ[5] देखा किए॥
—*सफ़ी लखनवी*

मुँह फेर के यूँ गई जवानी।
याद आ गया रूठना किसी का॥
—*जलाल मानिकपूरी*

दिन जवानी के गए मौसमे-पीरी[6] आया।
आब्रू[7] ख़ाक है अब वक़्ते हक़ीरी[8] आया॥
—*अज्ञात*

ज़ोफ़े[9] पीरी[10] जो बढ़ा मौत के पैग़ाम[11] चले।
आ गया वक़्ते सफ़र, सुबह चले शाम चले॥
—*रेयाज़ ख़ैराबादी*

अहदे-जवानी[12] रो रो काटा, पीरी में[13] लीं आँखें मूँद।
यानी रात बहुत थे जागे सुबह हुई आराम[14] किया॥
—*मीर*

---

१ प्रेयसी २ मर मिटने का ३ दास ४ चेहरे ५ बीते जीवन के यात्री दल का चिह्न ६ वृद्धावस्था ७ प्रतिष्ठा ८ हीन होने का समय ९ दुर्बलता १० बुढ़ापा ११ संदेश १२ युवावस्था १३ बुढ़ापे में १४ विश्राम।

वक़्ते पीरी शबाब की बातें।
ऐसी हैं जैसे ख़ाब[1] की बातें॥

—ज़ौक़

वही शबाब कि बातें वही शबाब का रंग।
तुम्हें 'रेयाज़' बुढ़ापे में भी जवाँ देखा॥

—रेयाज़ ख़ैराबादी

उम्रे रफ्ता (बीता जीवन) :—

ग़ज़ल उसने छेड़ी, मुझे साज़ देना।
ज़रा उम्रे रफ़्ता को आवाज़ देना!॥

—सफ़ी लखनवी

रौंदे है नक़्शे पा[2] की तरह ख़ल्क़[3] याँ[4] मुझे।
ऐ-उम्रे-रफ़्ता[5]! छोड़ गई तू कहाँ मुझे!॥

—दर्द

कर अहदे-गुज़श्ता[6] को शरीके[7] ग़मे इम्रोज़[8]।
ख़ाकिस्तरे[9] माज़ी[10] से कुछ उठता है धुआँ भी॥

—फ़िराक़ गोरखपुरी

क्या बार बार इशरते - रफ़्ता[11] को रोइये।
एक ख़ाब[12] था के देख लिया था बहार में॥

—सफ़ीर अहमद 'सफ़ीर'

यादे शबाब (जवानी की याद) :—

शबाब मिट चुका यादे शबाब बाक़ी है।
है बू शराब की साग़र[13] में, अब शराब नहीं॥

—अख़्तर शीरानी

---

१ स्वप्न २ पदचिह्न ३ मानवजाति ४ यहाँ ५ हे बीते जीवन ६ बीते जीवन ७ सम्मिलित ८ आज के शोक में ९ राख १० विगत काल ११ विगत सुख १२ स्वप्न १३ प्याले।

अब है दिल बाक़ी न दिल की शोरिशें[1]।
आह ! वो हंगामये-अहदे-शबाब[2] ॥

—हसरत मुहानी

हाय वो दौरे-जिन्दगी[3] जिसका लक़ब[4] शबाब था।
कैसी लतीफ़[5] नींद थी कैसा हसीन-ख़ाब[6] था ॥

—क़दीर लखनवी

हाय जवानी, क्या-क्या कहिये, शोर सरों में रखते थे।
अब क्या है, वो अहद[7] गया, वो मौसम वो हंगाम गया ॥

—मीर

न जाने बर्क़[8] की चश्मक[9] थी या शरर[10] की लपक।
ज़रा जो आँख झपक कर खुली, शबाब न था ॥

—मीर अनीस

हर चीज़ पर बहार थी हर शै[11] प हुस्न था।
दुनिया जवान थी मेरे अहदे शबाब में ॥

—सीमाब

कहने लगते हैं जवानी की कहानी जो कभी।
पहले हम देर तलक बैठ के रो लेते हैं ॥

—शाद अज़ीमाबादी

छिड़ी हुई है हिकायत[12] शबे-जवानी की[13]।
तड़प के "जोश" फिर एक बार नारये "या हू[14]" ॥

—जोश मलीहाबादी

---

१ उमंगें २ युवावस्था का कोलाहल ३ जीवित अवस्था ४ पर्याय नाम ५ आनन्दप्रद ६ सुन्दर स्वप्न ७ ज़माना ८ बिजली ९ चमक १० चिनगारी ११ प्रत्येक वस्तु १२ कहानी १३ जवानी की रातों की १४ या हू दो शब्द हैं, या का अर्थ है—'हे' और हू का अर्थ है वो (ईश्वर)।

'पियो शराब जवानो! के मौसमे-गुल' है।[1]
हमें भी याद वो अहदे शबाब आता है॥

—*अहसनुल्लाह 'बयान'*

शबाबे-रफ़्ता[2] के क़दम की चाप सुन रहा हूँ मैं
नदीम[3]! अहदे-शौक़[4] की सुनाए जा कहानियाँ।

—*जोश मलीहाबादी*

ए हम-नफ़स[5] न पूछ जवानी का माजरा[6]।
मौजे-नसीम[7] थी, इधर आई उधर गई।

—*तिलोकचन्द 'महरूम'*

शौक़े दीदार व दीदार

(दर्शन की अभिलाषा और दर्शन)

ताबे दीदार (दर्शन की शक्ति) :—

सबको है तेरे जलवए[8] रंगीं की जुस्तजू[9]।
ये कौन सोचता है के ताबे-नज़र[10] नहीं॥

—*राक़िम लखनवी*

जल्वागरीए दोस्त (प्रिय का शोभा, प्रदर्शन) :—

जग में आकर इधर-उधर देखा।
तू ही आया नज़र जिधर देखा॥

—*मीर दर्द*

ग़ैर[11] के पास ये अपना ही गुमाँ[12] है, के नहीं।
जलवागर[13] यार मेरा वरना कहाँ है, के नहीं॥

—*सौदा*

---

१ वसन्त ऋतु २ गत यौवन ३ साथी ४ अभिलाषापूर्ण जीवन ५ साथी ६ वृत्तांत ७ प्रभात समीर ८ शोभा ९ खोज १० दृष्टि-शक्ति ११ प्रतिद्वन्द्वी १२ अनुमान १३ शोभा प्रदर्शक।

हर गुल[१] में तू है, तुझमें हज़ारों तज्जल्लियाँ[२]।
दीवाना कर दिया मुझे फ़सले-बहार[३] ने ॥

—अज़ीज़ लखनवी

अजब उस जलवए यकता[४] में नैरंगे तमाशा[५] है।
नई सूरत[६] से चमका ख़ातिरे[७] शैख़ो-बरहमन[८] पर ॥

—अरशद गुरगानवी

मुझे धोखा न देतीं हों कहीं तरसी हुई नज़रें।
तुम्हीं हो सामने या फिर वही तस्वीरे ख़ाब[९] आई ॥

—आनन्दनारायण मुल्ला

ख़ुशा[१०] वो साअत[११], के तू रहेगा तेरी तजल्ली[१२] अयाँ[१३] रहेगी।
न कोई पर्दा[१४] रहेगा हायल[१५], न कोई क़ैदे-मकाँ[१६] रहेगी ॥

—बेताब अज़ीमाबादी

ताबके[१७] शक्ले मजाज़ी[१८] में तेरी जलवागरी[१९]।
उस हक़ीक़त को, जो पोशीदा[२०] है ऊरियाँ[२१] कर दे ॥

—वहशत कलकतवी

पर्दे से एक झलक जो वो दिखला के रह गये।
मुश्ताक़े-दीद[२२] और भी ललचा के रह गये ॥

—हसरत मुहानी

बस आज जलवए-आम[२३], ऐ हुज़ूर हो जाए।
कलीमो तूर[२४] की तख़सीस[२५] दूर हो जाए ॥

—अहकर बिहारी

---

१ फूल २ प्रकाश ३ वसन्त ऋतु ४ अनुपम सौंदर्य ५ त्रिविध रूप चमत्कार ६ प्रकार ७ हृदय ८ मुल्ला और ब्राह्मण ९ स्वप्न चित्र १० धन्य है ११ अवसर १२ ज्योति १३ प्रकट १४ पट १५ मध्यस्थ १६ गृह बन्धन १७ कब तक १८ माया रूप १९ चमत्कार २० निहित २१ प्रकट २२ दर्शन के अनुरागी २३ सर्व साधारण के लिए शोभा प्रदर्शन। २४ कलीम—मूसा पैग़म्बर, तूर—वह पहाड़ जिस पर मूसा को ईश्वर का दर्शन हुआ था २५ विशेषता।

है ग़लत धूम के निकला था वो घर से बाहर।
शहर में चाक किसी का तो गरीबाँ होता! ॥
—*अब्दुर्रहमान 'आही'*

जमाले दोस्त (प्रिय का सौन्दर्य) :—

देखा तो होगा हम ने अज़ल[1] में जमाले दोस्त।
लेकिन वो कोई वक़्त न था इम्तेआज़[2] का ॥
—*शाद अज़ीमाबादी*

जमाले दोस्त की रंगीनियाँ अदा न हुईं।
हज़ार काम लिया हम ने ख़ुशबयानी[3] से ॥
—*हसरत मुहानी*

तेरे जलवों[4] ने मुझे घेर लिया है, ऐ दोस्त!
अब तो तनहाई के लमहे[5] भी हसीं होते हैं ॥
—*सीमाब*

अन्दाज़ बला के हैं, क़यामत की नज़र है।
जलवे का ये आलम है के दीवाना बना दे ॥
—*शातिर देहलवी*

निगाह बर्क़[6] नहीं चेहरा आफ़ताब[7] नहीं।
वो आदमी है, मगर देखने की ताब[8] नहीं ॥
—*जलील मानिकपुरी*

रात महफ़िल में तेरे हुस्न के शोले के हुज़ूर[9]।
शमा[10] के मुँह प जो देखा तो कहीं नूर[11] न था ॥
—*मीरदर्द*

---

१ अनादि काल २ पहचान ३ वाणी की मधुरता ४ शोभाओं ५ एकांत के क्षण ६ बिजली ७ सूर्य ८ शक्ति ९ सामने १० दीपक ११ प्रकाश।

निगाहे-शौक़[1] की रानाइयों[2] का क्या कहना।
मगर ख़ुदा की क़सम, आप का जवाब नहीं॥

—फ़ानी

गर मेरे बुते-होश-रोबा[3] को नहीं देखा।
उस देखनेवाले ने ख़ुदा को नहीं देखा॥

—दाग़

रुख़े रौशन[4] के आगे शमा[5] रखकर वो ये कहते हैं।
उधर जाता है देखें या इधर परवाना आता है॥

—दाग़

लिल्लाह[6]! ये तुम देखने वालों से न पूछो।
क्या चीज़ हो तुम देखने वालों की नज़र में!!।

—अफ़सर मीरठी

हेजाबो बेहेजाबी (आवरण और अनावरण):—

जब चाहा पर्दा उठवाया, जब चाहा पर्दा कर बैठे।
ये छेड़, और एक दीवाने से! मालूम नहीं क्या कर बैठे!!

—नातिक़ लखनवी

रेदाए लाला-ओ-गुल[7] पर्दए महो अन्जुम[8]।
ज़हाँ जहाँ वो छुपे हैं, अजीब आलम[9] है!!

—असग़र गोंडवी

अल्लह, अल्लह, हुस्न की ये पर्दादारी[10] देखिये।
भेद जिसने खोलना चाहा वो दीवाना हुआ।

—आरज़ू

---

१ अभिलाष भरी दृष्टि २ सौन्दर्य ३ ऐसी सुन्दर मूर्ति जिसको देखने से होश उड़ जाय ४ दमकते चेहरे ५ दीपक ६ ईश्वर के लिए ७ लाला और गुलाब की चादर ८ चाँद सितारों के पर्दे ९ दृश्य १० पर्दा करने का।

हर एक शै[1] में तुम मुस्कुराते हो गोया।
हज़ारों हेजाबों[2] में ये बे हेजाबी[3] !!

—एहसान दानिश

महरम[4] नहीं है तू ही नवा-हाय-राज़[5] का।
याँ वरना जो हेजाब[6] है, पर्दा है साज़ का॥

—ग़ालिब

ख़याल में मुस्कुरा रहा है, निगाह में जगमगा रहा है।
हरीमे-ख़िल्वत के माहे-ताबाँ[7]! हेजाब कुछ दिल्लगी नहीं है !!

—तालिब बाग़पती

क़यामत ही न हो जाए जो पर्दे से निकल आओ।
तुम्हारे मुँह छुपाने में तो ये आलम निकलता है !!

—सफ़ी लखनवी

शुक्र, पर्दे ही में उस बुत को हया[8] ने रक्खा।
वरना ईमान गया ही था, ख़ुदा ने रक्खा।

—ज़ौक़

ख़ूब पर्दा है के चिलमन से लगे बैठे हैं।
साफ़ छुपते भी नहीं सामने आते भी नहीं॥

—दाग़

छुपनेवाले ! तुझे ख़बर भी है।
निगहे शौक़ पर्दादर[9] भी है॥

—जलील मानिकपुरी

---

१ वस्तु २ पर्दा ३ बेपर्दगी ४ भेद जाननेवाला ५ रहस्य संगीतों का ६ पर्दा ७ प्रेम मन्दिर के जगमगाते चाँद ! ८ लज्जा ९ पर्दा फाड़नेवाले।

काम आई कुछ न पर्दानशीनी हुजूर की।
देख आई जाके बादे-सबा[1] सर से पाँव तक॥

—अमीर मीनाई

हसरते दीदार (दर्शन की अभिलाशा) :—

कुछ अबके[2] अजब हसरते दीदार है, वरना।
क्या गुल नहीं देखे के गुलिस्ताँ नहीं देखा॥

—उमीद अमैठवी

क्या ही शर्मिन्दा चले हैं दिले मजबूर से हम।
आये थे उनकी जेयारत[3] को बहुत दूर से हम॥

—हसरत मुहानी

एक दिन भी न उसको देखा हैफ़[4] !
यूँ ही अब के तमाम साल गया॥

—मिरज़ा फ़िदवी

हश्र[5] में छुप न सका हसरते दीदार का हाल।
आँख कमबख्त से पहचान गये तुम मुझको॥

—जलाल

दमे आख़िर[6] ही क्या न आना था।
और भी वक़्त थे बहाने के॥

—मीर

दीदारे दोस्त (प्रिय का दर्शन) :—

दीदार की तलब[7] के तरीक़ों से बेख़बर[8]।
दीदार की तलब है तो पहले निगाह माँग॥

—आज़ाद अन्सारी

---

१ प्रभात समीर २ इस बार ३ दर्शन ४ अफ़सोस ! ५ क़यामत
६ अन्तिम क्षण में ७ दर्शन की माँग ८ न जाननेवाले।

मेरी आँखें और दीदार आपका !।
या क़यामत आ गई या ख़्वाब[1] है ॥
—आसी ग़ाज़ीपुरी

सारा जहाँ[2] ख़राब था आँखों में, तुझ बेग़ैर।
बारे तू आज आया तो बस्ती नज़र पड़ी ॥
—मीर हसन

दरपेश[3] है फिर मसअलए-ताक़ते-दीदार[4]।
फिर कुछ निगहे शौक़ है घबड़ाई हुई-सी ॥
—फ़ानी

आम है वो जलवा लेकिन अपना अपना तर्ज़ेदीद[5]।
मेरी आँखें बन्द हैं और चश्मे-अन्जुम[6] बाज़[7] है ॥
—असग़र गोंडवी

दिल थामता, के चश्म[8] प करता तेरी निगाह।
साग़र को देखता के मैं शीशा[9] संभालता ॥
—फ़ेराक़ गोरखपुरी

हम बर्क़ो शरर[10] को कभी खातिर में न लाये[11]।
उस फ़ितनए-दौराँ[12] को मगर देख न पाये ॥
—आले अहमद सोरूर

पहले सौ बार इधर उधर देखा।
जब तुझे डर के एक नज़र देखा ॥
—मीर मुहम्मद असर

---

१ स्वप्न २ ससार ३ प्रस्तुत है ४ दर्शन की शक्ति की समस्या ५ दृष्टिकोण ६ सितारों की आँखे ७ खुली हुई ८ आँखे ६ शराब की सुराही १० बिजली और चिनगारी ११ परवा न की १२ संसार को तहस नहस करनेवाला ।

देखना भी तो उन्हें दूर से देखा करना।
शेवए-इश्क़[1] नहीं हुस्न को रुसवा[2] करना॥

—हसरत मुहानी

कोई मौसम[3] हो समा[4] हो के तग़ायुर[5] कोई।
तुमको जब देख लिया वक़्त[6] फ़रामोश-हुआ[7]।

—असर लखनवी

ये किसको देखकर देखा है मैं ने बज़्मे-हस्ती[8] को।
के जो शय[9] है खुदाई[10] में हसीं[11] मालूम होती।

—अख़्तर शीरानी

बेताब[12] सा फिरता है कई रोज़ से 'आसी'।
बेचारे ने फिर तुमको कहीं देख लिया है॥

—आसी उल्दनी

ज़िक्रे महबूब (प्रेयसी की चर्चा) :—

लोग जब ज़िक्रे-यार[13] करते हैं।
देख रहता हूँ देर मुँह सबका॥

—मीर

हमनशीं[14]! कहते हैं, ज़िक्रे-ऐश[15] निस्फ़े[16] ऐश है।
मैं कहूँ, तू सुन जमालेयार का अफ़साना[17] आज॥

—आतिश

ऐ नासेहे-शफ़ीक़[18] रहे कुछ तो छेड़ छाड़।
ज़िक्रे हबीब[19] कम नहीं वस्ले-हबीब[20] से॥

—दाग़

---

१ प्रेम नियम २ बदनाम ३ ऋतु ४ दृश्य ५ परिवर्त्तन ६ समय ७ भूल गया ८ दुनिया ९ वस्तु १० संसार ११ सुन्दर १२ विकल १३ प्रेयसी की चर्चा १४ ऐ साथी १५ भोग विलास की चर्चा १६ आधा १७ मित्र के सौंदर्य की कहानी १८ हे कृपानिधान उपदेशक १९ प्रेयसी की चर्चा २० प्रेयसी का मिलन।

यूँ कर रहा हूँ उनकी मुहब्बत के तज़केरे[1] ॥
जैसे के उनसे मेरी बड़ी रस्मोराह[2] थी ॥
—माहिरुल्क़ादरी

मुनहसर[3] मौसमे-गुल[4] पर नहीं सौदा[5] मेरा ।
आ गया ज़िक्र तेरा और मैं दीवाना हुआ ॥
—जलील मानकपुरी

हाय वो तेरे ज़िक्र में ये भी है आरज़ू के काश ।
कोई कहे के बज़्मे-नाज़[6], तू जो नहीं, उदास है ॥
—फ़ानी

ज़ौक़े नज़र (दृष्टि की अभिरुचि) :—

जो देखते हैं तुझे और देख सकते हैं ।
मेरी निगाह में ज़ौक़े नज़र नहीं रखते ॥
—ताजवर नजीबाबादी

वे ज़ौक़े नज़र बज़्मे-तमाशा[7] न रहेगी ।
मुँह फेर लिया हमने तो दुनिया न रहेगी ॥
—फ़ानी

शौक़े दीदार (दर्शन की अभिलाषा) :—

माना के तेरी दीद[8] के क़ाबिल[9] नहीं हूँ मैं ।
तू मेरा शौक़[10] देख, मेरा इन्तेज़ार देख ॥
—इक़बाल

तेरी नोवेद[11] में हर दास्ताँ[12] को सुनते हैं ।
तेरी उम्मीद में हर रहगुज़र[13] को देखते हैं ॥
—मौला बख़्श क़लक़

---

१ चर्चाएँ २ मित्रता ३ निर्भर ४ वसंत ऋतु ५ उन्माद ६ प्रेयसी की महफ़िल ७ तमाशा की महफ़िल ८ दर्शन ९ योग्य १० अभिलाषा ११ मंगल सूचना १२ कहानी १३ रास्ता ।

मैं शौक़े-दीद[1] में क्या जाने कितनी दूर आया।
खुली कुछ आँख मेरी जब क़रीब[2] तूर आया॥

—जलाल

जो और कुछ हो तेरी दीद के सिवा[3] मंजूर
तो मुझ प ख़ाहिशे-जन्नत[4] हराम हो जाये

—हसरत मुहानी

उम्मीद नहीं उनसे मुलाक़ात की हरचंद[5]
आँखों से मगर जौक़े-तमाशा[6] नहीं जाता

—हसरत मुहानी

गुज़ारी देखने में उसके सारी ज़िन्दगी मैं ने
मगर ये शौक़ है, देखा नहीं गोया कभी मैं ने

—नातिक़ लखनवी

आरज़ू है मुझे एक शख़्स से मिलने की बहुत
नाम क्या लूँ कोई अल्लाह का बन्दा होगा।

—अकबर एलाहाबादी

महबूब (प्रेयसी):—

मेहर-तलअत,[7] हूर-पैकर,[8] मुश्तरी-रू[9] महजबी[10]
सीम-बर[11] सीमाब-तबओ[12] सीम-साक़ो[13] सीमतन[14]

—नज़ीर अकबराबादी

नाज़नीं, नाज़-आफ़रीं[15] नाज़ुक-बदन, नाज़ुक़ कमर
गुन्चा-लब[16] रंगीं-अदा,[17] शक्कर देहाँ,[18] शीरीं सोख़न[19]

—नज़ीर अकबराबादी

---

१ दर्शन की अभिलाषा २ निकट ३ अतिरिक्त ४ स्वर्ग की इच्छा ५ यद्यपि ६ देखने की अभिरुचि ७ सूर्य रूपी ८ अप्सरा जैसे शरीर वाला ९ मुश्तरी (एक सितारे का नाम) जैसे मुख वाला १० चन्द्रमा जैसे कपोल वाला ११ चाँदी जैसे वक्षस्थल वाला १२ पारे जैसे स्वभाव वाला १३ चाँदी जैसी पिंडियों वाला १४ चाँदी जैसे शरीर वाला १५ कोमलता पैदा करनेवाला १६ कलियों जैसे होठ वाला १७ मन मोहक हाव भाव वाला १८ मीठे मुँह वाला १९ मीठी बोली वाला।

बस रहा है मेरी आँखों में वही जाने-बहार[1]।
जिसका हम-रंग[2] कोई फूल चमन भर में नहीं ॥

—ताजवर नजीबाबादी

गुलशन मे देखकर मेरे मस्ते-शबाब[3] को।
शर्माई जा रही है जवानी बहार की।

—आग़ा हशर काश्मीरी

घर में रहता है तेरे दम से उजाला कुछ और।
महो-ख़ुरशीद[4] की तनवीर[5] बदल जाती है ॥

—फ़ानी

तेरा तबस्सुम[6] फ़रोग़े-हस्ती[7] तेरी नज़र एतेबारे[8] मस्ती।
बहार एक़रार कर रही है, शराब ईमान ला रही है।

—अब्दुल हमीद अदम

अल्लाह रे तेरी फ़सूँ-नवज़ी[9]।
जो दिल है तिलिस्मे-आरज़ू[10] है।

—फ़ानी

बहुत लगता है जी सोहबत में तेरी[11]।
तू अपनी ज़ात से एक अंजुमन[12] है ॥

—हसरत मुहानी

हम क्या करें न तेरी अगर आरज़ू करें।
दुनियाँ में और भी कोई तेरे सिवा है क्या ? ॥

—हसरत मुहानी

---

१ बसन्त का प्राण २ सहवर्ण ३ जवानी से मतवाला ४ चन्द्रमा और सूर्य ५ प्रकाश ६ मुस्कान ७ जीवन-विकास ८ विश्वास ९ जादूगरी ११ कामनाओं का मायाजाल ११ तेरी संगति में १३ सभा।

ये आरज़ू थी तुझे गुल[1] के रू[2] करते।
हम और बुलबुले बेताब[3] गुफ़्तगू[4] करते॥

—आतिश

ज़माना[5] अहद[6] में उसके है महवे-आराइश[7]।
बनेंगे और सितारे अब आसमाँ के लिए॥

—ग़ालिब

होश में आओ ज़रा, तुम तो भला क्या हो 'जलाल'।
अच्छे अच्छों को वो दीवाना बना देते हैं॥

—जलाल

अभी जाना नहीं 'हाली' ने के क्या चीज़ हैं वो।
हज़रत[8] इस लुत्फ़[9] का पायेंगे मज़ा, याद रहे॥

—हाली

नामे महबूब (प्रेयसी का नाम) :—

ज़ुबाने-इश्क़[10] पर एक चीख़ बनकर उनका नाम आया।
ख़िरद[11] की मंज़िलें तय हो गईं, दिल का मक़ाम[12] आया॥

—आनन्द नारायण मुल्ला

'फ़ानी' को या जुनूँ[13] है, या तेरी आरज़ू है।
कल नाम लेके तेरा दीवानावार[14] रोया।

—फ़ानी

बोफ़ूरे-शौक़[15] से ऐ 'रींद'! ज़ब्त हो न सका।
ज़ुबाँ पुकार उठी जब दिल में तेरा नाम आया॥

—रींद

---

१ गुलाब २ सम्मुख ३ विकल ४ बातचीत ५ संसार ६ समय ७ शृंगार में लीन ८ श्रीमान ९ आनन्द १० प्रेम की ज़ुबान ११ बुद्धि १२ स्थान १३ पागलपन १४ पागल की तरह १५ अभिलाषा की अधिकता।

अगर मरते हुए लब पर न तेरा नाम आयेगा।
तो मैं मरने से बाज़ आया, मेरे किस काम आयगा॥
—शाद अज़ीमाबादी

मेरे लब[1] पर ये क्यूँ बेसाख़्ता[2] आज उनका नाम आया।
रहे-उल्फ़त[3] में शायद फिर कोई नाज़ुक मुक़ाम[4] आया॥
—माहिरुल्क़ादरी

ख़ुदा हाफ़िज़ है, क्यूँ महफ़िल में उसका नाम आया था।
तड़पने से अभी दिल को मेरे आराम आया था॥
—हसरत मुहानी

जब नाम तेरा लीजिए तब अश्क[5] भर आवे।
यूँ ज़िन्दगी करने को कहाँ से जिगर आवे॥
—मीर

तज़किरा रहता है दिल से सेहरोशाम[6] उनका।
लब प आ जाये न भूले से कहीं नाम उनका॥
—रविश सिद्दीक़ी

नाम उसका तो मेरे दिल में नेहाँ[7] था नासेह[8]।
हाय कमबख़्त! तेरे मुँह से ये क्यूँकर निकला॥
—दाग़

ज़ुबाँ प, बारे-एलाहा[9]! ये किसका नाम आया!!
के मेरे नुत्क़[10] ने बोसे मेरी ज़ुबाँ के लिए॥
—ग़ालिब

---

१ अधर २ एक ब एक ३ प्रेम-मार्ग ४ स्थान ५ आँसू ६ सुबह-शाम ७ छिपा हुआ ८ उपदेशक ९ हे ईश्वर १० वाक शक्ति।

दख़्ल है उसको बहुत कुछ मेरे तड़पाने में।
वो जो लज़्ज़त[1] तेरे नाम के दोहराने में॥

—असर लखनवी

न मानूँगा नसीहत[2], पर न सुनता मैं तो क्या करता।
के हर-हर बात में नासेह[3] तुम्हारा नाम लेता था!॥

—मोमिन

तेरे हमनाम[4] को कोई जो पुकारे है कहीं।
जी धड़क जाये है मेरा, के कहीं तू ही न हो॥

—मीर हसन

नहीं एक बार भी अब सुनने की ताक़त दिल में।
पहले सौ बार तेरा नाम लिया करता था॥

—क़ुर्बान अली सालिक

सुन के तेरा नाम आँखें खोल देता था कोई।
आज तेरा नाम लेकर कोई ग़ाफ़िल[5] हो गया॥

—फ़ानी

नज़ारए जमाल (सौंदर्य-दर्शन) :—

होगी किसी को फ़ुर्सते[6] नज़्ज़ारए जमाल।
'फ़ानी' ख़राबे[7] हुस्ने तमाशाए यार है॥

—फ़ानी

नज़र भर के जो देख सकते हैं तुझको।
मैं उनकी नज़र देखना चाहता हूँ॥

—ताजवर नजीबाबादी

---

१ आनन्द २ उपदेश ३ उपदेशक ४ समान नाम वाला ५ बेसुध ६ अवकाश ७ बर्बाद।

अल्लह रे इज़्तेराबे-तमन्नाए-दीदे-यार[१] ।
एक .फुर्सते निगाह में सौ बार देखना ! ॥
—अमिरुल्लाह तस्लीम

मस्लेहत[२] का है तक़ाज़ा एहतेयात[३] ।
दिल ये कहता है के देखा कीजिए ॥
—अफ़सर मेरठी

क्या ज़ौक़ है, क्या शौक़ है सौ मर्तबा देखूँ ।
फिर भी ये कहूँ जल्वए जाना नहीं देखा ।
—दाग़

गुनह[४] क्या सनम के नज़्ज़ारे[५] में, ज़ाहिद[६] ! ।
.खुदा ने ये जलवा दिखाया तो देखा ! ॥
—अमतुल फ़ातमा बेगम 'साहब'

आ, मगर इस क़द्र क़रीब न आ ।
के तमाशा[७] महाल[८] हो जाये ॥
—आज़ाद अंसारी

क़तरए-अश्क[९] हूँ प्यारे, मेरे नज़्ज़ारे[१०] से ।
क्यूँ ख़फ़ा होता है, पल मारते ढल जाऊँगा ॥
—सौदा

नेक़ाबो बेनेक़ाबी (मुखावरण और अनावरण):—

मैं ही अपना नेक़ाब[११] हूँ वरना । ✓
तेरे मुँह पर कोई नेक़ाब नहीं ॥
—फ़ानी

---

१ प्रेयसी के दर्शन की अभिलाषा की तड़प २ चातुर्य ३ सावधानी ४ पाप ५ प्रेयसी के देखने में ६ ईश्वर भक्त ७ दर्शन ८ कठिन ९ आँसू की बूँद १० देखने ११ मुखावरण ।

न आँख देख सकी जब वो बेनेक़ाब हुआ।
तहइयुरे-निगहे-शौक़[1] ख़ुद हेजाब[2] हुआ॥
—जलाल

मैं इज़्तेराबे[3] शौक़ कहूँ या जमाले-दोस्त[4]।
एक बर्क़[5] है जो कौंध रही है नेक़ाब में॥
—असग़र गोंडवी

निगाहें शौक़ की थीं बदहवासियाँ, वरना।
हज़ार बार वो महफ़िल में बे-नेक़ाब आया॥
—असर सहबाई

मेरी हैरत[6] की क़सम आप उठायें तो नेक़ाब।
मेरा ज़िम्मा है के जलवे[7] न परेशाँ होंगे॥
—जिगर मुरादाबादी

देखे बग़ैर हाल ये है इज़्तेराब का।
क्या जाने क्या हो, पर्दा जो उठे नेक़ाब का! ॥
—असर सहबाई

'अज़ीज़' मुँह से वो अपने नेक़ाब तो उल्टें।
करेंगे जब्र अगर दिल प इख़्तेयार[8] रहा॥
—अज़ीज़ लखनवी

अदा-शनास[9] भी थे अरसए क़यामत[10] में।
समझ के आपको रूख़[11] से नेक़ाब उठाना था॥
—सफ़दर मिर्ज़ापुरी

---

१ अभिलाषा की दृष्टि का आश्चर्य २ पर्दा ३ तड़प ४ मित्र का सौंदर्य ५ बिजली ६ आश्चर्य ७ शोभा ८ अधिकार ९ अदाओं के पहचानने वाले १० क़यामत के मैदान में ११ मुख।

इश्क़ो आशिक़ी

इब्तेदाए इश्क़ (प्रेम का प्रारंभ):—

बाम[1] पर आने लगे वो, सामना होने लगा।
अब तो इज़हारे[2] मुहब्बत बर्मला[3] होने लगा॥

—*हसरत मुहानी*

नयन से नयन जब मिलाए गया।
दिल के अंदर मेरे समाए गया॥

—*शाह मुबारक आबरू*

शुरूए राहे-मुहब्बत,[4] अरे मआज़लल्लाह[5]।
ये हाल है के क़दम डगमगाए जाते हैं॥

—*जिगर मुरादाबादी*

शुरूए-इश्क़ ही में हैं दिलो जिगर बेताब।
अभी से हाल ये है अपने साथवालों का॥

—*जलाल*

इब्तेदाए-इश्क़[6] है रोता है क्या।
आगे-आगे देखिए होता है क्या॥

—*मीर*

आग़ाज़े-मुहब्बत[7] के अल्लाह वो क्या दिन थे।
वो शौक़ के हंगामे वो शौक़ की तमहीदें[8]॥

—*फ़ानी*

इज़हारे मुहब्बत (प्रेम प्रकाशन):—

साफ़ ज़ाहिर है निगाहों से के हम मरते हैं।
मुँह से कहते हुए ये बात मगर डरते हैं॥

—*अख़्तर अंसारी*

---

१ अटारी २ प्रकटीकरण ३ प्रकट रूप से ४ प्रेम मार्ग ५ ईश्वर बचावें ६ प्रेम का प्रारंभ ७ प्रेम का प्रारंभ ८ भूमिकाएं।

इज़हारे - इश्क़ उससे न करना था 'शेफ़ता'।
ये क्या किया के दोस्त को दुश्मन बना दिया॥
—शेफ़्ता

आग़ाज़े इल्तेफ़ात (आकृष्टि का प्रारंभ):—

दूर ही दूर से एक़रार हुआ करते हैं! ।
कुछ ऐशारे[1] पसे-दीवार[2] हुआ करते हैं॥
— दाग़

राह पर उनको लगा लाये तो हैं बातों में।
और खुल जायँगे दो चार मुलाक़ातों में॥
—दाग़

कौन कहता है बढ़ा शौक़ इधर से पहले।
किसने देखा था किसे तिरछी नज़र से, पहले ?॥
— जमील मज़हरी

एक़रारे मुहब्बत (महबूब का):—

अगर तू मुहब्बत का एक़रार कर दे।
तो 'अख़्तर' दो आलम से[3] इन्कार कर दे॥
—अख़्तर ओरैनवी

मोहब्बत के एक़रार से शर्म कबतक।
कभी सामना हो तो मजबूर कर दूँ॥
—अख़्तर शीरानी

इज़तेराबे शौक़ (अभिलाषा की तड़प):—

पैहम[4] सुजूद[5] पाये-सनम[6] पर दमे - वेदा[7]।
'मोमिन' ख़ुदा को भूल गए इज़तेराब में॥
—मोमिन

---

१ संकेत २ दीवार के पीछे ३ दोनोंलोकों से ४ लगातार ५ सिजदे ६ प्रेयसी के पाँव ७ बिदा होते समय।

बार बार उसके दर[1] प जाता हूँ।
हालत अब इज़्तेराब की सी है॥

—मीर

जब ये सुनते हैं हमसाया[2] हैं वो आये हुए।
क्या दरो-बाम[3] प हम फिरते हैं घबराये हुए॥

—जुरअत

ये इज़्तेराब[4] देख, के अब दुश्मनों से भी।
कहता हूँ, उससे मिलने की कुछ तुम दुआ करो॥

—मीर

आज इस राह दिल-रुबा[5] गुज़रा।
जी प क्या जानिए के क्या गुज़ारा॥

—सैयद मुहम्मद मीर सोज़

चले न उठ के वहीं चुपके-चुपके फिर तुम 'मीर'।
अभी न उनकी गली से पुकार लाया हूँ॥

—मीर

बदबख़्तिए उश्शाक़ (प्रेमियों का दुर्भाग्य):—

नामे बदबख़्तिए उश्शाक़ ख़ेज़ाँ है, बुलबुल[6]
तू अगर निकले चमन से तो बहार आ जाये

—मोमिन

साया भी जिस प मेरे नशेमन[7] का पड़ गया।
क्यों आसमाँ ? ! वो बाग़ ही सारा उजड़ गया !!

—फ़ानी

---

१ द्वार २ पड़ोस में ३ द्वार और अटारी ४ बेचैनी ५ हृदयग्राही ६ हे बुलबुल ! पतझड़ असल में प्रेमियों के दुर्भाग्य ही का नाम है ७ घोंसला।

बख़्ते-बद[1] ने वो डराया है के काँप उठता हूँ।
तू अगर लुत्फ़[2] की बातें भी कभी करता है॥
—मोमिन

बजुज़[3] इरादा-परस्ती[4] ख़ुदा को क्या जाने?।
वो बदनसीब[5] जिसे बख़्ते-नारसा[6] न मिला॥
—यगाना चंगेज़ी

बदगुमानिए आशिक़ (प्रेमी का दुर्भावना) :—

कल न आने में एक याँ तेरे।
आज सौ सौ तरफ़ गुमान[7] गया।
—मीर

क़ासिदों[8] के पाँव तोड़े बदगुमानी[9] ने मेरी।
ख़त दिया, लेकिन न बतलाया निशाने-कुए-दोस्त[10]।
—आतिश

बढ़ी है आपस में बदगुमानी मज़ा मोहब्बत का आ रहा है।
हम उसके दिल को टटोलते हैं, तो हमको वो आज़मा रहा है॥
—हफ़ीज़ जौनपुरी

बदनामिए उश्शाक़ :—

तसद्दुक़[11] इस्मते-कौनैन[12] उस मज्ज़ूबे-उल्फ़त[13] पर।
जो उनका ग़म छुपाये और ख़ुद बदनाम हो जाए।
—शेरी भोपाली

मेरा ही नाम ज़माने ने कर दिया बदनाम।
मैं जिसके नाम पे मरता हूँ उसका नाम नहीं॥
—रसा जालन्धरी

---

१ दुर्भाग्य २ प्रेम ३ सिवा ४ संकल्पोपासना ५ अभागा ६ हतभाग्य ७ विचार ८ पत्रवाहकों ९ दुर्भावना १० प्रेयसी की गली का पता ११ न्योछावर १२ दोनों लोकों की प्रतिष्ठा १३ प्रेम-दीवाना।

न "आज़ाद" मैकश[1] न शाहिद-परस्त[2] ।
वो कमबख़्त बदनाम है, और बस ॥
—आज़ाद अंसारी

मजलिस में मेरे ज़िक्र[3] के आते ही उठे वो ।
बदनामिए उश्शाक़ का एज़ाज़[4] तो देखो !॥
—मोमिन

बेज़ारीए तबओ अफ़सुरदगी (दिल की अप्रसन्नता और उदासी) :—

न छेड़ ऐ निकहते-बादे-बहारी[5] राह लग अपनी ।
तुझे अठखेलियाँ सूझी हैं हम बेज़ार[6] बैठे हैं ॥
—इनशा

ऐश[7] भी अन्दोह-फ़ेज़ा[8] हो गया ।
हाय तबीयत[9] तुझे क्या हो गया ॥
—दाग़

बुझा हुआ है दिल ऐसा के कुछ असर ही नहीं ।
निगाहे[10] यार की शोख़ी[11] निगाहे यार में है ॥
—वहशत कलकतवी

फ़सुर्दा-दिल[12] हूँ, मुझे क्या है कोई मौसम[13] हो ।
भरी बहार में क्या था जो अब ख़िज़ाँ में नहीं ॥
—रेयाज़ ख़ैराबादी

मेरे दिल को है ये फ़सुर्दगी के ख़ेयाले ऐश भी ख़ार[14] है ।
तो फिर ऐ नसीब[15] ! मैं क्या करूँ जो शबे-निशाते-बहार[16] है॥
—सीमाब

---

१ शराबी २ सौन्दर्य उपासक ३ चर्चा ४ प्रतिष्ठा ५ बसन्त समीर की सुगन्ध ६ अप्रसन्न ७ भोग-विलास ८ शोक को बढ़ानेवाला ९ मन १० दृष्टि ११ चंचलता १२ उदासीन १३ ऋतु १४ काँटा १५ भाग्य १६ बसन्त की खुशी की रात ।

अब क्या मिलें किसी से कहाँ जाँय अब "नेज़ाम"।
हम वो नहीं रहे, वो तबीयत नहीं रही॥

—नेज़ाम रामपुरी

वही मैं हूँ "असर" वही दिल है।
अब ख़ुदा जाने क्या हुआ मुझको॥

—मीर मोहम्मद असर

उनकी हँसी प आँख से आँसू टपक पड़े।
अब दिल ख़ुशी का भी मुतमन्नी[1] नहीं रहा॥

—आग़ा फ़ाज़िल लखनवी

कोई धड़कन है, न आँसू, न उमंग।
वक़्त के साथ ये तूफ़ान गये॥

—ज़ोहरा निगाह

अब जो उचाट हुई है तबीयत, शायद अब हम रुख़सत[2] हैं।
बिन कारण, बे बात वगरना[3] ऐसी कभी दिलगीर[4] न थी॥

—मुख़्तार सिद्दीक़ी

बेचारगिए इश्क़ (प्रेम की दीनता) :—

ये भी तुर्फ़ा-माजरा[5] है, के उसी को चाहता हूँ।
मुझे चाहिये है जिससे बहुत एहतेराज़[6] करना॥

—मीर

दिल की मजबूरी भी क्या शै[7] है के दर[8] से अपने।
उसने सौ बार उठाया तो मैं सौ बार आया॥

—हसरत मुहानी

---

१ इच्छुक २ बिदा ३ नहीं तो ४ उदास ५ बिचित्र वृतान्त ६ बचना ७ वस्तु ८ द्वार।

अश्क[1] आँख से, दिल हाथ से, जी तनसे चला जाये।
ऐ वाये मुसीबत कोई किस-किस को संभाले॥

—मीर मददुल्लाह

कोई ऐ "शकील"! देखे, ये जुनूँ[2] नहीं तो क्या है।
के उसी के हो गये हम जो न हो सका हमारा॥

—शकील बदायूँनी

ठानी थी दिल में अब न मिलेंगे किसी से हम।
पर क्या करें कि हो गए लाचार जी से हम॥

—मोमिन

खा के चर्के हँसो, ये बात है और।
'आरज़ू'! जी ही जानता होगा!!

—आरज़ू लखनवी

कुछ एख्तियार किसी का नहीं तबीयत पर।
ये जिस प आती है बेएख्तियार आती है॥

—जलील मानिकपुरी

बेखुदी ओ वारफ्तगीए शौक़ (अभिलाषा में तन्मयता और तल्लीनता) :—

मेरी वारफ्तगी[3] मआज़ल्लाह[4]!।
तुम भी आए तो कुछ खबर न हुई॥

—जोश मलीहाबादी

अपनी हालत का खुद एहसास[5] नहीं है मुझ को।
मैं ने औरों से सुना है कं परीशान हूँ मैं॥

—अब्दुल बारी आसी उलदनी

---

१ आँसू २ पागलपन ३ तल्लीनता ४ ईश्वर बचावें ५ चेतना।

बेख़ुदी[1] ले गयी कहाँ मुझ को।
देर से इन्तेजार[2] है अपना॥

—मीर

हम पर अबस[3] है तोहमते[4] नज्जारए जमाल[5]।
तुम आ के बैठे बज़्म[6] में फिर हम कहाँ रहे॥

—वहशत कलकत्वी

उसने किस लुत्फ़[7] से पूछा के 'असर' कैसे हो?
बेख़ुदी का हो बुरा, कह दिया कुछ याद नहीं॥

—असर लखनवी

मुझ को तो होश नहीं, तुम को ख़बर हो शायद।
लोग कहते हैं के तुम ने मुझे बर्बाद किया॥

—जोश मलीहाबादी

सेहने-हरम[8] नहीं है, ये कूए-बुताँ[9] नहीं।
अब कुछ न पूछिए के कहाँ हूँ कहाँ नहीं!॥

— असग़र गोंडवी

जिसमें हो याद भी तेरी शामिल।
हाय उस बेख़ुदी को क्या कहिए!॥

- रविश सिद्दीक़ी

वो बेख़ुदी, वो दिल उमड़ा हुआ, वो रूए-निगार[10]।
नज़र भी सूरते शबनम[11] बिखर गई होगी॥

—फ़िराक़ गोरखपुरी

१ तन्मयता २ प्रतीक्षा ३ व्यर्थ ४ झूठा कलंक ५ सौंदर्य दर्शन ६ महफ़िल ७ प्यार ८ काबा का आँगन ९ बुतों की गली १० प्रेयसी का चेहरा ११ ओस।

इन दिनों कुछ अजब है दिल का हाल।
देखता कुछ है, ध्यान में कुछ है॥
—दर्द

जिस प मेरी जुस्तजू[1] ने डाल रक्खे थे हेजाब[2]।
बेखुदी[3] ने अब उसे महसूसो[4] उरियाँ[5] कर दिया॥
—असग़र गोंडवी

बे पिये कहते हैं सब रिंदे-मै-आशाम[6] मुझे।
बेखुदी तू ने किया मुफ़्त में बदनाम मुझे॥
—जलाल मानिकपुरी

बेखुदी बेसबब[7] नहीं 'ग़ालिब'।
कुछ तो है जिसकी परदादारी है॥
—ग़ालिब

तेरे बेखुद जो हैं सो क्या चेतें।
ऐसे डूबे कहीं उभरते हैं॥
—मीर

बनेयाज़िओ सर्द-मेहरिए आशिक़ (प्रेमी का लालसा रहित होना):-

जब कश्ती सबितो-सालिम[8] थी साहिल[9] की तमन्ना किसने की।
अब ऐसी शिकस्ता[10] कश्ती पर साहिल की तमन्ना कौन करे!
—मोइन अहसन जज़बी

दौर[11] था एक गुज़र गया, नशा था एक उतर गया।
अब वो मोक़ाम[12] है जहाँ शिकवए बेरुखी[13] नहीं॥
—एहसान दानिश

---

१ खोज २ पर्दा ३ तन्मयता ४ अनुभव किए जाने योग्य ५ प्रकट ६ बहुत शराब ढालनेवाला ७ बिना कारण ८ ठीक और सम्पूर्ण ९ तट १० टूटी हुई ११ समय १२ स्थान १३ विमुखता।

अपने ग़म-ख़ाने[1] में बैठा हूँ इस अन्दाज़[2] से आज।
जैसे मुझको तेरे आने की ज़रूरत न रही॥

—*माहिरुलक़ादरी*

ये तो बुरे आसार[3] हैं 'फ़ानी'! ग़म हो, ख़ुशी हो, कुछ तो हो।
दिल का ये क्या हाल हुआ! मग़मूम[4] नहीं मसरूर[5] नहीं॥

—*फ़ानी*

कौन सी तेरी निगाहों में कमी थी, के 'जमील'।
चार दिन भी ख़ालिशे[6] दर्दे जिगर रख न सका॥

—*जमील मज़हरी*

मैं तो बदला नहीं, लेकिन तेरी बेमेहरी[7] ने।
जोश कुछ तबए-वाफ़ा-कोश[8] में रहने न दिया॥

—*अकबर इलाहाबादी*

आप के सर की क़सम, 'दाग़' को परवा भी नहीं।
आप से मिलने का होगा जिसे अरमाँ[9] होगा॥

—*दाग़*

राज़ी हो तो राज़ी हो, ख़फ़ा हो तो ख़फ़ा हो।
हम कोई गुनहगार हैं? तुम कोई ख़ोदा हो॥

—(?)

पहली नज़र :—

दोबारा दिल में कोई इन्क़ेलाब[10] हो न सका।
तुम्हारी पहली नज़र का जवाब हो न सका॥

—*नातिक़ लखनवी*

---

१ शोक घर २ ढंग ३ चिह्न ४ मलीन ५ ख़ुश ६ कसक ७ निर्दयता ८ वफ़ादारी करनेवाली तबीयत ९ कामना १० परिवर्त्तन।

हाँ याद है किसी की वो पहली निगाहें-लुत्फ़[1] ।
फिर ख़ूँ को यूँ न देखा रगों में रवाँ[2] कभी ॥
—आनंद नारायण मुल्ला

फिर भी कभी निगाहे-करम[3] होगी इस तरफ़ ?।
उम्मीद आज तक उसी पहली नज़र की है ॥
— मुनीर शिकोहाबादी

पहली नज़र की कुछ तो रूदाद[4] याद होगी।
मैं ने भी तुमको दी थी शायद कोई निशानी ॥
— माहिरुलक़ादरी

सहमी हुई थी सुबह की पहली किरण की तरह।
उनकी तरफ़ निगाह जो पहले-पहल गयी ॥
—असर लखनवी

नज़र से उनकी पहली ही नज़र यूँ मिल गई अपनी ।
के जैसे मुद्दतों[5] से थी किसी से दोस्ती अपनी ॥
—जिगर

आह ! उस निगाहे मस्त की शोख़ी जो बेख़बर ।
ख़ूबी[6] प रूये-यार[7] के पहले पहल गई ॥
—हसरत मुहानी

प्यार :—

नहीं है याद भली इतनी भी, दोआ कर 'मीर' ।
के अब जो देखूँ उसे मैं बहुत न प्यार आए ॥
—मीर

---

१ प्रेम दृष्टि २ चालित ३ दया दृष्टि ४ कथा ५ बहुत दिनों से
६ सौंदर्य, ७ प्रेयसी का मुख ।

प्यार करने का जो खूबाँ[1] रखते हैं हमपर गुनाह[2]।
उनसे भी तो पूछिए तुम इतने प्यारे क्यों हुए॥
—मीर

मलामत-गरो[3]! उनको जिद पर तुम्हारी।
नहीं भी अगर चाहता, चाहता हूँ।
—ताजवर नजीबाबादी

चाह का नाम जब आता है बिगड़ जाते हो।
वो तरीक़ा तो बतादो, तुम्हें चाहें क्यों कर॥
-दाग़

तुम आइने में अपने लब चूम लेना।
यही दूर-ओफ़तादा[4] का प्यार होगा॥
—अन्दलीब शादानी

हयात[5] वक़्फ़े-ग़मे-रोज़गार[6] क्यूँ करते।
मैं सोचता हूँ के वो मुझसे प्यार क्यूँ करते॥
— ज़हूर नज़र

तअल्लिए इश्क़ (प्रेम अहंकार) :—

हज़ार दाम[7] से निकला हूँ एक जुम्बिश[8] में।
जिसे गुरूर[9] हो आए, करे शिकार मुझे!॥
—शेफ़ता

कह देख तो रुस्तम से सर तेग़[10] तले धर दे।
प्यारे, ये हमीं से है, हर कारे व हरमर्दे[11]॥
—सौदा

---

१ सुन्दरियां २ अपराध ३ बूरा भला कहनेवालो ४ परदेसी ५ जीवन ६ संसार के शोक को समर्पित ७ जाल ८ झटका ९ घमंड १० तलवार ११ अलग अलग काम अलग अलग मनुष्य।

संभल के रखिओ क़दम दश्ते-खार[1] में मजनूँ!।
कि इस नवाह में[2] 'सौदा' बेरहना पा[3] भी है॥
—सौदा

क़ैस[4] का नाम न लो, जिक्र[5] जुनूँ जाने दो।
देख लेना मुझे तुम मौसमे-गुल[6] आने दो॥
—मु० रजाबक़

गुरूर[7], और हमारा गुरूरे-मुहब्बत।
महो-मेहर[8] को उनके दर[9] पर झुका दें।
—अख़्तर शीरानी

बलायें जुल्फ़े जानाँ की अगर लेते तो हम लेते।
बला ये कौन लेता अपने सर, लेते तो हम लेते॥
—(?)

है किसका जिगर जिस पे ये बेदाद[10] करोगे।
लो हम तुम्हें दिल देते हैं, क्या याद करोगे॥
—(?)

तर्के-मुहब्बत (प्रेम त्याग):—

मुहब्बत इन्सान की है फ़ितरत[11] कहाँ है इम्काने[12] तर्के उल्फ़त।
वो और भी याद आ रहा है मैं उसको जितना भुला रहा हूँ॥
—नातिक़ लखनवी

भुलाता लाख हूँ लेकिन बराबर याद आते हैं।
इलाही[13]! तर्के-उल्फ़त पर वो क्यूँ कर याद आते हैं॥
—हसरत मुहानी

---

१ काँटों का जंगल २ आस पास में ३ नंगे पाँव ४ मजनूँ ५ चर्चा ६ वसंत ऋतु ७ घमंड ८ चांद सूर्य ९ द्वार १० अनर्थ ११ स्वभाव १२ संभावना १३ हे ईश्वर।

मजाले[1] तर्के मुहब्बत न एक बार हुई।
ख़याले तर्के मुहब्बत तो बार बार आया॥

—वहशत कलकत्तवी

अगर कारे उल्फ़त[2] को मुश्किल समझ लूँ।
तो क्या तर्के उल्फ़त में आसानियाँ हैं ?॥

—आज़ाद अंसारी

तर्के मुहब्बत करनेवालो ! कौन बड़ा जग जीत लिया।
इश्क़ के पहले के दिन सोचो कौन बड़ा सुख होता था॥

—फ़िराक़ गोरखपुरी

मस्लेहत[3] तर्के-इश्क़[4] है नासेह[5]।
एक हमसे ये हो नहीं सकता॥

—अहसनुल्लाह बेचान

दिल, और तहइअए-तर्के-ख़याले-यार[6] करे !
किसे यक़ीन है कौन इस पर एतबार[7] करे॥

—हसरत मुहानी

हक़ीक़त[8] खुल गई 'हसरत' तेरे तर्के मुहब्बत की।
तुझे तो अब वो पहले से भी बढ़कर याद आते हैं॥

—हसरत मुहानी

ये सब कहने की बातें हैं हम उनको छोड़ बैठे हैं।
जब आँखें चार होती हैं, मुहब्बत आ ही जाती है॥

—ज़हीर देहलवी

---

१ साहस २ प्रेम के कार्य ३ उचित ४ प्रेम त्याग ५ उपदेशक ६ मित्र की याद के त्याग का विचार ७ विश्वास ८ असलियत।

उठाना है जो पत्थर रख के सीने पर वो गाम[1] आया।
मोहब्बत में तेरी तर्के-मोहब्बत का मोक़ाम[2] आया॥

—*आनन्द नारायण मुल्ला*

जेनूने-मुहब्बत यहाँ तक तो पहुँचा हूँ।
के तर्के-मुहब्बत किया चाहता हूँ॥

—*जिगर मुरादाबादी*

गो अहदे[3] तर्के मुहब्बत पर क़ायम हूँ लेकिन क्या कहिए।
जब उन प नजर पड़ जाती है क्या दिल की हालत होती है!॥

—*अंजुम मानपुरी*

रस्मे जहाँ[4] न छूट सकी तर्के इश्क़ से।
जब मिलगए तो पुरसिशे-हालत[5] हो गई॥

—*सलीम अहमद*

अब भागते हैं सायेए-जुल्फ़े-बुताँ[6] से हम।
कुछ दिल से हैं डरे हुए कुछ आसमाँ से हम॥

—*हाली*

नहीं मिलते, न मिलिए, ख़ैर, कोई मर न जायेगा।
ख़ुदा का शुक्र है पहले मुहब्बत आपने कम की॥

—*आग़ा शायर देहलवी*

परेशाँ हुआ दोस्ती करके मैं।
बहुत मुझको अरमान था चाह का॥

—*मीर*

---

१ क़दम २ स्थान ३ प्रतिज्ञा ४ संसार का रिवाज ५ कुशल पूछना ६ प्रेयसी के केशपाश की छाया।

एक हम हैं के हुए ऐसे पशेमान[1] के बस।
एक वो हैं के जिन्हें चाह के अरमाँ होंगे॥

—मोमिन

चश्मो निगाहे आशिक़—(प्रेमी की आँख और नज़र):—

रुस्वा[2] अभी से करती है ऐ चश्मे-तर[3] मुझे॥
आना है उसकी बज़्म[4] में बारे-दिगर[5] मुझे॥

—अहसनुल्लाह बयान

ये जो चश्मे-पुरआब[6] हैं दोनों।
एक खाना-खराब[7] हैं दोनों॥

—मीर

आगे दरिया थे दीदए तर मीर।
अब जो देखो सराब[8] हैं दोनों॥

—मीर

'फ़ानी'! जिस में आँसू क्या, दिल के लहू का काल न था।
हाय वो आँख, अब पानी की दो बूँदों को तरसती है॥

—फ़ानी

नज़र में ढल के उभरते हैं दिल के अफ़साने[9]।
ये और बात है दुनिया नज़र न पहचाने।

—सूफ़ी तबस्सुम

हाले आशिक़—(प्रेमी की दशा):—

पत्ता पत्ता, बूटा बूटा हाल हमारा जाने है।
जाने न जाने गुल ही न जाने, बाग़ तो सारा जाने है॥

—मीर

१ लज्जित २ बदनाम ३ आँसू भरी आँख ४ महफ़िल ५ दुबारा ६ आँसू भरी आँख ७ घर को बर्बाद करनेवाले ८ मृग मरीचिका ९ कहानियाँ।

अजब अह्वाल है 'ताबाँ' का तेरे।
के रोना रात दिन, और कुछ न कहना॥

—*अब्दुल हई ताबाँ*

हाल मुझ ग़मज़दा[2] का जिस तिस ने।
जब सुना होगा रो दिया होगा॥

—*दर्द*

न पूछ हाल मेरा चोबे-ख़ुश्के-सहरा[3] हूँ।
लगा के आग मुझे क़ाफ़ला[4] रवाना हुआ॥

—*आतिश*

नासेह[5] ने मेरा हाल जो मुझसे बयाँ किया।
आँसू टपक पड़े मेरे बे एख़्तियार आज॥

—*दाग़*

बेएख़्तियार आँखों से आँसू टपक पड़े।
अपना ज़ुबाने-ग़ैर[6] से जब माजरा[7] सुना॥

—*आबाद अज़ीमाबादी*

सीनए-नय[8] प जो गुज़रती है।
वो लब-नय-नाज़[9] क्या जाने॥

—*जिगर मुरादाबादी*

ऐ सेह्‌रे-हुस्ने-यार[10]! मैं अब तुझसे क्या कहूँ।
दिल का जो हाल तेरी बदौलत[11] है आजकल॥

—*हसरत मुहानी*

---

१ विवरण २ दुःखी ३ जंगल की सूखी लकड़ी ४ यात्री दल ५ उपदेशक ६ दूसरे की ज़बान ७ हाल ८ बांसुरी के सीने पर ९ बांसुरी बजानेवाले के होठ १० प्रेयसी के सौंदर्य के जादू ११ कारण।

मुख़्तसर[१] ये है के अब 'दाग़' का हाल।
बंदा-परवर[२]! नहीं देखा जाता॥
—दाग़

जो गुज़री मुझ प मत उससे कहो, हुआ सो हुआ।
बला-कशाने-मुहब्बत प[३] जो हुआ सो हुआ॥
—सौदा

जो गुज़रते हैं 'दाग़' पर सदमे।
आप बन्दा-नवाज़[४] क्या जानें!॥
—दाग़

अब ये आलम[५] है, तेरे हुस्न की ख़ैर[६]।
होशो मस्ती में इम्तेयाज़[७] नहीं॥
—नवाब जान ख़ाँ आरिफ़

उनसे भी हो सका न ज़ब्त,[८] उनको भी रहम[९] आ गया।
पाये-बिरहना[१०] देख कर, जिस्मे-फ़िगार[११] देख कर॥
—जिगर मुरादाबादी

'फ़र्द' की क्या ख़ूब हालत इश्क़ में पहुँची है अब।
जिसको जो कुछ जी में आया मुँह प आकर कह गया॥
—अबुलहसन फ़र्द फुलवारवी

मेरे लबों का तबस्सुम[१२] तो सब ने देख लिया।
जो दिल प बीत रही है वो कोई क्या जाने॥
—एक़बाल शफ़ीपुरी

---

१ संक्षेप २ दीन-बंधु ३ प्रेम की कठिनाई झेलनेवालों पर ४ दीन-दयालु ५ दशा ६ प्रभो तुम्हारे सौंदर्य को सुरक्षित रक्खें ७ भेद ८ सहा न गया ९ दया १० नंगा पाँव ११ घायल शरीर १२ अधरों की मुस्कान।

कुछ भी हो, मेरा हाल नुमायाँ[1] तो नहीं है।
दिल चाक सही, ख़ैर, गरीबाँ तो नहीं है।

—अज़ीम मुर्तगा

देखिओ ऐ दोस्ताँ! चुपका 'ज़ेया' क्यों हो गया।
मर गया बेताब[2] हो, या रोते रोते सो गया॥

—ज़ेयाउद्दीन ज़ेया

नामुरादाना[3] ज़ीस्त करता था[4]।
'मीर' का तौर[5] याद है हम को।

—मीर

'सौदा' का तू ने हाल न देखा के क्या हुआ।
आईना लेके आप को देखे है तू हनोज़[6]॥

—सौदा

मेरे तग़ईरे[7] रंग को मत देख।
तुझ को अपनी नज़र न हो जाये॥

—मोमिन

हम सुनाते जो कोई हाल हमारा सुनता।
दिल देखाते जो कोई देखनेवाला होता॥

—दाग़

जो उठे हैं तो गर्मे जुस्तजूए-दोस्त[8] उट्ठे हैं।
जो बैठे हैं तो महवे-आरज़ूए-यार[9] बैठे हैं॥

—आज़ाद अंसारी

---

१ प्रकट २ विकल ३ निराश रूप से ४ जीवन बिताता था ५ ढंग ६ अभी-तक ७ परिवर्त्तन ८ मित्र की खोज में सचेष्ट ९ प्रेयसी की कामना में लीन।

मेरी हर बात को उल्टा वो समझ लेते हैं।
अब के पूछा तो ये कह दूँगा के हाल अच्छा है॥
—जलील मानिकपुरी

'सौदा'! जो तेरा हाल है इतना तो नहीं हो।
क्या जानिए तू ने उसे किस आन में देखा॥
—सौदा

हुस्न गिरफ्तारे मुहब्बत (सौंदर्य प्रेम बंधन में) :—

ज़ुल्फ़ एक अन्दाज़ से बरहम[1] है, ख़ुदा ख़ैर करे।
हुस्न पर इश्क़ का आलम है, ख़ुदा ख़ैर करे॥
—जमील मज़हरी

मैं परीशाँ था, परीशाँ हूँ, नई बात नहीं।
आज वो भी हैं परीशाँ, ख़ुदा ख़ैर करे॥
—उमर अंसारी

आह वो दिन जब के तू बेकल था मेरे वास्ते।
हाय वो रातें के तू बेख़्वाब[2] था मेरे लिए॥
—बर्क़ मूसवी

ऐ दीनें-वफ़ा[3]! ऐ जानें-करमा[4]! यों ग़म में न मेरा हाथ बटा।
मर जाऊँगा मैं, ऐ शमअ! ख़ुदा-रा[5] रूप न भर परवाने का॥
—जोश मलीहाबादी

बर्बाद यूँ न होती मेरी ज़िन्दगी 'गोहर'।
उस ने भी मुझ को प्यार किया हाय क्या किया॥
—ईश्वरीलाल 'गोहर' गोरखपुरी

---

१ उलझी है २ बिना नींद ३ वफ़ा की आतमा ४ दया की मूर्ति ५ ईश्वर के लिए।

बसा-औक़ात[1] दिल के साथ बारे-ग़म[2] उठाने में
सुना है हुस्न भी अपनी नज़ाकत भूल जाता है।
—फ़िराक़ गोरखपुरी

ख़ानाख़राबी ओ बेख़ानोमानिए इश्क़ (प्रेम की गृहविहीनता):—

कल जा के हम ने 'मीर' के दर पर सुना जवाब।
मुद्दत हुई यहाँ वो ग़रीबुल-वतन[3] नहीं॥
—मीर

ख़ाना बर्बाद[4] हूँ सहरा[5] में बबूलों की तरह।
सक़्फ़ो-दीवारो[6] दरो-बाम[7] से कुछ काम नहीं॥
—नासिख़

चलो देखें तो 'नातिक़' अपनी हद से बढ़ न आया हो।
उठा है शोर[8] काबे में के एक ख़ाना-ख़राब आया॥
—नातिक़ लखनवी

ख़बरे आशिक़ (प्रेमी का संवाद) :—

उड़ती सी 'शेफ़ता' की ख़बर कुछ सुनी है आज।
लेकिन ख़ुदा करे यह ख़बर मोतबर[9] न हो॥
—शेफ़ता

मेरे ग़म की उन्हें किस ने ख़बर की।
गई क्यों घर से बाहर बात घर की॥
—नातिक़ गुलवठवी

दिल को तो दिल से राह है, मशहूर है ये बात।
कुछ भी ख़बर है तुम को किसी बेक़रार की॥
— नेज़ाम रामपुरी

१ प्रायः २ शोक या बोझ ३ परदेशी ४ गृह-विहीन ५ जंगल ६ छत और दीवार ७ द्वार और अटारी ८ कोलाहल ९ विश्वस्त।

ख़्वारिए इश्क़ (प्रेम का तिरस्कार) :—

फिरते हैं 'मीर' ख़्वार[1], कोई पूछता नहीं।
इस आशिक़ी में इज़्ज़ते-सादात[2] भी गयी॥

—*मीर*

फिरते हैं दादख़्वाह[3] तेरे हश्र में ख़राब[4]।
तू पूछता नहीं तो कोई पूछता नहीं॥

—*क़ुर्बान अली सालिक*

तू भली बात से भी मेरी ख़फ़ा होता है।
आह! ये चाहना ऐसा ही बुरा होता है॥

—*अब्दुल हई ताबाँ*

तुम जानो ग़ैर से जो तुम्हें रस्मोराह हो।
हम को भी पूछते रहो तो क्या गुनाह हो॥

—*ग़ालिब*

रश्के[5] दुश्मन भी गवारा[6], लेकिन।
तुझ को मुज़्तर[7] नहीं देखा जाता॥

—*दाग़*

क़ितअ-कीजिए न[8] तअल्लुक़[9] हम से।
कुछ नहीं है तो अदावत[10] ही सही॥

—*ग़ालिब*

तुम कहो 'मीर' को चाहो सो, के चाहें हैं तुम्हें।
वर्ना हम लोग तो सब उनका अदब[11] करते हैं॥

—*मीर*

१ तुच्छ २ सैय्यद जाति की मर्यादा ३ इन्साफ़ चाहने वाले ४ बर्बाद ५ ईर्ष्या ६ स्वीकार ७ विकल ८ न तोड़िये ९ सम्बन्ध १० शत्रुता ११ शिष्टाचार।

गिराया जब नज़र से आप ने तो दिल प क्या बीती।
गिरा जब दस्ते साक़ी[1] से तो पैमाने[2] प क्या गुज़री॥
—*हसन इमाम वारसी गयावी*

जिन्हों[3] के नामे[4] पहुँचते हैं यार तक दिन रात।
उन्हीं का काश के 'जुरअत' भी नामाबर[5] होता॥
—*जुरअत*

ख़ुद्दारिए इश्क़ (प्रेम का स्वाभिमान) :—

बन्दगी में भी वो आज़ाद, वो ख़ुद्बीं[6] हैं के हम।
उल्टे फिर आये दरे-काबा[7] अगर वा[8] न हुआ॥
—*ग़ालिब*

ऐ सिज्दा-फ़रोशे[9] कुए बुताँ! हर सर के लिये एक चौखट है।
ये भी कोई शाने इश्क़ हुई जिस दर प गये सर फोड़ लिया!॥
—*जमील मज़हरी*

वफ़ा कैसी! कहाँ का इश्क़! जब सर फोड़ना ठहरा।
तो फिर ऐ संगदिल[10] तेरा ही संगे-आस्ताँ[11] क्यों हो॥
—*ग़ालिब*

वो अपनी ख़ू[12] न छोड़ेंगे, हम अपनी वज़अ[13] क्यों बदलें
सुबुक-सर होके[14] क्यों पूछें के हमसे सरगेराँ[15] क्यों हो॥
—*ग़ालिब*

दर्द का मेरे यक़ीं आप करें या न करें।
अर्ज़[16] इतनी है के इस राज़[17] का चर्चा न करें॥
—*वहशत कलकत्तवी*

---

१ साक़ी के हाथ २ शराब का प्याला ३ जिनके ४ पत्र ५ पत्रवाहक ६ अभिमान ७ काबा का द्वार ८ खुला हुआ ९ सिज्दे बेचनेवाला १० कठोर ११ द्वार का पत्थर १२ स्वभाव १३ ढंग १४ हल्के बनकर १५ नाराज़ १६ निवेदन १७ भेद।

ख़ुद फ़रामोशी (आत्म-विस्मृति) :—

हम हैं और बेख़ुदीओ - बेख़बरी[१] ।
अब न रीन्दी[२] न पारसायी[३] है ।
—अमरनाथ साहिर

हम वहाँ हैं जहाँ से हम को भी ।
कुछ हमारी ख़बर नहीं आती ॥
—ग़ालिब

निगाहे मस्त से ओ मुड़के देखनेवाले ! ।
तुझे तो है, मुझे अपनी ख़बर नहीं, न सही ॥
—दिल शाहजहाँपुरी

ज़िक्रे आशिक़ (प्रेमी की चर्चा) :—

जब सुना याद किया करते हो तुम भी मुझ को ।
क्या कहूँ हद न रही कुछ मेरी हैरानी[४] की ॥
—हसरत मुहानी

ज़िक्र मेरा ही वो करता था, सरीहन[५] लेकिन ।
मैं जो पहुँचा तो कहा ख़ैर, ये मज़्कूर[६] न था ॥
—दर्द

गरचे है किस किस ख़राबी से वले बाई-हमा[७] ।
ज़िक्र मेरा मुझ से बेहतर है के उस महफ़िल में है ॥
—अज्ञात

बज़्म[८] में उसकी जो होती है कभी सरगोशी[९] ।
दिल धड़कता है के मेरा कोई मज़्कूर[१०] न हो ॥
—अहसन अली अहसन

१ तन्मयता और विस्मृति २ शराब पीना ३ सदाचार ४ आश्चर्य ५ स्पष्ट रूप से ६ चर्चा ७ लेकिन फिर भी ८ महफ़िल ९ कानाफूसी १० चर्चा ।

जो तेरे पास से आता है मैं पूछूँ हूँ यही।
क्यों जी, कुछ जिक्र हमारा भी वहाँ होता है ? ॥
—सआदत यार ख़ाँ रंगीन

सुनी थी शब को मैं ने भी सदा[1] ग़ैरों के हँसने की।
तुम्हारी बज़्म में कोई तो मेरा नाम लेता था॥
—नासीर

जिक्र कर बैठे बुराई ही से शायद मेरा।
अब वो अग़्यार की सोहबत से हज़र करता है[2] ॥
—मोमिन

कहे हे सुनके मेरी सरगुज़श्त[3] वो बेरहम।
ये कौन जिक्र है, जाने भी दो, हुआ सो हुआ॥
—सौदा

बरसों हुए गये उसे पर भूलता नहीं।
यादश-बख़ैर[4] ! 'मीर' रहे ख़ुश जहाँ रहे॥
—मीर

राज़ो अफ़शाए-राज़ (रहस्य और रहस्योद्घाठन) :—

एलाहदा न कर[5] अल्फ़ाज़[6] से मआनी[7] को।
मजाज़ ही में[8] हक़ीक़त[9] का राज़[10] रहने दे॥
— नातिक़ लखनवी

आगे बढ़े न क़िस्सए-जुल्फ़े बुताँ[11] से हम।
सब कुछ कहा मगर न खुले[12] राज़दाँ[13] से हम॥
—हाली

---

१ आवाज़ २ बचता है ३ कहानी ४ उसकी याद सुरक्षित रहे ५ अलग न कर ६ शब्दों ७ अर्थ ८ माया रूप में ९ सत्य १० रहस्य ११ प्रेयसियों के बालों की कहानी १२ असल बात न कहा १३ रहस्यज्ञाता।

राज़ की जुस्तोजू[1] में मरता हूँ।
और मैं ख़ुद हूँ एक परदय राज़॥
—असग़र गोंडवी

एक ऐसा राज़ दिया है मुझे छुपाने को।
जिसे वो चाहें तो ख़ुद भी छुपा नहीं सकते॥
—मुईन अहसन जज़्बी

राज़ अगर कौनेन[2] के ज़ाहिर हुए 'नातिक़' तो क्या।
काश वो मालूम हो जाये जो उस के दिल में है॥
—नातिक़ लखनवी

दफ़न कर सकता हूँ सीने में तुम्हारे राज़ को।
और तुम चाहो तो अफ़साना बना सकता हूँ मैं॥
—मजाज़

राज़ उन के खुले जाते हैं एक एक सभों पर।
और उस प तमाशा है के मैं कुछ नहीं कहता॥
—पं० दत्तात्रिया कैफ़ी देहलवी

हुस्न के राज़े-नेहाँ[3] शरहे बयाँ[4] तक पहुंचे।
आँख से दिल में गए दिल से ज़ुबाँ तक पहुंचे॥
—मु० दीन तासीर

भरी बज़्म में राज़ की बात कह दी।
बड़ा बेअदब हूँ सज़ा चाहता हूँ॥
—एक़बाल

---

१ खोज २ दोनों लोक ३ निहित रहस्य ४ वर्णन।

जिसे सरे-मेम्बर[1] न कह सका वाइज़[2]।
वो बात अह्‌ले-जाँनू[3] ज़ेरेदार[4] कहते हैं॥
—असग़र सलीम

बयाने-राज़े दिल की ख़ाहिशें और वो भी मेम्बर पर।
ख़बर भी है, ये बातें दार[5] पर कहने की बातें हैं!॥
—आज़ाद अंसारी

कोई किस तरह राज़े-उल्फ़त छुपाये।
निगाहें मिलीं और क़दम डगमगाए॥
—नख़्शब जारचवी

राज़े माशूक़ न रुस्वा[6] हो जाये।
वरना मर जाने में कुछ भेद नहीं॥
—दाग़

रफ़्तए-नज़र[7] हो जा. सब से बेख़बर हो जा।
खुल गया है राज़ अपना, खुल न जाये राज़ उनका॥
—फ़ानी

अफ़शाये-राज़े-इश्क़ में[8] गो ज़िल्लतें हुईं।
लेकिन उसे जता तो दिया, जान तो गया॥
—दाग़

रुस्वाईए आशिक़ (प्रेमी का अपयश):—

हो गई शहर शहर रुस्वाई।
ऐ मेरी मौत तू भली आई॥
—मीर

---

१ मेम्बर पर खड़े होके २ उपदेशक ३ दीवाने लोग ४ फाँसी के तख़्ते पर ५ फाँसी ६ बदनाम ७ उपेक्षित दृष्टि ८ प्रेम का भेद खोलने में।

मुहब्बत ने किया बदनामो-रुस्वा इस क़दर मुझ को।
के दर महफ़िल में मेरी दास्ताँ दुहराई जाती है॥

—मु० तक़ी क़ैस शेख़पुरवी

क़ाबिले-रहम है उस शख़्स की रुस्वाई भी।
पर्दे पर्दे ही में कम्बख़्त जो रुस्वा हो जाये॥

—दाग़

ऐ 'दाग़'! सब ये हज़रते[१] दिल के सलूक[२] हैं।
जो कुछ किया जनाब[३] ने रुस्वा किया मुझे।

—दाग़

रुस्वा अगर न करना था आलम[४] में यूँ मुझे।
ऐसी निगाहे-नाज़ से देखा था क्यूँ मुझे।

—आफ़ताब राय रुस्वा

मिल गया होगा ख़ाक[५] में जूँ-अश्क[६]।
तेरी आँखों से जो गिरा होगा।

—अमीनुद्दीन यक़ी

एक आलम[७] में बसर करते हैं[८] हम और बुलबुल।
कोई रुस्वाए-जहाँ[९] है कोई रुस्वाए बहार।

—नासिरी

सौ बार मस्त काबे में पकड़े गए हैं हम।
रुस्वाई[१०] के तरीक़[११] से कुछ नाबलंद[१२] नहीं॥

—मीर

---

१ श्रीमान् २ बर्ताव ३ श्रीमान् ४ संसार ५ धूलि ६ आंसू के समान ७ दशा ८ जीवन व्यतीत करते हैं ९ संसार का अपमानित १० बदनामी ११ नियम १२ अनजान।

सादगीए आशिक़ (प्रेमी की सादगी) :—

तेरे इश्क़ की इन्तेहा[1] चाहता हूँ।
मेरी सादगी देख ! क्या चाहता हूं॥
—एक़बाल

मैं और उस ग़ुनचा-देहन[2] की आरज़ू !।
आरज़ू की सादगी थी, मैं न थी॥
—अब्दुल हमीद अदम

है वही रंगे हुस्न बेपरवा।
इश्क़ की सादगी को क्या कहिए !॥
—रविश सिद्दीक़ी

सादा दिल कितने हैं अरबाबे-मुहब्बत,[3] है है।
के तेरे इश्वए-पिनहा[4] को हया[5] कहते हैं॥
—वहशत कलकतवी

न तलत्तुफ़[6], न मुहब्बत, न मुहब्बत, न वफ़ा।
सादगी देख के उस पर भी लगा जाता हूँ॥
—सौदा

सोबूत है ये मुहब्बत की सादा-लौही[7] का।
जब उसने वादा किया हम ने एतेबार[8] किया॥
—जोश मलीहाबादी

सेहरो शामे आशिक़ (प्रेमी का प्रातः एवं संध्या) : —

शाम होती नहीं, एक दिल प बला[9] आती है।
सुबह होती नहीं, एक जी प ग़ज़ब[10] आता है॥
—क़यामुद्दीन क़ाएम

---

१ चरम सीमा २ कली जैसे मुखवाला ३ प्रेम करनेवाले ४ गुप्त हाव-भाव ५ लाज ६ प्यार ७ सीधापन ८ विश्वास ९ मुसीबत १० आफ़त।

न कहीं सुबह ही होती है न ख़्वाब[1] आता है।
रात क्या आती है एक सर प अज़ाब[2] आता है॥
—मुसहफ़ी

सबा[3]! ये उन से हमारा पयाम[4] कह देना।
गए हो जब से यहाँ सुबहो शाम ही न हुई॥
—जिगर मुरादाबादी

शब[5] वही शब हैं दिन वही दिन हैं।
जो तेरी याद में गुज़र जायें।
—हसरत मुहानी

शौक़ (अभिलाषा) :—

मेराजे-शौक़[6] कहिए या हासिले-तसव्वुर[7]।
जिस सिम्त[8] देखता हूँ तू मुस्करा रहा है!
जिगर मुरादाबादी

जहाँ है शौक़ वहाँ कैफ़ोकम[9] की बात नहीं।
जहाने-इश्क़[10] में दैरो-हरम[11] की बात नहीं॥
—जोश मलीहाबादी

इश्क़ की दुनिया ज़मीं से आसमाँ तक शौक़ थी।
था जो कुछ तेरे सिवा आग़ोश[12] ही आग़ोश था॥
—फ़ानी

हुजूमे शौक़ है दिल में मगर ख़ामोश रहते हैं।
छुपाया था ये हम ने राज़ तुम से, आज कहते हैं॥
—हसरत मुहानी

---

१ नींद २ मुसीबत ३ हे प्रभात समीर! ४ संदेश ५ रात ६ अभिलाषा की चरम सीमा ७ कल्पनाओं का सार ८ ओर ९ कैसे और कितना १० प्रेम के जग में ११ मंदिर-मस्जिद १२ कोल।

गोशे-मुश्ताक़[1] की क्या बात है अल्लाह अल्लाह !।
सुन रहा हूँ मैं वो नग़मा[2] जो अभी साज़ में है ॥

—जिगर मुरादाबादी

शौक़ के हाथों ऐ दिले मुज़्तर ! क्या होना है, क्या होगा।
इश्क़ तो रुस्वा हो ही चुका है, हुस्न भी रुस्वा क्या होगा ? ॥

—मजाज़

शौक़ जब हद से गुज़र जाता है होता है यही।
वरना हम, और करमे-यार[3] की परवा न करें ! ॥

—हसरत मुहानी

वारफ़्तगीए[4] शौक़ के क़ुर्बान जाइए।
मंज़िल की जुस्तजू[5] है और अपनी ख़बर नहीं ॥

— मेहदी शे पुरवी

सूरते आशिक़ (प्रेमी का रूप) :—

इन्क़लाबे-देहर[6] से या गर्दिशे-तक़दीर[7] से।
अब नहीं मिलती मेरी सूरत मेरी तस्वीर से ॥

—अज्ञात

या कोई जान बूझ के अनजान बन गया।
या फिर यही हुआ, मेरी सूरत बदल गई ॥

—हिज्र शाहजहाँपुरी

उनको ये ग़ुस्सा के मैं उनकी गली में क्यूँ गया।
मुझ को ये हैरत[8] के क्यूँकर शक्ल पहचानी मेरी ! ॥

—आसी उल्दनी

---

१ अभिलाषी कान २ मधुरस्वर ३ मित्र की कृपाओं की ४ तल्लीनता ५ खोज ६ सांसारिक परिवर्त्तन ७ भाग्य-चक्र ८ आश्चर्य ।

आशिक़ (प्रेमी) :—

क्या सेहल[१] जी से हाथ उठा बैठते हैं, हाये।
ये इश्क़-पेशगाँ[२] हैं एलाही[३] ! कहाँ के लोग !!
—*मीर*

ज़ुल्फ़े-दौराँ[४] सँवारने वाले।
हैं बड़ी चीज़ आशिक़ाने-केराम[५] ।।
—*फ़ज़्ले अहमद करीम फ़ज़ली*

मुझ को आशिक़ कह के उस के रूबरू[६] मत कीजिओ।
दोस्तों[७] ! गर दोस्त हो तो ये कभू मत कीजिओ ।।
—*मीरहसन*

क़फ़स[८] क्या, हल्क़ा-दाये-दाम[९] क्या, रंजे-असीरी[१०] क्या।
चमन पर मिट गया जो, हर तरफ़ आज़ाद होता है ।।
—*असग़र गोंडवी*

आशिक़ की बेकसी का तो आलम[११] न पूछिये।
मजनूँ प जो गुज़र गई सहरा[१२] गवाह है ।।
—*हफ़ीज़ जौनपुरी*

सुननेवाले दम-बख़ुद[१३] सब, देखनेवाले ख़मोश[१४] ।
ये है मेरा हाल ये है मेरे अफ़साने का हाल ।।
—*प्र०.अवध किशोर कुश्ता गेयावी*

बस इतनी बात है जिस पर हमारी जान जाती है।
के उनके जाँनेसारों में[१५] हमारा नाम आता है !।
—*सफ़दर मिरज़ापुरी*

---

१ सहज २ प्रेम का कारबार करने वाले ३ हे ईश्वर ४ संसार की लटें ५ आदरणीय प्रेमी लोग ६ सम्मुख ७ हे मित्रो ८ पिंजड़ा ९ जाल के फंदे १० बंदी का शोक ११ हालत १२ जंगल १३ चकित १४ चुप १५ उनपर जान देनेवालों में ।